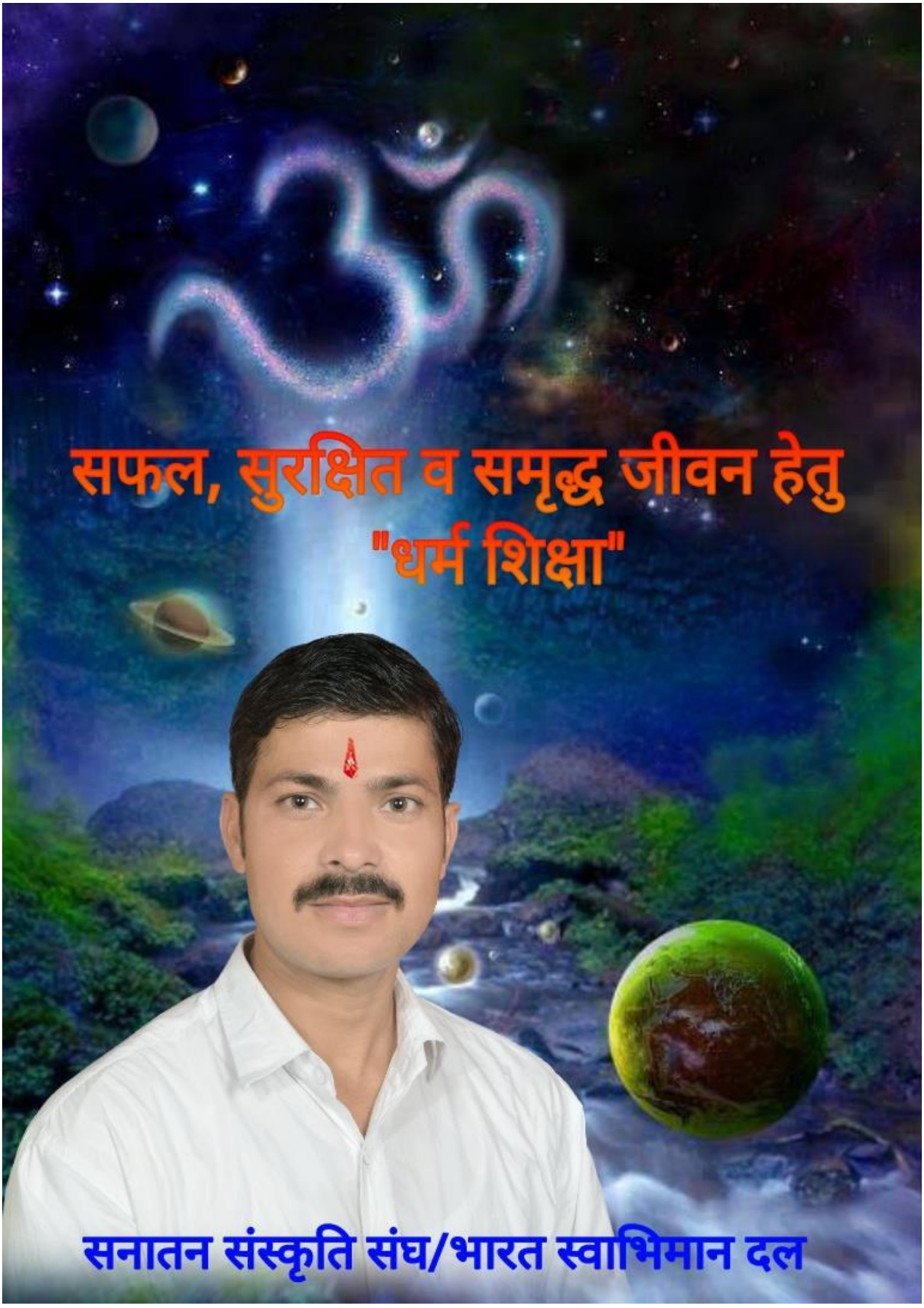
सफल, सुरक्षित व समृद्ध जीवन हेतु
"धर्म शिक्षा"
सनातन संस्कृति संघ/भारत स्वाभिमान दल

अनुक्रमणिका

प्रस्तावना 9

सनातन शाश्वत सत्य धर्म का प्रमाण 10

शक्ति का मूल संगठन हैं 11

रक्षा किया हुआ धर्म अपने रक्षक की रक्षा करता हैं 12

सनातन धर्म के पतन के कारण और निवारण 13

जडों की ओर लौटें 15

क्या ईश्वर हैं ? 15

उसका स्वरूप क्या हैं ? 15

भगवान कौन हैं ? 16

धर्म क्या हैं ? 16

अधर्म क्या हैं ? 17

धर्म के दस लक्षण कौन- कौन से हैं ? 17

ज्ञान और कर्म में से किसकी साधना करें ? 17

भाग्य क्या हैं ? 18

सुख और शान्ति का रहस्य क्या हैं ? 18

चित्त पर नियंत्रण कैसे सम्भव हैं ? 18

सच्चा प्रेम क्या हैं ? 18

आसक्ति क्या हैं ? 18

बुद्धिमान कौन हैं ? 18

मैं कौन हूँ ? 18

जीवन का उद्देश्य क्या हैं ? 18

जन्म का कारण क्या हैं ? 19

जन्म और मरण के बन्धन से मुक्त कौन हैं ? 19

वासना और जन्म का सम्बन्ध क्या हैं ? 19

जाति क्या हैं ? 19

तो क्या मनुष्यों में जाति नहीं होती ? 19

संसार में दु:ख क्यों हैं ? 19

ईश्वर ने दु:ख की रचना क्यों की ? 19

चोर कौन हैं ? 19

जागते हुए भी कौन सोया हुआ हैं ? 19

कमल के पत्ते में पडे जल की तरह अस्थायी क्या हैं ? 19

नरक क्या हैं ? 20

मुक्ति क्या हैं ? 20

दुर्भाग्य का कारण क्या हैं ? 20

सौभाग्य का कारण क्या हैं ? 20

संसार को कौन जीतता हैं ? 20

भय से मुक्ति कैसे सम्भव हैं ? 20

मुक्त कौन हैं ? 20

अज्ञान क्या हैं ? 20

मनुष्य का साथ कौन देता हैं ? 20

वायु से तेज कौन चलता हैं ? 20

विदेश में साथी कौन होता हैं ? 20

विद्या क्या हैं ? 20

किसे त्याग कर मनुष्य प्रिय हो जाता हैं ? 21

कौन सा एकमात्र उपाय है जिससे जीवन सुखी हो जाता हैं ? 21

सर्वोत्तम लाभ क्या हैं ? 21

मत, पंथ, सम्प्रदाय से बढकर संसार में और क्या हैं ? 21

कैसे व्यक्ति के साथ की गयी मित्रता कभी पुरानी नहीं पड़ती ? 21

इस जगत में सबसे बडा आश्चर्य क्या हैं ? 21

तीर्थ क्या हैं ? 21

पुरूषार्थ क्या हैं ? 21

अहिंसा किसे कहते हैं ? 21

स्वाध्याय किसे कहते हैं ? 22

ईश्वर प्रणिधान किसे कहते हैं ? 22

गुरू किसे कहते हैं ? 22

तो क्या सभी शिक्षक, आचार्य गुरू नहीं होते ? 23

बच्चों के निर्माण में शिक्षकों, आचार्यों, कथावाचको व अभिभावकों का क्या दायित्व हैं ? 23

गणेश कौन हैं ? क्या सर्वप्रथम उनकी पूजा होनी चाहिए ? 23

ईश्वर एक है या अनेक ? 24

भगवान को हम अपना इष्ट कैसे बनाएँ ? 24

गायत्री मंत्र में ईश्वर की उपासना की गयी हैं अथवा सूर्य की? इस मंत्र का अर्थ क्या हैं ? 25

भगवान राम को प्रसन्न करना हो तो क्या करें ? 25

क्या हनुमान जी बन्दर थें ? 26

क्या हनुमान जी के पूँछ भी नहीं थी ? 27

शिव कौन हैं ? 27

शिवलिंग क्या हैं ? 28

शिवलिंग साकार का प्रतिक है अथवा निराकार का ? 28

क्या शिवलिंग मनुष्य का जननेन्द्रिय नहीं हैं ? 28

क्या शिवलिंग का कोई वैज्ञानिक तथ्य भी हैं ? 30

क्या सनातन हिन्दू धर्म में तैंतीस करोड देवी- देवता हैं ? 30

अवतार कौन होता हैं ? 31

आज भारत में बहुत सारे अवतार विद्यमान है, फिर भी राष्ट्र- धर्म का पतन क्यों हो रहा हैं ? 32

स्वघोषित पाखण्डी कालनेमि अवतारों का वध करना ईश्वरीय कार्य हैं 33

इस्लामिक प्रचारक और भविष्य पुराण का महामद राक्षस 34

हमारे सनातन वैदिक धर्म में वसुधैव कुटुंबकम क्यों कहा गया ? 35

सभी धर्म एक जैसे है ? हिन्दुओं में यह मिथ्याचार क्यों फैलाया जाता हैं ? 36

विनाश काले विपरित पूजा क्या हैं ? 36

क्या शिर्डी साई की पूजा भी नहीं करनी चाहिए ? 37

कृपया संक्षेप में सिद्ध करें कि साई मुसलमान था? और मांस खाता था ? 38

साई को बढावा क्यों दिया जा रहा हैं ? 38

तो फिर क्यों कहा जाता है कि सबका मालिक एक है ? 39

कृपया धर्म, पंथ और सम्प्रदाय में मूलभूत अन्तर स्पस्ट करें ! 39

धर्म समाज को जोडता है, जबकि सम्प्रदाय (मजहब या रिलीजन) समाज को तोडता हैं 40

कुरान में ऐसी कौन सी बातें (आयते) है जो मानवता के लिए खतरनाक और घृणास्पद है?
तथा मुसलमानों और गैर मुसलमानों के बीच भेदभाव और द्वेष फैलाती हैं ? 40

लव जिहाद किसे कहते हैं ? 43

लव जिहाद कैसे होता हैं ? 43

हलाला क्या होता हैं ? 45

जनसंख्या जिहाद के बारे में एक कथानक 46

इस्लामिक हदीसे इस बारे में क्या कहती हैं? और क्या किसी मुसलमान ने इस्लाम छोडकर मानवता का पथ अपनाया हैं ? 47

आखिर इस्लाम में बहू का बलात्कार करना अपराध न होकर उपहार क्यूँ है..? 50

हम हिन्दू अपने बच्चों को विधर्मियों के जाल में फँसने से, लव जिहाद से कैसे बचाये ? 51

इस्लाम में अल- तकिया किसे कहते हैं और इसका इस्लाम के प्रचार प्रसार में क्या योगदान हैं ? 52

वामपंथी प्रोफेसर और मौलाना साहब के साथ हुई घोर असहष्णु वार्तालाप;
आखिर सच्चा मुसलमान कौन, कुरान को फॉलो करने वाला या कुरान ना फॉलो करने वाला 52

ईसाइयों में जेसूट्स की शपथ क्या हैं ? 61

भगवान श्रीराम, श्रीकृष्ण, महावीर हनुमान, विक्रमादित्य, विद्यारण्य स्वामी, आचार्य चाणक्य, शिवाजी महाराज, महाराणा प्रताप, गोकुल सिंह की इस पवित्र भूमि को हमेशा जुझना क्यों पड रहा है ?
इसका समाधान क्या हैं ? 62

हम सनातन धर्मी हिन्दुओं का कर्तव्य कर्म 63

आत्म परिष्कार, उज्जवल भविष्य, समृद्ध व सुरक्षित जीवन हेतु सामूहिक धर्म साधना 64

एकं सद् विप्रा: बहुधा वदन्ति 65

गायत्री मंत्र कब कितना जपना आवश्यक हैं 65

साधना निर्देश 66

साधना पद्धति 66

ईश्वर स्तुति: 67

गायत्री मंत्र 67

नमस्कार 68

शुभकामनाएँ 68

शान्तिपाठ 69

जयघोष 69

कहो गर्व से हम हिन्दू हैं 70

एकात्मकता स्तोत्र 70

समय के शब्दों में भगवद्गीता का सन्देश 77

गीता का सार 77

स्वस्थ रहने के स्वर्णिम सूत्र 83

सनातन संस्कृति संघ (ट्रस्ट) संक्षिप्त परिचय 86

सनातन संस्कृति संघ से क्यों जुड़े... 87

भारत स्वाभिमान दल क्या हैं 88

भारत स्वाभिमान दल से क्यों जुड़े... 90

सम्पूर्ण व्यवस्था परिवर्तन के लिए भारत स्वाभिमान दल की ग्यारह सूत्री कार्य योजना 93

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णमुदच्यते । 95

****

ॐ भूर्भुव: स्व: तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो न: प्रचोदयात्।

सफल, सुरक्षित, व समृद्ध जीवन हेतु

धर्म शिक्षा

इस पृथ्वी पर

संस्कृति का प्रथम सूर्योदय कहाँ हुआ था ?

विश्व में ज्ञान विज्ञान, सभ्यता एवं संस्कार का प्रकाश सर्वप्रथम कहा से प्रसारित हुआ था ?

संस्कृति का सर्वप्रथम पवित्र नाद कहाँ गूँजा था ?

जहाँ गंगा, सरस्वती, सिन्धु, ब्रह्मपुत्र, गंडकी, कावेरी, यमुना, नर्मदा, कृष्णा, गोदावरी तथा महानदी का पवित्र जल बहता है,

जहाँ दक्षिण में हिन्द महासागर गर्जन करता है,

जहाँ उत्तर में देवात्मा हिमालय की पवित्र छत्रछाया है,

कैसी दिव्य, भव्य है अपनी मातृभूमि भारत, कितनी गौरवशाली है संस्कृति !

इस पवित्र भूमि पर से पुन: गूँज उठे संस्कृति का पवित्र नाद,

आइए, धर्म साधना से इस सनातन संस्कृति का भव्यनाद गूँजायमान करें |

धर्म से संस्कार मिलते है और संस्कार शक्ति प्रदान करते है, राष्ट्र निर्माण और राष्ट्र रक्षा के लिए धर्म ही मुख्य धुरी होता है | सनातन धर्म भगवत्प्रेम व मोक्ष प्राप्ति का वह मार्ग है, वह साधन है, जिसको अवमर्दित करने के, नष्ट करने के, मिटा डालने के हर सम्भव प्रयास सहस्त्राधिक वर्षो से किये गये (और आज भी किये जा रहे है) किन्तु धर्म आज भी पर्वत की तरह अचल, अटल, स्थिर होकर खड़ा है | यही सनातन शाश्वत सत्य का प्रमाण है | धर्म शिक्षा व सामुहिक धर्म साधना द्वारा इसकी रक्षा सम्वर्द्धन करना हम सब का सनातन धर्म है |

- विश्वजीत सिंह अनंत

इस पुस्तक को प्रकाशित करने का उद्देश्य किसी व्यक्ति, वर्ग, सम्प्रदाय की भावनाओं को आहत करना नहीं है, बल्कि सनातन सत्य को सामने लाकर सनातन धर्म की रक्षा करना है | किसी भी वाद की स्थिति में न्यायक्षेत्र मेरठ न्यायालय मान्य होगा |

यह पुस्तक परम् पिता परमात्मा की कृपा से आपके पास आई है | इसे पवित्र स्थान पर रखें, परिवार में सबको पढ़ाएँ, इसकी धर्म साधना को अपने जीवन में अपनाएँ तथा अन्य व्यक्तियों को भी साधना के लिए प्रेरित करें, ताकि धर्म ध्वज के तले मानवता स्वस्थ, सुखी, समृद्ध व सुरक्षित रहे | हमारा विश्वास है कि धर्म शिक्षा व सामूहिक धर्म साधना से ही असुरता का निवारण होकर मानव में देवत्व के अवतरण का मार्ग प्रशस्त होगा | साधको की सद्कामनाएँ पुर्ण होगी ओर भारत पुन: विश्वगुरू बनेगा |

*** निवेदक ***

भारत स्वाभिमान दल

|| ॐ परमात्मने नम : ||

सामर्थ्यमूलं स्वातन्त्र्यं, श्रममूलं च वैभवम्। न्यायमूलं सुराज्यं स्यात्, संघमूलं महाबलम्॥

"स्वतन्त्रता सामर्थ्य पर आधारित है, वैभव परिश्रम से प्राप्त होता है, सुराज्य उसी को कहेंगे जहाँ न्याय सुलभ हो तथा शक्ति का मूल संगठन है।"

सनातन धर्म सृष्टि के आरंभ से चला आ रहा है | सनातन धर्म के विषय में संसार के किसी भी देश में कोई मतभेद नजर नहीं आता, क्योंकि सनातन धर्म ही वैदिक विश्व राष्ट्र का धर्म रहा है | अब से लगभग 5 हजार एक सौ वर्ष पूर्ण हुये विनाशकारी विश्व महा युद्ध महाभारत में वेदज्ञ विद्वानों व वीर योद्धाओ के मारे जाने के कारण भारत का प्रभाव विश्व सत्ता पर निर्बल पड़ने लगा | तदानुपरांत विद्वानों की प्रतिष्ठा व क्षमता भी कम हो गई तो कालांतर में अनेक अवैदिक व भोगवादी मत- मतांतरों ने जन्म लिया | जिनके अमानवीय आसुरी कार्यकलापों से मानवता आज भी त्राहि- त्राहि कर रही है |

विश्व के किसी भी देश में धर्म और संस्कृति की रक्षा के लिए इतना दीर्घकालीन, त्यागमय और सफल संघर्ष नहीं हुआ है जितना भारत के साधु- संतों व वीर- वीरांगनाओं ने किया | विश्व की महान संस्कृतियाँ (रोम, यूनान, मिश्र, ज़्रथुस्त आदि) उदित हुई काल के कपाल के कराल थपेड़ों को न सह सकने के कारण कुछ ही शताब्दियों में ध्वस्त हो गई, परंतु सनातन वैदिक हिंदू संस्कृति सहस्रों वर्षो के भीषण आघातों के पश्चात आज भी जीवित है | यही सनातन शाश्वत सत्य धर्म का प्रमाण है | इस सनातन राष्ट्र भारत ने अपने जीवन में अनेक उत्थान और पतन देखे हैं किंतु उसकी लहरों में फँस कर उसने अपने जीवन की गति कभी खोई नहीं |

पीठ शत्रु को नहीं दिखायी हिंदुओं की संतानों ने |
केसरिया ध्वज रंग दिया था रक्तापूर्ण वीरों ने ||
गिरा हुआ ध्वज रामदास-शिवा छत्रपति ने उठा लिया |
गोकुल सिंह ने इसके कारण सर भी अपना कटा लिया ||
छत्रसाल और बुन्देलों ने इसी ध्वज को अपनाया |
राणा ने भी इसके कारण सब कुछ अपना त्याग दिया ||
इससे कारण कृपाण लेकर सिक्ख वीर उठ खड़े हुए |
बंदा गुरु गोविंद सिंह जी हिंदू -शत्रु पर टूट पड़े ||
पीत छटा थी त्यागमयी, कभी हृदय से नहीं गई |
श्रेष्ठ सनातन धर्म अपना, स्मृति उसकी उत्साहमयी ||

कितने भी भयंकर आपत्तियों व शक्तिशाली दुष्टों का सामना करना पड़े, उसमें साहस, धैर्य व आत्म विश्वास के साथ उन्हें पराजित करने का आत्मबल, संपूर्ण समाज में सदैव विद्यमान रहना चाहिए | सतयुग में माँ भगवती दुर्गा के रुप में दैवी शक्ति ने महिषासुर का मर्दन किया | त्रेता में भगवान श्रीराम ने वनवासियों का सहयोग लेकर, उन्हें संगठित कर दुष्ट रावण की आसुरी शक्ति का विनाश किया द्वापर में इसी प्रकार भगवान श्रीकृष्ण के मार्गदर्शन में दैवी शक्तियों ने आसुरी शक्तियों का विध्वंस किया | **संघे शक्ति कलौयुगे** | कलयुग में संगठन की शक्ति ही आसुरी शक्तियों का विनाश कर सकती है |

शक्त्या विहीना: पुरूषा हि लोके, नेतुं न राष्ट्रंप्रभवन्ति नूनम् |
देवा अपीमां समुपास्य शक्ति शुम्भादि-दैत्यान् समरे निजघ्नु:||

शक्ति के बिना कोई भी पुरुष अपने राष्ट्र की रक्षा नहीं कर सकता | देवता भी शक्ति की आराधना करके ही शुम्भादि दैत्यों का संहार करने में सक्षम हुए | पवित्र सनातन धर्म में सभी देवी देवताओं के पास शस्त्र है, क्योंकि यह धर्म है | आपके पास कौन सा शस्त्र है- कोई नहीं, यह अधर्म है | ध्यान रखों हिन्दू तभी मरा है जब वो अपने धर्म से भटका है, शास्त्र (वेद, गीता, रामायण आदि पवित्र ग्रन्थ) तथा शस्त्र (हथियार) दोनो की साधना करों | अपना धर्म निभाओं, ध्यान रखों धर्म सदैव जीता है | बिना शास्त्र ज्ञान के तथा बिना शस्त्र संचालन के धर्म की रक्षा नहीं की जा सकती |

धर्म एव हतो हन्ति धर्मो रक्षति रक्षितः |
तस्माद्धर्मो न हन्तव्यः मानो धर्मो हतोवधीत् ||

नष्ट हुआ धर्म ही मनुष्य का नाश करता है और रक्षा किया हुआ धर्म अपने रक्षक की रक्षा करता है । इसलिए धर्म को नष्ट नहीं करना चाहिए, ऐसा न हो कि नष्ट किया हुआ धर्म हमें नष्ट कर दे ।

अपने देश में दानवी- आसुरी शक्तियाँ सक्रिय है | इन शक्तियों का विनाश करने के लिए प्रत्येक को अपने अंदर की बुद्धि, भावना एवम् शक्ति को केंद्रित करना होगा, ताकि अपने घर- परिवार, समाज और देश को सुखी, वैभवशाली, विजयी जीवन प्राप्त हो सके | धर्म साधना से ही समाज और देश का एकीकृत स्वरुप प्रकार होगा | धर्म साधना से ही अनाचार, भ्रष्टाचार व पापाचार मिट सकता है | भारत का प्रत्येक पहलू धर्म से परिपूर्ण है | सनातन हिंदू- जीवन प्रणाली ही भारत के जीवन- वैशिष्टय को बनाए रखने वाली है | किंतु दुर्भाग्य से मैकालेवादियों, साम्यवादियों, अरबवादियों, कालनेमिवादियों ने शिक्षा- पद्धति व इतिहास को बदल कर भारतीय जन समुदाय के मस्तिष्क को अपना गुलाम बना लिया परिणाम स्वरुप संसार में अपने स्वत्व के अस्तित्व का निषेध करने वाला पापी यदि कोई होगा, तो वह अपने हिंदू समाज में ही मिलेगा |

जो समाज अपनी संस्कृति से कट जाता है उसका कभी भला नहीं हो सकता |

हमें पुन: अपनी मूल संस्कृति व सच्चे अध्यात्म की ओर लौटना होगा, तभी सत्य सनातन वैदिक हिन्दू धर्म व संस्कृति की रक्षा होगी तथा सच्चे ईश्वर की उपासना से जीवन में सुख, शांति, समृद्धि व मुक्ति की प्राप्ति होगी |

सच्चे ईश्वर की उपासना के लिए आवश्यक है कि हम जाति- वर्ण के मिथ्या बंधन तोड़कर धर्म के झंडे तले एक हो जायें | **संसार में हम सब से श्रेष्ठ है लेकिन जाति- वर्ण- सम्प्रदाय ने हमारा सत्यानाश किया हुआ है** | आइये हम उन सभी दरारों को भर दे जो अपनों के स्वार्थ व अज्ञानता और परायों के षड़यन्त्रों ने पैदा की है | हम भेदभाव और छूआछूत की दीवारें ढहा दे तथा संकल्प लें कि हम सब भारत माता की संताने है, हम सब एक है | हम सर्वप्रथम सनातनधर्मी हिंदू है, यही हमारा अस्मिता बोध है |

हिन्दव: सोदरा: सर्वे, न हिंदू पतितो भवेत् |
मम दीक्षा धर्म रक्षा, मम मंत्र समानता ||

सब हिंदू भारत माता की संतान होने से सहोदर है | इसलिए कोई हिंदू पतित नहीं हो सकता है |
हमने "समानता" का मंत्र लेकर "धर्मरक्षा" की दीक्षा ली है |||

|| जो बोले सो अभय सनातन धर्म की जय ||

सनातन धर्म के पतन के कारण और निवारण

****

ध्यान से पढ़ें, समझें, जीवन में उतारें !!!!!

****

क्योंकि, जो गलती को सुधार ले उसे मनुष्य कहते हैं।

****

सनातन हिन्दुओं के सभी प्रमुख गुणों को, मुसलमान, इसाई और बौद्धों ने अपनाया
और दुनियाँ में छा गए।

******

और सनातन हिन्दू इन्हें त्याग कर, बर्बाद होने के कगार पर हैं।

(1) हम धर्म की शिक्षा देकर 7 से 11 वर्ष के बच्चों को गुरुकुल भेजते थे। अब बंद है।
मुसलमान, इसाई नियम से मदरसा, मिशन स्कूल में पहले धर्म की शिक्षा देते हैं।
--- गुरुकुल समाप्त हो गये, मदरसे, मिशन स्कूल हजारों, लाखों की संख्या में खुल गए।
हिन्दुओं के बच्चे भी उसी में शौक से जा रहे हैं। और धर्मनिरपेक्षों की संख्या तेजी से बढ़ रही है।
** प्रत्येक सनातन धर्मावलम्बी के लिए अनिवार्य गायत्री महामंत्र की त्रिकाल संध्या
(सुबह,दोपहर, शाम तीनों समय जप ध्यान) समाप्त।
-- उनकी 5 समय की नमाज और प्रतिदिन की प्रार्थना शुरू।
(3) सप्ताह में कम से कम एक दिन, पूजा, सत्संग, संगठन के लिए मंदिर जाना बंद।
-- उनका जुमे के दिन नमाज मस्जिद में, और रविवार प्रार्थना चर्च में शुरू।
(4) हिन्दू साधू संत गुरु जनों ने अपना कर्तव्य निभाना बंद किया, जिससे समाज में
उनकी प्रतिष्ठा का क्षय हुआ । धर्म शिक्षा हीन हिन्दू अब अपने साधू संतों का अपमान खुले आम करते हैं।
-- उनके मौलवी, पादरी जी-जान लगाकर धर्म प्रचार करते है, जिससे उन्हें उनके समाज में भरपूर
सम्मान मिलता है।
(5) कर्म को छोड़कर जाति को अपना लिया | घरेलू समारोहों में धर्म चर्चा बंद।

केवल रटी रटायी सत्यनारायण कथा, अखंड पाठ या कीर्तन।
--जाति छोड़कर कर्म को अपनाया | उनके मौलाना गये मिलाद(सत्संग) और पादरी का प्रवचन नियम से होते हैं।
(6) हिन्दू धर्म गुरू मठ, आश्रम बनाना, गाडी़ से चलना पसन्द करता है,
और केवल समृद्ध हिन्दू के घर जाता है, गरीब हिन्दू को दूर से ही फटकार देता है |
मुस्लिम धर्म गुरू मदरसे बनाता है जिसमें जिहादी शिक्षा दी जाती है, वो पैदल चलता है
और बिना भेदभाव के सब मुस्लिमों को गले लगाता है |
अमीर से पैसा लेता है और गरीब मुस्लिम को जिहाद के लिए पैसा देता है |
(6) देवता, धर्म गुरु का अपमान होने पर जुबान खींच लेना बंद।
-- उनका ईश निंदा कानून । धर्म विरुद्ध एक भी बात बर्दाश्त नहीं।
(7)धर्म और साम्राज्य विस्तार के लिए, अश्वमेध यज्ञ से, पूरी पृथ्वी पर साम्राज्य विस्तार का लक्ष्य समाप्त। हमने राजनीति छोड़ दी।
-- उन्होंने धर्म और राजनीति को जोडकर, दारुल इस्लाम, और पूरे संसार को इसाई बनाने का काम युद्ध स्तर पर शुरू कर दिया।
(8) संविधान में हिन्दू विरोधी प्रावधान बनाकर कालनेमि वादी सरकारों की हिन्दू विरोधी, षड्यंत्रकारी नीतियों से, विद्यालयों में हिन्दू विरोधी पाठ्यक्रम से शिक्षा से हिन्दुओं को धर्मनिरपेक्ष बना दिया।
-- उन्हें संविधान में अल्प संख्यक बनाकर भरपूर सरकारी अनुदान देकर उनकी धार्मिक शिक्षा को बढ़ावा देकर और कट्टर बना दिया।
(9) इसीलिए संसार में हिन्दुओं का एक भी देश नहीं।
-- मुसलमानों के 56 देश , और ईसाईयों के संसार में 150 से अधिक देश हैं।
परिणाम:--
********* हिन्दू समाज द्वारा हिन्दू हित के लिए प्रचण्ड बहुमत से जिताये गये भारत के राजनेता कुर्सी पर बैठते ही धर्मनिरपेक्ष बन जाते है। और साम्प्रदायिक आधार पर हिन्दू विरोधी बौद्ध, मुस्लिम व ईसाई तुष्टिकरण की नीतियाँ बनाते है । जबकि वो हिन्दू वोटों से जीतकर आते है |
इसलिए हिन्दू एकता के लिए एक ही रास्ता बचा है :----

****

जड़ों की ओर लौटें।

****

जड़ें सूख गयी हैं-- सनातन धर्म के मजबूत आधार ये हैं ----

गायत्री, गीता, गंगा, गौमाता, यज्ञ और कर्म ।

***** इन्हें अपनाने से भाग्य की उन्नति होती है। दुर्भाग्य का शमन होता है।

आज 99% हिन्दू ये नहीं करते। इसीलिए पतन के गर्त में पहुँच गए हैं।

अतः आज से ही सनातन धर्म के इन सिद्धांतों का पालन करना शुरू कर दें।

क्योंकि:----

धर्म आचरण करने पर ही, ईश्वर रक्षा करता है।

धन जन से भरपूर बनाता, और विपत्ति हरता है।

आओ मिलकर करें साधना, देव शक्ति के जागरण की।

गूंजे फिर जयकार धरा पर, सत्य सनातन धर्म की।

|| जो बोले सो अभय सनातन धर्म की जय ||

|| ज्ञानवर्धक प्रश्नोत्तरी ||

प्रश्न - **क्या ईश्वर है? कौन है वह? क्या रुप है उसका? क्या वह स्त्री है या पुरुष?**

उत्तर - कारण के बिना कार्य नहीं। यह संसार उस कारण के अस्तित्व का प्रमाण है। तुम हो इसलिए वह भी है उस महान कारण को ही अध्यात्म में ईश्वर कहा गया है। वह न स्त्री है न पुरुष और न उभयलिंगी।

प्रश्न - **उसका स्वरूप क्या है?**

उत्तर - वह सत्-चित्-आनन्द है, वह अनाकार ही सभी रूपों में अपने आप को स्वयं को व्यक्त करता है |

प्रश्न - **वह अनाकार स्वयं करता क्या है?**

उत्तर - वह ईश्वर संसार की रचना, पालन और संहार करता है।

प्रश्न - **यदि ईश्वर ने संसार की रचना की तो फिर ईश्वर की रचना किसने की?**

उत्तर - वह अजन्मा अमृत और अकारण है |

प्रश्न - **भगवान कौन होता है?**

उत्तर - भगवान शब्द संस्कृत के भगवत शब्द से बना है। वह व्यक्ति जो पूर्णत: मोक्ष को प्राप्त हो चुका है और जो जन्म मरण के चक्र से मुक्त होकर कहीं भी जन्म लेकर कुछ भी करने की क्षमता रखता है, उसे भगवान कहते है | भगवान को ईश्वरतुल्य माना गया है इसीलिए इस शब्द को ईश्वर, परमात्मा या परमेश्वर के रूप में भी उपयोग किया जाता है, लेकिन यह उचित नहीं है। जो आत्मा पांचों इंद्रियो और पंचतत्व के जाल से मुक्त हो गई है वही भगवान कही गई है। इसी तरह जब कोई स्त्री मुक्त होती है तो उसे भगवती कहते हैं। भगवती शब्द का उपयोग माँ दुर्गा के लिए भी किया जाता है। इसे ही भगवान कहा गया है।

भगवान सन्धि विच्छेद: भ्+अ+ग्+अ+व्+आ+न्+अ

भ = भूमि

ग = गगन

व = वायु

अ = अग्नि

न = नीर

भगवान पंच तत्वों से बना है।

भगवान्- **ऐश्वर्य, धर्म, यश, लक्ष्मी, ज्ञान और वैराग्य- ये छ: गुण अपनी समग्रता में जिस गण में हों उसे 'भग' कहते हैं। उसे अपने में धारण करने से वे भगवान् हैं।** यह भी कि उत्पत्ति, प्रलय, प्राणियों के पूर्व व उत्तर जन्म, विद्या और अविद्या को एक साथ जानने वाले को भी भगवान कहते हैं।

प्रश्न - **धर्म क्या है?**

उत्तर - जीव मात्र के कल्याण भाव से सत्य पर आधारित ईश्वर की आज्ञा का यथावत पालन और पक्षपात रहित न्याय सर्वहित करना है । जो कि प्रत्यक्षादि प्रमाणों से सुपरीक्षित और वेदोक्त होने से सब मनुष्यों के लिये यही एक धर्म मानने योग्य है; वह सदा से चला आया है, उसको सनातन धर्म कहते हैं ।

प्रश्न - **अधर्म क्या है?**

उत्तर - जिसका स्वरुप ईश्वर की आज्ञा को छोडकर और पक्षपात सहित अन्यायी होके मत, पंथ, सम्प्रदायों में उलझकर बिना परीक्षा करके अपना ही हित करना है । जिसमें अविद्या , हठ , अभिमान, क्रूरतादि दोषयुक्त होने के कारण वेदविद्या से विरुद्ध है, इससे यह अधर्म कहलाता है, यह अधर्म सब मनुष्यों को छोडने के योग्य है |

प्रश्न- **धर्म के दस लक्षण कौन- कौन से है?**

उत्तर - **धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः।**

धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम् ||

अर्थात धैर्य (किसी कार्य को तब तक धैर्य पूर्वक करते रहना जब तक की उसमें सफलता न मिल जाये), क्षमा (यदि किसी सज्जन, श्रेष्ठ व्यक्ति से भूलवश कोई गलती हो जाये तो उसे क्षमा करना, लेकिन जो दुष्ट-अधर्मी या पापी हो उसे किसी भी स्थिति में क्षमा न करें, ऐसे दुरात्मा को क्षमा करने वाला स्वयं दुख उठाता है), दम (बुरी इच्छाओं व दुष्टों का दमन), चोरी न करना, शौच (अन्दर बाहर की स्वच्छता), इन्द्रियों को वश मे रखना, विवेक, विद्या, सत्य और क्रोध न करना (अनावश्यक क्रोध न करें, लेकिन जब अत्याधिक आवश्यकता हो तो क्रोध अवश्य करें, यह धर्म हैं। शक्तिशाली पितामह भीष्म ने पाण्डवों द्वारा द्रोपदी को जुअे पर लगाये जाने पर भी क्रोध नहीं किया जो उनके जीवन का सबसे बड़ा पाप सिद्ध हुआ, दूसरी तरफ जटायु ने अशक्त होते हुए भी माता सीता का अपहरण करने वाले राक्षसराज रावण का प्रतिकार किया जो उनके जीवन का सबसे बड़ा पुण्य था) ; ये दस धर्म के लक्षण हैं।

प्रश्न- **ज्ञान और कर्म में से किसकी साधना करें ?**

उत्तर- **अन्धन्तमः प्र विशन्ति येऽविद्यामुपासते |**

ततो भूयऽइव ते तमो यऽउ विद्यायाम् रताः || यजुर्वेद 40/12

जो केवल अविद्या, अर्थात केवल भौतिकवादी कर्म में लगे रहते हैं वे गहरे अन्धकार में जाते हैं और जो भौतिकवादी कर्म की अवहेलना कर केवल अध्यात्म वाद में लगे रहते हैं वे उससे भी बढ़कर गहरे अन्धकार में जाते हैं | अब जो कार्य तो करता है पर उसकी लिए ज्ञान की आवश्यकता नहीं समझता वह अँधेरे में है | जो ज्ञानार्जन में तो रत रहता है पर तदनुसार कर्म नहीं करता वह कर्मविहीन ज्ञान के कारण

उससे भी गहन अन्धकार में है | ज्ञान और कर्म एक दूसरे के पूरक है, अत: मनुष्यों को इन दोनों की साधना करनी चाहिए |

प्रश्न - **भाग्य क्या है?**

उत्तर - हर क्रिया, हर कार्य का एक परिणाम है। परिणाम अच्छा भी हो सकता है, बुरा भी हो सकता है। यह परिणाम ही भाग्य है। आज का प्रयत्न कल का भाग्य है।

प्रश्न - **सुख और शान्ति का रहस्य क्या है?**

उत्तर - सत्य, सदाचार, प्रेम, शौर्य, क्षमा और संघबद्ध रहना सुख का कारण हैं। असत्य, अनाचार, पॉपाचार, कायरता, घृणा और क्रोध का त्याग शान्ति का मार्ग है।

प्रश्न - **चित्त पर नियंत्रण कैसे संभव है?**

उत्तर - इच्छाएं, कामनाएं चित्त में उद्वेग उत्पन्न करती हैं। इच्छाओं पर विजय चित्त पर विजय है।

प्रश्न - **सच्चा प्रेम क्या है?**

उत्तर - स्वयं को सभी में देखना सच्चा प्रेम है। स्वयं को सर्वव्याप्त देखना सच्चा प्रेम है। स्वयं को सभी के साथ एक देखना सच्चा प्रेम है।

प्रश्न- **तो फिर मनुष्य सभी से प्रेम क्यों नहीं करता?**

उत्तर - जो स्वयं को सभी में नहीं देख सकता वह सभी से प्रेम नहीं कर सकता।

प्रश्न - **आसक्ति क्या है?**

उत्तर - प्रेम में मांग, अपेक्षा, अधिकार आसक्ति है।

प्रश्न - **बुद्धिमान कौन है?**

उत्तर - जिसके पास विवेक है।

प्रश्न - **मैं कौन हूँ ?**

उत्तर - तुम न यह शरीर हो, न इन्द्रियां, न मन, न बुद्धि। तुम शुद्ध चेतना हो, वह चेतना जो सर्वसाक्षी है।

प्रश्न - **जीवन का उद्देश्य क्या है?**

उत्तर - जीवन का उद्देश्य उसी चेतना को जानना है जो जन्म और मरण के बन्धन से मुक्त है। उसे जानना ही मोक्ष है।

प्रश्न - **जन्म का कारण क्या है?**

उत्तर - अतृप्त वासनाएं, कामनाएं और कर्मफल ये ही जन्म का कारण हैं।

प्रश्न - **जन्म और मरण के बन्धन से मुक्त कौन है?**

उत्तर - जिसने स्वयं को, उस आत्मा को जान लिया वह जन्म और मरण के बन्धन से मुक्त है।

प्रश्न - **वासना और जन्म का सम्बन्ध क्या है?**

उत्तर - जैसी वासनाएं वैसा जन्म। यदि वासनाएं पशु जैसी तो पशु योनि में जन्म। यदि वासनाएं मनुष्य जैसी तो मनुष्य योनि में जन्म।

प्रश्न - **जाति क्या है?**

उत्तर - जो ईश्वरकृत मनुष्य, गाय, अश्व, हाथी, घोड़ा आदि जीव- जन्तु और वृक्षादि समूह है, वह सब जाति कही जाती है |

प्रश्न - **तो क्या मनुष्यों में जाति नहीं होती?**

उत्तर - हाँ, मनुष्यों में जाति नहीं होती क्योंकि मनुष्य स्वयं एक जाति है, इसमें ढाई भेद अवश्य होते है- पुरूष, स्त्री और उभयलिंगी(नपुसंक या हिजड़ा) | जो मनुष्य में इनसे अधिक भेद या जाति मानते है वे अज्ञानी है |

प्रश्न - **संसार में दुःख क्यों है?**

उत्तर - लालच, स्वार्थ, भय, दुष्ट- अधर्मियों को कठोर दण्ड का न दिया जाना संसार के दुःख का कारण हैं।

प्रश्न - **ईश्वर ने दुःख की रचना क्यों की?**

उत्तर - ईश्वर ने संसार की रचना की और मनुष्य ने अपने विचार और कर्मों से दुःख और सुख की रचना की।

प्रश्न - **चोर कौन है?**

उत्तर - इन्द्रियों के आकर्षण, जो मन को हर लेते हैं ।

प्रश्न - **जागते हुए भी कौन सोया हुआ है?**

उत्तर - जो आत्मा को नहीं जानता वह जागते हुए भी सोया है।

प्रश्न - **कमल के पत्ते में पड़े जल की तरह अस्थायी क्या है?**

उत्तर - यौवन, धन और जीवन।

प्रश्न - **नरक क्या है?**

उत्तर - इन्द्रियों की दासता नरक है।

प्रश्न - **मुक्ति क्या है?**

उत्तर - अनासक्ति ही मुक्ति है।

प्रश्न - **दुर्भाग्य का कारण क्या है?**

उत्तर - अकर्मण्यता, मद और अहंकार।

प्रश्न - **सौभाग्य का कारण क्या है?**

उत्तर - कर्मण्यता, सत्संग, विवेक और धर्म के प्रति समर्पणभाव।

प्रश्न - **संसार को कौन जीतता है?**

उत्तर- जिसमें सत्य, कर्मनिष्ठा और श्रद्धा है।

प्रश्न - **भय से मुक्ति कैसे संभव है?**

उत्तर - विवेक से।

प्रश्न- **मुक्त कौन है?**

उत्तर - जो अज्ञान से परे है।

प्रश्न - **अज्ञान क्या है?**

उत्तर - आत्मज्ञान का अभाव अज्ञान है।

प्रश्न- **मनुष्य का साथ कौन देता है?**

उत्तर - धर्म और कर्म ही मनुष्य का साथ देता है |

प्रश्न - **वायु से तेज कौन चलता हैं ?**

उत्तर - मन |

प्रश्न - **विदेश में साथी कौन होता है?**

उत्तर - विद्या |

प्रश्न - **विद्या क्या है?**

उत्तर - ईश्वर से लेकर पृथ्वीपर्यन्त पदार्थों का सत्य विज्ञान प्राप्त करना तथा उनका यथायोग्य उपयोग करना विद्या है |

प्रश्न - **किसे त्याग कर मनुष्य प्रिय हो जाता है?**

उत्तर - अहम् भाव से उत्पन्न गर्व के छूट जाने पर |

प्रश्न - **कौन सा एकमात्र उपाय है जिससे जीवन सुखी हो जाता है?**

उत्तर - अच्छा स्वभाव ही सुखी होने का उपाय है |

प्रश्न - **सर्वोत्तम लाभ क्या है?**

उत्तर - आरोग्य |

प्रश्न- **मत, पंथ, सम्प्रदाय से बढ़कर संसार में और क्या है?**

उत्तर - धर्म |

प्रश्न - **कैसे व्यक्ति के साथ की गयी मित्रता पुरानी नहीं पड़ती?**

उत्तर - सज्जनों के साथ की गयी मित्रता कभी पुरानी नहीं पड़ती |

प्रश्न - **इस जगत में सबसे बड़ा आश्चर्य क्या है?**

उत्तर - प्रतिदिन हजारों-लाखों लोग मरते हैं फिर भी सभी को अनंतकाल तक जीते रहने की इच्छा होती है, इससे बड़ा आश्चर्य और क्या हो सकता है?

प्रश्न - **तीर्थ क्या है?**

उत्तर - जितने विद्याभ्यास, सुविचार, ईश्वरोपासना, धर्मानुष्ठान, सत्य का संग, ब्रह्मचर्य, जितेन्द्रियता, दुष्टों का दमन, धर्म- रक्षा, उत्तम कर्म हैं, वे सब तीर्थ कहाते हैं क्योंकि इन्हें करके जीव दुःखसागर से तर सकते हैं |

प्रश्न - **पुरूषार्थ क्या है?**

उत्तर - सर्वथा आलस्य छोड़ के उत्तम व्यवहारों की सिद्धि के लिए मन, शरीर, वाणी और धन से अत्यन्त उद्द्योग (परिश्रम) करने को पुरूषार्थ कहते हैं |

प्रश्न- **अहिंसा किसे कहते है ?**

उत्तर- साधारण अर्थ में मन , वचन और कर्म के द्वारा किसी भी प्राणी को कष्ट न देना , न सताना , न मारना अहिंसा कहलाता है । अहिंसा परमधर्म है । किन्तु अहिंसा की यह परिभाषा बहुत ही अपूर्ण और असमाधान कारक है । केवल शब्दार्थ से अहिंसा का भाव नहीं ढूँढा जा सकता , इसके लिए योगेश्वर श्रीकृष्ण द्वारा अर्जुन को दी गई व्यवहारिक शिक्षा का आश्रय लेना पडेगा ।

जिस पुरूष के अन्तःकरण में ' मैं कर्ता हू ' ऐसा भाव नहीं है तथा जिसकी बुद्धि सांसारिक पदार्थ और कर्मो में लिप्त नहीं होती है , वह पुरूष सब लोगों को मारकर भी वास्तव में न तो मारता है और न ही पाप से बंधता है । जिस हिंसा से अहिंसा का जन्म होता है , जिस लडाई से शान्ति की स्थापना होती है , जिस पाप से पुण्य का उद्भव होता है , उसमें कुछ भी अनुचित या अधर्म नहीं है । वास्तव में मानवता की रक्षा के लिए दुष्टों का प्राण हरण करना तो शुद्ध अहिंसा है ।

अत्याचारी के अत्याचार को सहन करने का नाम अहिंसा नहीं यह तो मुर्दापन है । मृत शरीर पर कोई कितना ही प्रहार करता रहे , वह कोई प्रतिकार नहीं करता । इसी प्रकार जो मनुष्य चुपचाप अत्याचार सह लेता है , वह मृत नहीं तो और क्या है ?

भारतीय वैदिक संस्कृति में अत्याचार सहने का नहीं बल्कि अत्याचारी को दण्ड देने का विधान अहिंसा है | जो निजी स्वार्थ के वशीभूत होकर दूसरों को हानि पहुँचाता है , या किसी के प्राण लेता है , तो वह हिंसा है , और जो परमार्थ के लिए या सार्वजनिक हित के लिए अत्याचारी को हानि पहुँचाता , या उसको मार डालता है , तो वह हिंसा न होकर सच्ची अहिंसा है । क्योंकि उससे सार्वजनिक हित होता है ।

अहिंसा की प्रतिष्ठा इसलिए नहीं है कि उससे किसी जीव का कष्ट होता है । कष्ट होना न होना कोई विशेष महत्व की बात नहीं है , क्योंकि शरीरों का तो नित्य ही नाश होता है और आत्मा अमर है , इसलिए मारने न मारने में हिंसा - अहिंसा नहीं है । **अहिंसा का अर्थ है - ' द्वेष रहित होना । '** निजी राग - द्वेष से प्रेरित होकर संसार के हित - अहित का विचार किये बिना जो कार्य किये जाते है , वे हिंसा पूर्ण है । यदि लोक कल्याण के लिए , मानवता की रक्षा के लिए किसी को मारना पडे तो उसमें दोष नहीं है , वास्तव में वह शुद्ध अहिंसा है ।

प्रश्न- **स्वाध्याय किसे कहते है ?**

उत्तर- वेद, वाल्मिकी रामायण, गीता, उपनिषद् आदि सद्ग्रन्थों का अध्ययन तथा आत्मचिन्तन करना स्वाध्याय कहलाता है |

प्रश्न- **ईश्वर-प्रणिधान किसे कहते है ?**

उत्तर- सभी कर्मों का परमात्मा को समर्पण करना प्राणिधान कहलाता है |

प्रश्न - **गुरू किसे कहते है?**

उत्तर - जो माता-पिता रज-वीर्यदान से लेके भोजनादि कराके पालन-पोषण करते है, इससे माता-पिता को गुरू कहते हैं और जो अपने सत्योपदेश से ह्रदय के अज्ञान रूपी अन्धकार मिटा देवे, ऐसे आचार्य (शिक्षक) को भी गुरू कहते हैं ।

प्रश्न - **तो क्या सभी शिक्षक, आचार्य गुरू नहीं होते?**

उत्तर - सभी शिक्षक आचार्य नहीं होते, गुरू तो बिल्कुल भी नहीं | राष्ट्र के नवर्निर्माण के लिए रचनात्मक शिक्षा की आवश्यकता होती है | आज शिक्षक है, प्रोफेसर है, प्रिंसिपल हैं, कथावाचक है, कर्मकांडी है, पर विद्या देने वाले आचार्य- गुरू नहीं हैं | जो स्वयं कायर- भोगी है, वे बच्चों को वीरता- कर्मयोग कैसे सिखाएँगे ! जो स्वार्थांध है, वे दूसरों को तपस्वी कैसे बनाएँगे ! कहावत है '**अंधेनैव नीयमाना यथांधा:**' - यदि अंधा किसी को मार्ग पर लेकर चले तो अपने साथ उसको भी गिराएगा |

प्रश्न - **बच्चों के निर्माण में शिक्षकों, आचार्यो, कथावाचकों व अभिभावकों का क्या दायित्व है?**

उत्तर - राष्ट्रीय चरित्र और राष्ट्रभावना के बिना कोई भी राष्ट्र महान नहीं बन सकता, और बिना राष्ट्रगौरव के कोई भी व्यक्ति महान नहीं बन सकता | आप घर- परिवार के बच्चों को वह पाठ्यक्रम दे जिसे हमारे देश के पाठ्यक्रम में नहीं दिया जा रहा है | रामायण, महाभारत की कथा, गीता, उपनिषद् आदि स्मरण कराये जा सकते है | साथ ही **संस्कृत का अभ्यास अवश्य कराया जाये** | ईसाईयों को अंग्रेजी आती है वो बाइबल पढ़ लेते है, मुसलमानों को उर्दू आती है वो कुरान पढ़ लेते है | सिक्खों को गुरूवाणी का पता है वो गुरू ग्रन्थ साहिब पढ़ लेते है, पर हिन्दुओं को संस्कृत आती नहीं, वो ना वेद पढ़ पाते है, ना गीता ना उपनिषद् | इससे बडा दुर्भाग्य क्या होगा किसी धर्म का ? इसी अज्ञानता का लाभ पॉप, म्लेछ व पिशाच आदि उठाते है और विभिन्न प्रकार के पाखण्ड व षड़यन्त्र रचकर हिन्दू समाज का शोषण व धर्म-भ्रष्ट करते है | माता-पिता एवं शिक्षकों के साथ ही कथावाचकों, साहित्यकारों, बुद्धिजीवियों को भी राष्ट्र-निर्माण की दिशा में प्रयास करना होगा | सरकार को भी चाहिए कि वह अपना व्यवसायिक दृष्टिकोण त्यागकर धर्म, दर्शन, न्याय, संस्कृति, आध्यात्मिक विज्ञान जैसे क्षेत्रों में अधिक से अधिक निवेश करें | बच्चों को गुमराह करने वाले साहित्य एवं मीडिया पर तत्काल प्रतिबन्ध इस दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम होगा | स्थान - स्थान पर संस्कार शालाएँ एवं धर्म प्रशिक्षण केन्द्र चलाए जाने से निश्चित ही भटके बाल व युवामन को सही दिशा में लाया जा सकता है | हमारी नैतिकता को झकझोरती वर्तमान समाज-व्यवस्था में बच्चों के नवनिर्माण के लिए आमूलचूल परिवर्तन की यह अनिवार्य आवश्यकता है |

प्रश्न - **गणेश कौन है? क्या सर्वप्रथम उनकी पूजा होनी चाहिए?**

उत्तर - गण + ईश = गणेश | जो गणों का स्वामी है वही गणेश है। यह ईश्वर का एक नाम है। ईश्वर के नाम से ही प्रत्येक शुभ कार्य को करना चाहिए | साधक अपने ध्यान में जिस अविनाशी परब्रहं परमेश्वर की ओर

उन्मुख होता है, वही सच्चा गणेश है और सबको उसी एक गणेश की आराधना करनी चाहिए। वेद में कहा गया है कि **गणानां त्वा गणपतिं... गणपति भ्रानचते विश्वायते रूपायण**, वास्तव में गणेश उसको कहते हैं, जो गणैती हो। गणैती करने वाला हो, जो अयुक्त रहने वाला हो, जिसको न राग हो, न द्वेष हो, जिसकी घ्राण शक्ति अधिक हो, जो सब गंध व सुगंध को अपने में धारण करने वाला हो, उसको गणेभ्यो कहते हैं। परमात्मा सबसे बड़ा गणपति माना गया है। आर्ष ग्रंथों में कहा गया है कि **ज्ञानार्थवाचको गश्चणश्च निर्वाणवाचकः त्योरीशं परं ब्रह्मा गणेश प्रणमाम्यहम।**

अर्थात् ज्ञान निर्वाणवाचक गण के ईश्वर परंब्रह्मा हैं। पवित्र गणेश पुराण में लिखा है कि

ओ३मकार रूपी भगवान ये वेदादौ प्रतिष्ठित: | य सदा मुनयो देवा स्मरन्तीन्द्रादयो द्वदि ||

अर्थात गणपति ओंकार रूप ही है, इसी से सब कर्मो के आदि में उसकी पूजा होती है | मंत्र से सिद्ध होता है कि सृष्टि के आदिकाल से उनकी पूजा होती चली आ रही है, भगवान शंकर-माँ पार्वती के पुत्र गणेश के जन्म से पूर्व भी गणपति पूज्य थे | पार्वती-पुत्र गणेश को उनकी मातृ-पितृ भक्ति के कारण सर्वप्रथम पूज्य माना जाता है | पूजा चित्र की नहीं चरित्र की होती है अर्थात सर्वप्रथम अपने माता-पिता की पूजा (सेवा-सुश्रुसा) करने के बाद ही तुम सही अर्थो में परमात्मा की पूजा के अधिकारी हो सकते हो |

प्रश्न - **ईश्वर एक है या अनेक?**

उत्तर - ईश्वर एक है | यदि संसार में अनेक ईश्वर हो गये तो समस्या उत्पन्न कर देगे | आपस में लड़ाई हो जाएगी, मार-काट मच जाएगी, जैसे मुस्लिम धर्म वाले अल्लाह के नाम पर मार-काट मचा भी रहें है |

प्रश्न - **भगवान को हम अपना इष्ट कैसे बनाएँ?**

उत्तर - भगवान को इष्ट बनाने का एक ही तरीका है कि आप जीवन में निश्चय कीजिए कि आपको क्या बनना है? आपको ऊँचाई के पथ पर चलने के लिए क्या बनना है? आपको लोकहित करना है या आपको भगवान का भक्त बनना है? देवी- देवता परमात्मा की एक-एक विशेषता है, एक-एक लक्ष्य के प्रतिक है | यदि आपको उदात्त बनना हो और मानवता के सिद्धांतों से ओत-प्रोत होना हो तो परमात्मा से अच्छा इष्ट और क्या हो सकता है? गायत्री मन्त्र परमात्मा प्राप्ति का सर्वश्रेष्ठ मन्त्र है |

प्रश्न - **गायत्री मंत्र में ईश्वर की उपासना की गयी है अथवा सूर्य की? इस मन्त्र का अर्थ क्या है ?**

उत्तर - गायत्री मंत्र का प्रारम्भ ओम् से होता है | माण्डूक्योपनिषद् में ओंकार अर्थात् ओम् के महत्व तथा अर्थ दोनों पर प्रकाश डाला गया है | **ओम्** स्वयं में एक मंत्र है जिसे प्रणव भी कहते हैं | यह अ, उ, म् इन तीन अक्षरों को मिला कर बना है | अ से ब्रह्म का विराट रूप, उ से हिरण्यगर्भ या तैजस रूप, म् से ईश्वर या प्राज्ञ रूप का बोध होता है | यह ब्रह्माण्ड ही ब्रह्म का शरीर या विराट रूप है | अपनी लीला को पूर्ण रूप में व्यक्त करने के कारण वह विराट या विश्व या वैश्वानर कहलाता है | जो आप स्वयंप्रकाश और सूर्यादि लोकों का प्रकाश करने वाला है, इससे परमेश्वर का नाम हिरण्यगर्भ या तैजस है | जिसका अर्थ सत्य विचारशील ज्ञान और अनन्त ऐश्वर्य है, उससे उस परमात्मा का नाम ईश्वर है और सब चराचर जगत् के व्यवहार को यथावत् जानने के कारण वह ईश्वर ही प्राज्ञ कहलाता है |

गायत्री मंत्र का शेष भाग **'भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्'** यजुर्वेद के छत्तीसवें अध्याय से लिया गया है जिसमें सविता के साथ सूर्य की अलग से वन्दना है | सविता का मूल शब्द सवितृ है जिसका अर्थ सूर्य के साथ प्रेरक ईश्वर भी होता है | जैसे हरि का अर्थ बन्दर और ईश्वर होता है और सन्दर्भानुसार ही हम उसका अर्थ ग्रहण करते हैं | उसी प्रकार चूँकि यह मंत्र बुद्धि को प्रेरित करने की प्रार्थना करता है अतः सविता का अर्थ प्रेरित करने की क्षमता वाले ईश्वर से ही करना चाहिए | गायत्री मंत्र में भूः शब्द पदार्थ और ऊर्जा के अर्थ में, भुवः शब्द अन्तरिक्ष के अर्थ में तथा स्वः शब्द आत्मा के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है | शुद्ध स्वरूप और पवित्र करने वाला चेतन ब्रह्म स्वरूप ईश्वर को ही भर्ग कहा जाता है | इस प्रकार गायत्री मंत्र का अर्थ हुआ पदार्थ और ऊर्जा (भूः), अन्तरिक्ष (भुवः) और आत्मा (स्वः) में विचरण करने वाला सर्वशक्तिमान ईश्वर (ओम्) है | उस प्रेरक (सवितुः) पूज्यतम् (वरेण्यं) शुद्ध स्वरूप (भर्गः) देव का (देवस्य) हमारा मन अथवा हमारी बुद्धि धारण करे, (धीमहि) वह जगदीश्वर (यः) हमारी (नः) बुद्धि (धियः) को अच्छे कामों में प्रवृत्त करे (प्रचोदयात्) | इस प्रकार गायत्री मंत्र ब्रह्म के स्वरूप, ईश्वर की महिमा का वर्णन करते हुए प्रार्थना मंत्र का स्वरूप ले लेता है |

प्रश्न - **भगवान राम को प्रसन्न करना हो तो क्या करें?**

उत्तर - भगवान राम को प्रसन्न करना हो तो हनुमान जैसा बनना पडेगा | बल, पराक्रम, बुद्धि, ज्ञान और विनय की प्रतिमूर्ती महावीर हनुमान |

प्रश्न - **हनुमान जी तो बन्दर थे?**

उत्तर - महाबली हनुमान जी वानर = बन्दर नहीं थे | वे वेदों के बड़े विद्वान, बलवान, ब्रह्मचारी और तपस्वी भगवान थे | इसके कुछ प्रमाण हम यहाँ लिखते है- हनुमान जी की माता जी का नाम 'अंजनी' था, और पिता जी का नाम 'पवन' था, ये दोनों मनुष्य थे न कि बन्दर ! तो मनुष्यों के मनुष्य पैदा होते हैं या बन्दर ? यदि बन्दर पैदा नहीं होते, तो विचार करें, कि जब हनुमान जी के माता पिता मनुष्य थे, तो उनके पुत्र श्री हनुमान जी भी तो मनुष्य सिद्ध हुये | वाल्मीकि रामायण में श्री हनुमान जी की योग्यता लिखी है, कि वे ऋग्वेद, यजुर्वेद और सामवेद के विद्वान थे तथा संस्कृत व्याकरण शास्त्र में बहुत कुशल थे | सोचिये, क्या बन्दर ऋग्वेद, यजुर्वेद और सामवेद तथा संस्कृत व्याकरण पढ़ सकता है ? यदि नहीं, तो बताइये, श्री हनुमान जी बन्दर कैसे हुए ?

हनुमान चालीसा के प्रारंभ में चौथे/पांचवें वाक्य में लिखा है, कि " **काँधे मूंज जनेऊ साजे, हाथ बज्र और ध्वजा बिराजे** " अर्थात श्री हनुमान जी के कंधे पर मूंज की जनेऊ अर्थात यज्ञोपवीत सुशोभित होता है | उनके एक हाथ में वज्र (गदा) और दूसरे हाथ में ध्वज रहता है | अब सोचिये हनुमान चालीसा बहुत लोग पढ़ते हैं, फिर भी इस बात पर ध्यान नहीं देते, कि क्या बन्दर के कंधे पर मूंज की जनेऊ हो सकती है | क्या बन्दर के एक हाथ में गदा और दूसरे हाथ में ध्वज होता है | यदि नहीं, तो श्री हनुमान जी बन्दर कैसे हुए ? आपने रामायण धारावाहिक में बाली, सुग्रीव और उनकी पत्नियाँ तो देखी ही होंगी. उस धारावाहिक में बाली और सुग्रीव तो बन्दर दिखाए गए, परन्तु उनकी पत्नियाँ मनुष्यों वाली स्त्रियाँ दिखाई गई, यदि उनकी पत्नियाँ मनुष्य जाति की थी. तो उनके पति भी मनुष्य होने चाहिये | अर्थात बाली और सुग्रीव भी मनुष्य दिखने चाहिए थे. परन्तु वे दोनों बन्दर दिखाए गए.यदि वे बन्दर थे, तो सोचिये क्या मनुष्यों की स्त्रियों की शादी बंदरों के साथ होती है ? या आजकल भी कोई मनुष्य स्त्रियाँ बंदरों के साथ शादी करने को तैयार हैं ? यदि उनकी पत्नियाँ मनुष्य थीं, तो उनके पति= बाली और सुग्रीव भी मनुष्य ही सिद्ध हुए. और श्री हनुमान जी उनके महामंत्री थे. वे भी उसी जाति के थे. तो श्री हनुमान जी भी मनुष्य सिद्ध हुए.

मित्रों, हमारे धर्म-संस्कृति पर हजारों साल से आक्रमण किये जा रहे है, यहाँ नास्तिकों का व विदेशियों का शासन रह चुका है, उन्होंने हमारे सारे शास्त्र जलाये और उनमें मिलावट की ताकि हम अपना स्वाभिमान भूल जाये।

प्रश्न - **क्या हनुमान जी के पूँछ भी नहीं थी?**

उत्तर - प्राचीन काल में राजदूत पल्लेदार वस्त्र पहना करते थे, जिनकी कमर का हिस्सा जमीन पर कई मीटर तक घिरसता हुआ चलता था, लेकिन जिस भी देश में जाते थे, वह पल्ला उस देश के सेवक उठाकर रखते थे। यह सम्मान ब्रिटिश काल तक मिलता था। इसी पल्ले को राजदूत की पूंछ कहते थे और श्रीहनुमान जी सुग्रीव की ओर से राक्षस राज्यों के राजदूत पहले से ही नियुक्त थे। भगवान श्रीराम के मिलने से भी पहले से, इसलिए उन्हें माता सीता की खोज के लिए सबसे पहले भेजा गया लंका में और उनके राजदूत वाले लटकते कपडे ही उनकी पूंछ का सही रहस्य है | उनकी तो राजदूतों की सम्मान के साथ पूछ होती थी | भगवान श्रीराम के जीजा श्री श्रृंग ऋषि ने अपनी स्मृति में उन्हें राजदूत लिखा है, बंदर नहीं। श्रृंग ऋषि ही नहीं वाल्मीकि रामायण में भी हनुमान जी को यकीनन दूत ही लिखा है, देखिए प्रमाण:

वधं न कुर्वन्ति परावरज्ञाः दूतस्य सन्तो वसुधाधिपेन्द्राः

जब रावण के दरबार में विभीषण ने कहा कि दूत यानी राजदूत का वध नहीं हो सकता, तो रावण ने कहा कि ठीक है, इसके पूंछ यानी घिरसने वाले वस्त्र से सेवक हटा लिए जाएं यानी इसकी प्रतिष्ठा सम्मान अब हम नहीं करेंगे, और इस आभूषण को काट कर आग लगा दो।

दूतं किल लांगूलमिष्टंभवति भूषणम्
तदस्य दीप्यतां शीघ्रं तेन दग्धेन गच्छेतु।

अपमान से आहत हनुमान ने रावण के गोलाबारूद पर कब्जा किया और जमकर बमबारी की।
यकीनन वाल्मीकि रामायण में यही लिखा है कि हनुमान ने प्रहस्त के घर में अग्नि फेंकी, फिर महापार्श्व के घर में कूदे और वहां भी अग्नि फेंकी, यहां पूंछ से आग लगाना कतई नहीं लिखा। देखें प्रमाण:

अवप्लुत्य महावेगः प्रहस्तस्य निवेशनम् अग्नि तत्र स सनिक्षिथ श्वसनेन समो बली
ततोन्प्यत्पुप्लुवे वेशम वमहापार्श्वम वीर्यवान मुमोच हनुमाननग्निं कालानलशिखोपमम्

वाल्मीकि रामायण सुंदर कांड 691, 892

प्रश्न - **शिव कौन है?**

उत्तर - परमात्मा शिव अजन्मा हैं , अभोक्ता, ज्ञान के सागर है आनन्द के सागर है, प्रेम के सागर है, सुख के सागर है (Ocean of all virtues) ! उनका स्वरूप ज्योतिर्बिन्दु है ! शिव..... का अर्थ ही है " कल्याणकारी " ! परमात्मा शिव को सभी ग्रंथों , पुराणों और वेदों में सर्वोपरी ईश्वर माना गया हैं ! ब्रह्मा, विष्णु, महेश, दुर्गा आदि इसी की विभिन्न शक्तियों के नाम है |

प्रश्न - **शिवलिंग क्या है?**

उत्तर - शिवलिंग का अर्थ शिव का प्रतीक.... " शिवलिंग " शब्द में ' लिंग ' शब्द दो शब्दों से बना है, "लीन + गा (गति)" अर्थात, शिव में लीन होकर ही मनुष्य को गति प्राप्त होती है; यानी, शिव के निराकार स्वरूप में ध्यान- मग्न आत्मा सद्गति को प्राप्त होती है, उसे परब्रह्म की प्राप्ति होती है।
तात्पर्य यह है कि हमारी आत्मा का मिलन परमात्मा के साथ कराने का माध्यम-स्वरूप है, शिवलिंग | शून्य, आकाश, अनन्त, ब्रह्माण्ड और निराकार परमपुरुष का प्रतीक होने से इसे लिंग कहा गया है। वातावरण सहित घूमती पृथ्वी तथा सारे अनन्त ब्रह्माण्ड (क्योंकि, ब्रह्माण्ड गतिमान है) का अक्स/धुरी (axis) ही लिंग है। शिव लिंग का अर्थ अनन्त भी होता है अर्थात जिसका कोई अन्त नहीं है ना ही शुरुवात |

प्रश्न - **शिवलिंग साकार का प्रतिक है अथवा निराकार का?**

उत्तर - शिवलिंग साकार एवं निराकार ईश्वर का 'प्रतीक' मात्र है, जो परमात्मा - आत्म-लिंग का द्योतक है। शिवलिंग शाश्वत- आत्मा का स्वरूप है |

प्रश्न - **इसे थोड़ा विस्तार से समझाये?**

उत्तर - ब्रह्माण्ड में दो ही चीजे है : ऊर्जा और प्रदार्थ | हमारा शरीर प्रदार्थ से निर्मित है और आत्मा ऊर्जा है| इसी प्रकार शिव पदार्थ और शक्ति ऊर्जा का प्रतीक बन कर शिवलिंग कहलाते है | ब्रह्मांड में उपस्थित समस्त ठोस तथा उर्जा शिवलिंग में निहित है. वास्तव में शिवलिंग हमारे ब्रह्मांड की आकृति है. (The universe is a sign of Shiva Lingam.) शिवलिंग भगवान शिव और देवी शक्ति (पार्वती) का आदि-अनादी एकल रूप है तथा पुरुष और प्रकृति की समानता का प्रतिक भी अर्थात इस संसार में न केवल पुरुष का और न केवल प्रकृति (स्त्री) का वर्चस्व है अर्थात दोनों सामान है |

प्रश्न - **क्या शिवलिंग मनुष्य का जनेन्द्रिय नहीं है?**

उत्तर- शिवलिंग का अर्थ लिंग या योनी नहीं होता .. यथार्थ में ये भ्रान्ति भाषा के रूपांतरण, नास्तिकों, बौद्धों व पिशाचों द्वारा हमारे पुरातन धर्म ग्रंथों को नष्ट कर दिए जाने तथा मलेच्छों द्वारा इसकी कुव्याख्या से उत्पन्न हुआ है | जो लोग शिवलिंग पूजा की आलोचना करते है.. छोटे छोटे बच्चो को बताते है कि हिन्दू लोग लिंग और योनी की पूजा करते है.. मुर्खों को संस्कृत का ज्ञान नहीं होता है... और छोटे छोटे बच्चो को हिन्दुओ के प्रति घृणा पैदा करके उनको आतंकी बना देते है...

शिवलिंग अथवा सनातन धर्म के ज्ञान प्राप्ति हेतु पहले संस्कृत का ज्ञान लेना चाहिए..**संस्कृत भाषा में लिंग का अर्थ चिन्ह, प्रतीक होता है**... जबकी जनर्नेद्रीय (मानव अंग) को संस्कृत भाषा में (शिश्न) कहा जाता है.. पुरुषलिंग का अर्थ पुरुष का प्रतीक इसी प्रकार स्त्रीलिंग का अर्थ स्त्री का प्रतीक और नपुंसकलिंग का अर्थ है ... नपुंसक का प्रतीक |

अब यदि जो लोग पुरुष लिंग को मनुष्य के जनेन्द्रिय समझ कर आलोचना करते है..तो वे बताये "स्त्री लिंग" के अर्थ के अनुसार स्त्री का लिंग होना चाहिए... और खुद अपनी स्त्रीयों के लिंग को बताये फिर आलोचना करें | **सृष्टि रचना के महानतम् वैज्ञानिक रहस्य शिवलिंग को मूलत: शिश्नपूजक अंधविश्वासी बौद्धों ने विकृत करके मानव शिश्न के रूप में प्रचारित किया हैं,** सनातन धर्म को नीचे गिराकर बौद्ध धर्म को ऊपर उठाने की विकृत चाह में इन लोगो ने सनातन धर्म के शास्त्रों को नष्ट किया, शास्त्रों में विशेषकर पुराणों में मिलावट की हैं, कई अध्याय बदले दिये गये और अनेक शब्दों के अर्थो का कुअर्थ किया गया हैं।

कोई भी बौद्ध देश हो हर जगह बुद्ध के शिश्न का बेहद महत्वपूर्ण स्थान है l थाईलैंड में चाओ-मे-तुप्तिम मठ-विहार में मनोकामना पूर्ण करने हेतु बुद्ध को सोने-चांदी, लकड़ी, रबर के शिश्न चढ़ाये जाते हैं l

भूटान में घरों के दरवाजे,key-chain,soda opener,ballpen, और हर चीजों को बुद्ध के शिश्न जिसे Phallu कहते है इस्तेमाल किया जाता है l ट्रक की नंबर प्लेट से लगा कर घर की दीवारों तक बुद्ध के शिश्न के चित्र रखे जाते है l कोरिया में बुद्धा के शिश्न की स्मृति में PENIS PARK (शिश्न-बाग) बना हुआ है और कई होटल बनी है जिसमे हर व्यंजन बुद्ध शिश्न के आकार के होते हैं l चीन में अभी शिश्न आकार की बिल्डिंग का काम चल रहा है l जापान में बुद्ध शिश्न के लिए त्यौहार मनाये जाते है l

बुद्ध की हर मूर्ति पर शिश्न जैसा आकार बना हुआ है l शिश्न को जीवन का हर रहस्य बोद्धों में माना गया है l इसलिए बौद्धों में सब कुछ शिश्न से शुरू होता है और शिश्न पर समाप्त होता है। बौद्ध देश थाईलैंड दुनिया में वैश्यवृत्ति में अग्रणी। भूटान और म्यांमार कट्टरपंथी हिंसक बौद्ध देश है। तिब्बत तंत्र मंत्र वाला वाममार्गी देश है। उत्तर और दक्षिण कोरिया जैसे बौद्ध देश आप में घोर शत्रु है। कंबोडिया मानव तस्कर में अग्रणी देश है।

अब बात करते है योनि शब्द पर — मनुष्ययोनि, पशुयोनी, पेड़-पौधों की योनि, पत्थरयोनि आदि | **योनि का संस्कृत में प्रादुर्भाव, प्रकटीकरण अर्थ होता है... जीव अपने कर्म के अनुसार विभिन्न योनियों में जन्म लेता है...** कुछ पैशाचिक धर्मो में पुनर्जन्म की मान्यता नहीं है... इसीलिए वे योनि शब्द के संस्कृत अर्थ को नहीं जानते है जबकि सनातन हिंदू धर्म में 84 लाख योनी अर्थात 84 लाख प्रकार के जन्म है अब तो वैज्ञानिक भी मानने लगे है कि धरती पर 84 लाख प्रकार के जीव (पेड, कीट,जानवर,मनुष्य आदि) है.... मनुष्य योनी > **पुरुष और स्त्री दोनों को मिलाकर मनुष्य योनि होता है..अकेले स्त्री या अकेले पुरुष के लिए मनुष्य योनि शब्द का प्रयोग संस्कृत में नहीं होता है |**

प्रश्न - **क्या शिवलिंग का कोई वैज्ञानिक तथ्य भी है?**

उत्तर - भारत का रेडियोएक्टिविटी मैप उठा लें, तब हैरान हो जायेगें ! भारत सरकार के नुक्लिअर रिएक्टर के अलावा सभी ज्योतिर्लिंगो के स्थानों पर सबसे ज्यादा रेडिएशन पाया जाता है। शिवलिंग न्यूक्लिअर रिएक्टर्स भी हैं, तभी उन पर जल चढ़ाया जाता है ताकि वो शांत रहे। महादेव के सभी प्रिय पदार्थ जैसे कि बिल्व पत्र, आक, आकमद, धतूरा, गुड़हल,आदि सभी न्यूक्लिअर एनर्जी सोखने वाले हैं। क्यूंकि शिवलिंग पर चढ़ा पानी भी रिएक्टिव हो जाता है, तभी जल निकासी नलिका को लांघा नहीं जाता। भाभा एटॉमिक रिएक्टर का डिज़ाइन भी शिव लिंग की तरह है। शिवलिंग पर चढ़ाया हुआ जल नदी के बहते हुए जल के साथ मिलकर औषधि का रूप ले लेता है। तभी हमारे बुजुर्ग हम लोगों से कहते कि महादेव शिव शंकर अगर नाराज हो जाएंगे तो प्रलय आ जाएगी। ध्यान दें, कि हमारी परम्पराओं के पीछे कितना गहन विज्ञान छिपा हुआ है। ये इस देश का दुर्भाग्य है कि हमारी परम्पराओं को समझने के लिए जिस विज्ञान की आवश्यकता है, वो हमें पढ़ाया नहीं जाता और विज्ञान के नाम पर जो हमें पढ़ाया जा रहा है, उससे हम अपनी परम्पराओं को समझ नहीं सकते है। **जिस संस्कृति की कोख से हमने जन्म लिया है, वो सनातन है, विज्ञान को परम्पराओं का जामा इसलिए पहनाया गया है ताकि वो प्रचलन बन जाए और हम भारतवासी सदा वैज्ञानिक जीवन जीते रहें।**

प्रश्न - **क्या हिन्दू सनातन धर्म में 33 करोड़ देवी- देवता है?**

उत्तर - हमारे पवित्र सनातन घर्म में 33 कोटि देवी- देवताओं का वर्णन है, संस्कृत भाषा में कोटि का अर्थ "प्रकार" भी होता है और "करोड़" भी | तो वेद ज्ञान से रहित मूर्खों ने उसे हिंदी में करोड़ पढना शुरू कर दिया | जबकि **वेदों का तात्पर्य 33 कोटि अर्थात 33 प्रकार के देवी-देवताओं से है (उच्च कोटि, निम्न कोटि इत्यादि शब्द तो आपने सुना ही होगा, जिसका अर्थ भी करोड़ ना होकर प्रकार होता है) ये एक ऐसी भूल है,**

जिसने वेदों में लिखे पूरे अर्थ को ही परिवर्तित कर दिया | कुछ ऐसी ही भूल अनुवादकों से हुई अथवा दुश्मनों द्वारा जानबूझ कर दी गई ताकि, हिन्दुओं को भ्रमित किया जा सके | सिर्फ इतना ही नहीं.... हमारे धार्मिक ग्रंथों में साफ-साफ उल्लेख है कि "**निरंजनो निराकारो एको देवो महेश्वरः**" अर्थात इस ब्रह्माण्ड में सिर्फ एक ही देव हैं जो निरंजन, निराकार महादेव हैं | साथ ही यहाँ एक बात ध्यान में रखने योग्य है कि **सनातन धर्म मानव की उत्पत्ति के साथ ही बना है और प्राकृतिक है इसीलिए हमारे धर्म में प्रकृति के साथ सामंजस्य स्थापित कर जीना बताया गया है और, प्रकृति को भी भगवान की उपाधि दी गयी है ताकि लोग प्रकृति के साथ खिलवाड़ ना करें** |

प्रकृति से ही मनुष्य जाति है ना कि मनुष्य जाति से प्रकृति | कालांतर में यहूदी, ईसाई और इस्लाम जैसे क्रुर पैशाचिक सम्प्रदायों के आ जाने के कारण और, उनके द्वारा प्रकृति का सम्मान नहीं करने के कारण ही आज हम ग्लोबल वार्मिंग और ओजोन परत जैसी समस्याओं से जूझ रहे हैं | अतः प्रकृति को धर्म से जोड़ा जाना और उनकी पूजा करना सर्वथा उपर्युक्त है | यही कारण है कि हमारे धर्म ग्रंथों में सूर्य, चन्द्र, वरुण, वायु,अग्नि को भी देवता माना गया है और इसी प्रकार कुल 33 प्रकार के देवी देवता हैं | इसीलिए, आपलोग बिलकुल भी भ्रम में ना रहें, क्योंकि ब्रह्माण्ड में सिर्फ एक ही देव हैं जो निरंजन निराकार महादेव हैं, शिव है |

प्रश्न - **अवतार कौन होता है?**

उत्तर - अवतार अर्थात अवतरित होना न कि जन्म लेना । जिस प्रकार क्रोध प्रकट होता है वह अवतरित नहीं होता उसे तो अहंकार जन्म देता है परन्तु अवतार का जन्म नहीं होता है जैसे अहंकार और इर्ष्या के संयोग से क्रोध जन्मता है । इस प्रकार अवतार का अर्थ है अवतरण ।

प्रश्न - **तो फिर किसका अवतरण होता है?**

उत्तर - इसका स्पष्ट वर्णन श्रीमद्भगवद्गीता में योगीराज भगवान श्रीकृष्ण करते है कि –

यद्यद्विभूतिमत्सत्त्वं श्रीमदूर्जितमेव वा ।
तत्तदेवावगच्छ त्वं मम तेजोंऽशसम्भवम् ॥ -

श्रीमद्भगवद्गीता १०/ ४१

अर्थात – (यत् तत् विभूतिमत्) जो - जो ऐश्वर्ययुक्त , (सत्वम्) श्रेष्ठ पदार्थ हैं, (श्रीमत् ऊर्जितम् एव) अथवा कान्तियुक्त तथा शक्तियुक्त भी हैं l (तत् तत् एव त्वं अवगच्छ) तुम उसे (मम तेजोंऽश सम्भवम्) मेरे तेज के अंश से उत्पन्न समझों |

स्मरणतः भगवदगीता में मम् मया इत्यादि शब्दों से अभिप्राय परमात्मा के और परमात्मा से समझना चाहिए l इस प्रकार श्लोक का अभिप्राय यह बनता है कि इस संसार में जो - जो ऐश्वर्य , कान्ति और शक्तियुक्त पदार्थ हैं, सब परमात्मा के तेज के एक अंश से ही बने हैं l यह सर्वविदित तथ्य है कि प्रत्येक प्राणी में प्राण (कार्य करने की शक्ति) परमात्मा की ही देन है l ब्रह्मसूत्र में भी कहा है कि " वाकादि इन्द्रियों के कार्यों से (प्राणी में) उस परमात्मा के चिह्न का पता चलता है ." – ब्रह्मसूत्र १-३-१८ तत्पश्चात लिखा है कि 'यह अर्थात प्राण शक्ति उसने इतर (जीवात्मा) की सलाह से कार्य करने के लिए दी हुई है l " अभिप्राय यह है कि प्राणियों के प्राण अर्थात कार्य करने की शक्ति परमात्मा की है और जो विशेष विभूतियुक्त श्रीमत् और ऊर्जितम् पदार्थ अथवा प्राणी होते हैं, उनमे परमात्मा की विशेष शक्ति होती है l ऐसे प्राणी ही अवतार कहाते हैं l

प्रश्न - **आज भारत में बहुत सारे अवतार विद्यमान है, फिर भी राष्ट्र-धर्म का पतन क्यों हो रहा है?**

उत्तर -अवतारवाद की कल्पना करते हुए ऋषियों ने सपने में भी नहीं सोचा होगा कि एक दिन कोई भी यूँ ही मुँह उठाकर स्वयं को परमात्मा का अवतार घोषित कर देगा। अवतारवाद की अवधारणा चाहे जब से चली हो, विगत 100 वर्षों के कालखण्ड में इस अवतारवाद ने कुछ अधिक ही उन्नति कर ली है। एक समय था जबकि शंकराचार्य से लेकर सन्त तुलसी तक सब साधु- महात्मा भक्त बनकर ही आनन्द की अनुभूति कर लेते थे, स्वामी विवेकानन्द, दयानन्द, अरविन्द, रमन तक को भगवान बनने की न सूझी। आज की बात करें तो लगता है भक्त बनने में कोई अधिक सुख शेष नहीं रहा, जिसे देखो भगवान बनने में लगा हुआ है। सम्भवतः पुरानी पीढ़ी के धर्मशील लोगों को स्मरण हो कि सन् 1970 के आस-पास एक पूरा परिवार ही विभिन्न परमात्माओं का अवतार बनकर भक्त मण्डली की सर्वमनोकामनाएँ पूर्ण कर रहे थे। सन् 1954 में एक व्यक्ति ने- 'स्वामी हंस महाराज' नाम रखकर स्वयं को श्री कृष्ण का अवतार घोषित कर दिया। इनकी पत्नी को 'जगत् जननी' की उपाधि मिल गई। इस जगत् -जननी ने चार पुत्रों को जन्म दिया और चारों ही अवतार बन गये। बड़ा पुत्र सत्यपाल- 'बाल भगवान' बनकर 'सतलोक के स्वामी' कहलाये। दूसरे महीपाल 'शंकर के अवतार' बनकर 'भोले भण्डारी' के नाम से प्रसिद्ध हुए। तीसरे धर्मपाल-प्रजापति ब्रह्म के अवतार बनकर भक्त मण्डली में चक्रवर्ती राजा के नाम से विख्यात हुए। सबसे छोटे प्रेमपाल ने स्वयं को 'पूर्ण परमात्मा' घोषित करके देश- विदेशों में मनमानी लीलाएँ कीं। इनकी लीला स्थलियों में इंग्लैण्ड और अमेरिका का नाम विशेष उल्लेखनीय हैं।

भक्त श्री रामशरण दास जी लिखते हैं- 'भारत में लगभग ढ़ाई सौ से ऊपर अवतार हैं और मैं सैकड़ों से भेंट कर चुका हूँ..... जो अपने को भगवान श्री राम का अवतार तो कोई अपने को भगवान श्री कृष्ण का, कोई अपने को भगवान श्री शंकर का, तो कोई स्वयं को भगवती श्री दुर्गा का अवतार बता-बताकर घूम रहे हैं और लूट रहे हैं समाज को स्वयं पर ब्रह्म परमात्मा बनकर।..... हाय-हाय कैसे रक्षा होगी मेरे इस देश की? इस महान् परम पवित्र हिन्दू जाति की इन महान् कालनेमि पाखण्डी नकली अवतारों से?'

आज भगवान श्रीकृष्ण होते तो सबसे पहले रासलीला, दानलीला, मानलीला, वस्त्रहरण लीला आदि के माध्यम से भगवान श्रीकृष्ण को व्याभिचारी, परस्त्रीगामी और छिनरा बताने वाले इन भक्त राक्षसों-अवतारों के सिरों को अपने चक्रसुदर्शन से काटकर भू भार उतारने का उपक्रम करते ! भगवान के नाम को कलंकित व धर्म को अधर्म में परिवर्तित करके रख दिया है इन पापी कथित अवतारों ने |

एक बार मैं घूमने को गोवा गया था तो, पर्यटक तौर पर मैं वहां के एक प्रसिद्द चर्च "सेंट जेवियर चर्च"" भी चला गया कि देखूं तो आखिर वो क्या बला है ? तो, वहां एक ईसाई जो कि वेश-भूषा से कोई फादर टाईप ही लग रहा था ने, मेरे हाथों में कलावा (मौली धागा) देख कर समझ गया कि मैं एक हिन्दू हूँ ! इसीलिए उसने मुझे भी ईसाई बनाने और शीशे में उतारने के लिए मुझसे कहा कि देखो बेटा बुरा मत मानना लेकिन दरअसल सच पूछो तो हिन्दू धर्म और इस्कॉन पर प्रतिबन्ध लगा दिया जाना चाहिए क्योंकि यह श्रीकृष्ण को महिमा मंडित करते है जबकि श्रीकृष्ण ने 16108 विवाह किया थे जिससे सिद्ध होता है कि श्रीकृष्ण एक चरित्रहीन व्यक्ति थे ! इसीलिए यीशु ही तुम्हे सही राह दिखा सकते हैं ! उसकी बातें सुनते ही मेरे तन बदन में आग लग गयी और पर फिर भी मैंने उसे बहुत ही शांत चित्त से उत्तर दिया देखिये पादरी जी मैं आपको अपना फादर तो बोल नहीं सकता क्योंकि मैं कोई सेक्युलर नहीं बल्कि हिन्दू हूँ, और हिन्दुओं का एक ही बाप होता है आप ईसाईयों की तरह हर चर्च में हमारे बाप यानि कि फादर नहीं होते हैं ! और जहाँ तक रह गयी बात भगवान श्रीकृष्ण की शादियाँ की तो, आप सिर्फ मुझे इतना बता दो कि आपके इस कथित रूप से पवित्र ईसाई धर्म में "नन बनते समय" लडकियाँ क्या शपथ लेती है ? मेरे इतना कहते ही वो मेरा मुंह देखने लगा परन्तु कुछ नहीं बोला ! मैंने उससे दो तीन बार वही सवाल पूछे परन्तु वो चुप रहा ! अंततः मैंने उससे कहा कोई बात नहीं पादरी जी मैं बता देता हूँ | **पूरे विश्व में नन बनते समय कुंवारी लडकियाँ यह शपथ लेती है कि "मै जीजस को अपना पति स्वीकार करती हूँ और, उनके अलावा किसी**

अन्य पुरुष से शारीरिक सम्बन्ध नहीं बनाउंगी" . तो कृपया अब आप मुझे बताएँ कि आज से पहले कितने लाख ननों ने जीसस से विवाह किया और भविष्य में भी ना जाने कितनी लडकिया विवाह करेगी ! तो आपकी बात को आप पर ही लागू करते हुए क्यों ना, सबसे पहले पूरे विश्व में ईसाईयों और ईसाई धर्म पर प्रतिबन्ध लगा दिया जाये ? उसके बाद वो पादरी मुझे कुछ नहीं बोला और चुप-चाप सर झुका कर मेरे पास से चला गया !

इन कथित अवतारों, पॉपों ने सामान्य जनता में भगवान श्रीराम, भगवान श्रीकृष्ण, भगवान शिव आदि को लेकर यही भ्रम- पाखण्ड फैलाया हुआ है | आज भी एक सामान्य व्यक्ति से श्रीकृष्ण के विषय में जिज्ञासा कीजिए, आपको वही बात मिलेगी जिसका प्रचार अज्ञानी कथावाचक व पादरी लोग कर चुके है | कभी कभी धूर्त लोग अपनी लम्पटता और व्यभिचार की प्रवृत्ति को छिपाने व उसे उचित सिद्ध करने के लिए भी निर्लज्जता पूर्वक श्रीकृष्ण का उदाहरण प्रस्तुत करते है | त्याग, चरित्र-संयम, विवेक और न्याय की प्रतिमूर्ति भगवान श्रीकृष्ण पर ऐसा आरोप लगाते समय उनकी जिह्वा को पक्षाघात क्यों नहीं हो जाता, यही आश्चर्य है | अब तो हिन्दुओं की इसी अज्ञानता का लाभ उठाकर जाकिर नायक जैसे इस्लामिक प्रचारक भविष्य पुराण के शब्दों को तोड़ मरोड़ कर मोहम्मद को भी अवतार घोषित करने लगे है !

प्रश्न - **इस्लामिक प्रचारक अपने प्रचार में हमारे धर्मग्रन्थ का उल्लेख क्यों करते है? तथा भविष्य पुराण में मोहम्मद का वर्णन किस रूप में मिलता है?**

उत्तर - इस्लाम के प्रचारक हिन्दुओं का धर्म परिवर्तन कराने के लिए तरह तरह के हथकण्डे अपनाते रहते हैं, कभी धर्मनिरपेक्ष बन कर गंगा यमुना संस्कृति का समर्थन करने लगते हैं, कभी इस्लाम और हिन्दू धर्म में समानता सिद्ध करने लगते हैं, लेकिन इनका असली उद्देश्य हिन्दुओं को भ्रमित करके इस्लाम के चंगुल में फँसाना ही होता है, क्योंकि अधिकांश हिन्दू, इस्लाम से अनभिज्ञ और हिन्दू धर्म से उदासीन होते हैं, इस समय इस्लाम के प्रचारकों में जाकिर नायक का नाम सबसे ऊपर है जो एक "सलफ़ी जिहादी" गिरोह से सम्बंधित है, यह गिरोह जिहाद में आतंकवाद को उचित मानता है इस प्रकार से जाकिर नायक ने बड़ी मक्कारी से हिन्दुओं को धोखा देने के लिए यह साबित करने का प्रयास किया है कि भविष्य पुराण में उल्लेखित महामद राक्षस ही मौहम्मद है तथा मुहम्मद का वर्णन एक अवतार के रूप में किया गया है, इसलिए हिन्दू मुहम्मद को एक अवतार मान कर सम्मान दें, और उसके धर्म इस्लाम को स्वीकार कर लें,

हो सकता है कि कुछ मूर्ख जाकिर जाल में फंस कर जाकिर की बात को सही मान बैठे हों, लेकिन **भविष्य पुराण में महामद को राक्षस, धर्म दूषक (Polluter of righteousness) और पिशाच धर्म (demoniac religion) का प्रवर्तक बताया गया है |** यही नहीं भविष्य पुराण में इस्लाम को पिशाच धर्म और मुसलमानों को "लिंगोच्छेदी" यानि लिंग कटवाने वाले कहा गया है, जिसे हिन्दी में कटुए कहा जाता है, भविष्य पुराण के जिस भाग में मुहम्मद के वर्णन है, वह मूल संस्कृत और उसके हिंदी अनुवाद के साथ दिया जा रहा है | ताकि लोगों का यह भ्रम दूर हो जाए की भविष्य पुराण में मुहम्मद को एक अवतार के रूप में प्रस्तुत किया गया है |

लिंड्गच्छेदी शिखाहीनः श्मश्रुधारी सदूषकः। उच्चालापी सर्वभक्षी भविष्यति जनो मम।। 25।।

विना कौलं च पश्वस्तेषां भक्ष्या मताmम। मुसलेनैव संस्कारः कुशैरिव भविष्यति ।।26।।

तस्मान्मुसलवन्तो हि जातयो धर्मदूषकाः। इति पैशाचधर्मश्च भविष्यति मया कृतः ।।27।।

(भविष्य पुराण पर्व 3, खण्ड 3, अध्याय 1, श्लोक 25, 26, 27)

इसका हिंदी अनुवाद: रेगिस्तान की धरती पर एक "पिशाच" जन्म लेगा जिसका नाम महामद (मोहम्मद) होगा, वो एक ऐसे धर्म की नींव रखेगा जिसके कारण मानव जाति त्राहि माम कर उठेगी। वो असुर कुल सभी मानवों को समाप्त करने की चेष्टा करेगा। उस धर्म के लोग अपने लिंग के अग्रभाग को जन्म लेते ही काटेंगे, उनकी शिखा (चोटी) नहीं होगी, वो दाढ़ी रखेंगे पर मूँछ नहीं रखेंगे। वे ऊंचे स्वर में अलापने वाले (शौर मचाने वाले)और सर्वभक्षी होंगे। हलाल (निर्ममता पूर्वक तड़फाकर की गयी पशु हत्या) किये बिना सभी पशु उनके खाने योग्य न होगे। वे अपने को मुसलमान कहेंगे, ये धर्मदूषक मानव जाति को नाश करने की चेष्टा करने वाले पिशाच होगे |

प्रश्न - **हमारे सनातन वैदिक हिंदू धर्म में वसुधैव कुटुंबकम क्यों कहा गया?**

उत्तर - जिस समय हमारे सनातन वैदिक हिंदू धर्म में वसुधैव कुटुंबकम कहा गया था तब सारे संसार में एक ही धर्म था सनातन धर्म | लेकिन आज के युग में जब मुस्लिम, ईसाई, यहूदी आदि धर्म प्रचलित है और ये हमें अपने स्वयं में शामिल नहीं मानते बशर्ते हम उनका धर्म न अपना ले | तो फिर हमारे हिंदू धर्माचार्य व राजनेता वसुधैव कुटुंबकम का राग अलापकर क्यों धर्म को नष्ट करने में लगे हुए है ! देश में वैदिक रीति रिवाजों के अनुसार नियम बनाने चाहिए जैसे ही राज करना चाहिए |

प्रश्न - **सभी धर्म एक जैसे है ? हिंदुओं में यह मिथ्याचार क्यों फैलाया जाता है?**

उत्तर - अज्ञानतावश सभी धर्मो को एक जैसा बताने वाले कथित संत, समाज सुधारक व कथावाचक अपने को महान कहलवाने लाने की आकांक्षा में हिंदुओं के बीच इस मिथ्याचार को फैलाते रहते हे कि सभी रास्ते परमात्मा की ओर जाते है, सभी धर्म एक समान है | लेकिन उन्होंने कभी भी विदेशों से आए मत और उनके ग्रंथ का ध्यान नहीं किया होता, कभी भी कुरान की जिहाद से भरी विषाक्त आयते नहीं पढ़ी होती | बाइबल के ओल्ड टेस्टामेंट के ट्यूटैरोनोमी Deuteronomy अध्याय में अन्य संप्रदायें के साथ कैसे हिंसा होनी चाहिए इस पर क्रमबद्ध पाठ पढ़ा गया है | किसी भी मत, पंथ, सम्प्रदाय को सनातन धर्म के समान मानना सबसे बडा असत्य और अज्ञान है | कम से कम इस भ्रम को तो दूर करना ही होगा अन्यथा वही होता रहेगा, जो पिछले 2600 वर्षो से होता आया है, हम अपने भक्षकों के आगे अपना माथा झुकाते आए है और आगे भी झुकाते रहेंगें | विनाश काले विपरीत पूजा |

प्रश्न - **विनाश काले विपरीत पूजा क्या है?**

उत्तर - हिन्दुओं द्वारा परमात्मा को भूलकर पीर, फकीर, साई की पूजा की जा रही है, पिशाच संस्कृति के राक्षसों को हिंदू मंदिरों व घरों में स्थापित किया जा रहा है, पूजा जा रहा है, फिर भी पूछते हो कि विनाश काले विपरीत पूजा क्या है? कब्र या मजार मरे हुए आदमी की होती है | हिंदू समाज में अगर कोई व्यक्ति मरने वाले के पीछे चार कदम भी रखता है तो उसे घर आ कर स्नान करना पडता है | फिर हम मजार पर चढ़ावा प्रसाद बच्चों को क्यों खिलाते है क्या वह अपवित्र नहीं है ! सभी कब्र उन मुसलमानों की हैं जो हमारे पूर्वजो से लड़ते हुए मारे गए थे, इस हालत में उनकी कब्रों पर जाकर मन्नत मांगना क्या हमारे उन वीर पूर्वजो का अपमान नहीं हैं जिन्होंने अपने धर्म की रक्षा करते हुए खुशी- खुशी अपने प्राणों को बलि वेदी पर समर्पित कर दिया था ?

बहराइच उत्तर प्रदेश में गाजी मियाँ की मजार है जिसको पूजने के लिए देश के कोने कोने से हिंदू आते है | इतिहास का थोडा सा भी जानकार व्यक्ति जानता है कि महमूद गजनवी के उत्तर भारत को बुरी तरह से लूटने बर्बाद करने के बाद सन् 1030 में उसके भांजे सालार गाजी ने भारत को दारूल इस्लाम बनाने के उद्देश्य से भारत पर आक्रमण किया | सिन्ध, पंजाब, हरियाणा को रौंदता हुआ उत्तर प्रदेश के बहराइच तक जा पहुँचा | रास्ते में लाखों हिंदुओं का कत्लेआम किया, लाखो हिंदुओं को इस्लाम में धर्मांतरित किया

और लाखों हिंदू ओरतों के बलात्कार हुए, हजारों मंदिरों- गुरुकुलों का विध्वंस कर दिया गया तथा इस्लाम के जिहाद की आंधी तेज चलने लगी | ऐसे संकट के समय में बहराइच के राजा सुहेल देव ने गाजी मियाँ की सेना का सामना किया जिसमें सालार गाजी मारा गया | सलार गाजी के सेनापति ने वही उसकी कब्र बनवा दी | आज हिंदू उसे अपने कुल देवता मानकर पूजते है | अगर गाजी जिंदा रहता तो वह हिंदुओं का ओर कत्लेआम करता | कुछ ऐसा ही चरित्र अजमेर ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती का है, ख्वाजा मोहम्मद गौरी के साथ भारत आया था, ख्वाजा ने छल कपट से हिंदुओं को मुसलमान बनाया तथा हिंदुओं के मंदिरों को नष्ट कर आया था | ऐसे ही कार्य दिल्ली में पीर निजामुद्दीन ओलिया ने किया था | जिसने जितना ज्यादा हिंदुओं का कत्लेआम किया, हिंदुओं को इस्लाम में धर्मांतरित किया वो उतना बड़ा पीर |

क्या हिन्दुओं के ब्रह्मा, विष्णु, महेश, राम, कृष्ण, दुर्गा अथवा तैंतीस कोटि देवी- देवता शक्तिहीन हो चुकें हैं, क्या उनमें एक भी ऐसा देवता नहीं जिसे हमारे मूर्ख हिन्दू अपना देवता मान सकें | हिन्दुओं के लिए शव(कब्र) पूजा का अर्थ है प्रेत योनि की दुर्गति | किसी भी शव की पूजा चाहे वह मजार का हो या शिर्डी साई का, उसे पूजने वाले की कभी सदगति नहीं हो सकती | कब्रों, पीरों की मजारों से अशुद्ध परमाणु निकलते है, आत्मज्ञानी संत बताते है की यदि कोई मजार सामने पड जाये तो मजार की दिशा में थूंक देने से बुरी शक्तियों का निवारण हो जाता है | हिन्दू समाज को इन मजारों, कब्रों, पीरों की पूजा बन्द करनी चाहिए | उस परमपिता परमेश्वर की पूजा करनी चाहिए जो सभी के दिलों में बसता है |

प्रश्न - **क्या शिर्डी साई की पूजा भी नहीं करनी चाहिए?**
उत्तर - भगवद् गीता में भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं कि भूत प्रेत, मूर्दा (खुला या दफ़नाया हुआ अर्थात् कब्र अथवा समाधि) को सकामभाव से पूजने वाले स्वयं मरने के बाद भूत-प्रेत ही बनते हैं |

यान्ति देवव्रता देवान् पितृन्यान्ति पितृव्रताः भूतानि यान्ति भूतेज्या यान्ति मद्याजिनोऽपिमाम् |

मरे हुए साई बाबा और उनके कब्र की पूजा क्यों की जाती है? मतलब भागवद्गीता में भगवान श्रीकृष्ण के कथन असत्य हैं इसीलिये उसके कथन को नकारा जाता है? **हिन्दुओं भगवान श्रीकृष्ण के वचनों पर ध्यान दो कि भूतो को पूजने वाले भूत बनते है और मुर्दे को पूजने वाले मुर्दे बन कर इस लोक में भटकते रहते है**, कही ऐसा न हो की राम नाम की जगह साईं का नाम लेते लेते तुम भवसागर के कीचड़ में समा जाओ और मरने के बाद प्रेत-प्रेत बनना पड़े | और एक बात, साईं को पूजो या न पूजो पर शाकाहारी परम पावन

भगवान श्रीराम की भार्या सिर्फ माता सीता है, उनके साथ ऐसे मांसाहारी मुसलमान का नाम जोड़कर भगवान और माता को अलग करने का जो पाप कर रहे हो उससे तुम्हे कुछ नहीं मिलने वाला, सिवाय घोर पाप के |

प्रश्न - **कृपया संक्षेप में सिद्ध करें कि साई मुसलमान था? और मांस खाता था?**

उत्तर - सनातन धर्म मे पूजा चित्र की नही, चरित्र की होती है | हम साई के मुसलमान होने व मांस खाने का प्रमाण शिर्डीसाई संस्थान द्वारा प्रमाणित "**साई सतचरित्र**" पुस्तक से ही देते है, देखिए पुस्तक के कुछ अंश:

(1) अध्याय 4,5,7 **अल्लाह मालिक** सदैव उनके(साई) होठो पर रहता था |

(2) अध्याय 38 कभी वे (साई) चावल बनाते और कभी **माँस** मिश्रित चावल (पुलाव) बनाते थे |

(3) अध्याय 7 फकीरो के साथ वे (साई) **आमिष (माँस)** और **मछली** का सेवन भी कर लेते थे |

(4) अध्याय 14 यदि किसी ने उनके (साई) सामने एक पैसा रख दिया तो वे उसे स्वीकार कर के उससे **तम्बाकू** या तेल आदि खरीद लिया करते थे, **वे (साई) प्राय: बीड़ी या चिलम पीते थे** |

(5) अध्याय 11 (साई शामा से कहता है) मै **मस्जिद** मे एक **बकरा हलाल** करने (निर्दयता पूर्वक तडफाकर पशु हत्या करने की विधि को हलाल कहते है |) वाला हूँ उससे पुछो की उसे क्या रुचिकर होगा –बकरे का माँस, नाध याअंडकोष | क्योंकि **बाबा को बकरे का अंडकोष बहुत पसंद था** । शामा यह उत्तर लेकर लौटा कि यदि साई के भोजन पात्र मे एक ग्राम भी **मांस** मिल जाए तो **हाजी** अपने को सौभाग्यशाली समझेगा|

(6) अध्याय 28 फिर मेधा की तरफ देख कर कहने लगे तुम तो एक उच्च कुलीन ब्राह्मण हो और **मै (साई) निम्न जाति का यवन (मुसलमान)** |

(7) अध्याय 23 तब बाबा (साई) ने शामा को **बकरे की बलि** के लिए कहा | .....बाबा(साई) ने काकासाहब से कहा कि **मै स्वयं ही (बकरे की) बलि चढ़ाने का कार्य करूंगा** |

(8)अध्याय 38 **मस्जिद** से बर्तन मंगवाकर वे(साई) "**मौलवी से फातिहा**" (कुरान की आयते) पढने के लिए कहते थे | यह कटु सच जानने के बाद भी क्या आप मंदिरो व घरों में हमारे आदर्श भगवानों के साथ नशे का सेवन करने वाले व मांस खाने वाले साई का चित्र रखना चाहेंगे ?

मांसाहारी साई को वैष्णव रूप भगवान श्रीराम- श्रीकृष्ण या सनातनी देवी देवताओ से जोड़ना गलत है, पाप पूर्ण है |

प्रश्न- **साई को बढ़ावा क्यों दिया जा रहा है ?**

उत्तर- हिन्दुत्व को कमजोर करने के लिए साईं को बढावा दिया जा रहा है और यह इतना क्लिष्ट है कि यह

सामान्य हिन्दू जल्दी समझ नही पाएगा | 1992 के अयोध्या ढाँचा विध्वंस ने पूरी दुनिया को झकझोर कर यह सोचने पर मजबूर कर दिया कि अगर हिन्दू अपने पर आता है तो वह कुछ भी कर सकता है तब कुछ मुस्लिम संगठनो ने हिन्दुत्व को कमजोर करने के लिए एक बहुत ही गहरी साजिश के तहत हिन्दुओं के एक और राम जिसे कुछ मुर्ख हिन्दू साईं राम कहते है अवतरित किया |

अब आपको बताते है कि यह संभव कैसे हुआ यह तो आप भी जानते होंगे कि पूरा फिल्म उद्योग दाउद इब्राहिम और अबू सलेम जैसे मुस्लिम आतंकवादियों के धन व इशारे पर चलता था उसी फिल्म उद्योग के सहयोग से साईं बाबा को साई राम बनाने का घृणित खेल शुरू हुआ |

अब आप लोग स्वयं ही सोच कर बताइए क्या 1992 के पहले भी आप लोगो ने कभी साईं राम लिखा देखा है इस पर आप गहन अध्ययन करके बता सकते है 1992 के पहले आप एक भी जगह साईं राम लिखा नही दिखा सकते 1992 तक साईं केवल एक बाबा थे 1992 के बाद साईं बाबा का साई राम के रूप में प्रकट होना हिन्दुत्व के लिए खतरे की घंटी है | इसलिए जागो हिन्दू जागो और साई को अपने भगवान श्री राम के बराबर मत खडा करो **वर्ना वह दिन दूर नहीं जब यह प्रचारित किया जाएगा कि साईं राम कहते थे मेरे लिए मन्दिर मस्जिद बराबर है इसलिए अयोध्या मे बाबरी मस्जिद ही ठीक है वाराणसी मे ज्ञानव्यापी मस्जिद ही ठीक है !**

प्रश्न - **तो फिर क्यों कहा जाता है कि सबका मालिक एक है?**

उत्तर - अज्ञानता के कारण | जिन लोगों को धर्म, मत, पंथ, सम्प्रदायों के अन्तर का ज्ञान नहीं होता वे ही ऐसी भ्रामक बातें करके धर्म व समाज का पतन करते है |

प्रश्न- **कृपया धर्म, पंथ और सम्प्रदाय में मूलभूत अन्तर स्पस्ट करें !**

उत्तर- धर्म ईश्वर प्रदत्त वह शाश्वत ज्ञान एवं कर्तव्य- अकर्तव्य का मार्गदर्शक विधान है, जो आस्तिक, नास्तिक सभी मनुष्यों के विकास व कल्याण के लिए है | यह एक समतावादी, मानवतावादी, सार्वभौमिक, सार्वकालिक, सत्यस्वरूप, आत्मविवेक आधारित पक्षपात रहित तथा तर्कसंगत दर्शन है जो रंग-भेद, नस्ल भेद, लिंग भेद, भाषा भेद एवं राजनैतिक चिन्तनों की सीमा से परे हैं | इसके लिए सृष्टिकर्ता और मनुष्य के बीच किसी पारदर्शी शरीर, मध्यस्थ, पीर-फकीर, मुल्ला-मौलवी, मसीह, पण्डित आदि की आवश्यकता नहीं है | यह मत- मतान्तरों के पारस्परिक राग- द्वेष, घृणा एवं

व्यक्तिनिष्ठ व कट्टरपन से भी मुक्त है | यह **स्वतंत्र चिन्तनोन्मुखी, ज्ञान- विज्ञान प्रेरक व सत्यनिष्ठ कर्तव्य पालन की आचारसंहिता है, जो सनातन है, जिसे सनातन धर्म, मानव धर्म, वैदिक धर्म या हिन्दू धर्म भी कह सकते है** | इसमें स्वधर्म, मातृधर्म, पितृधर्म, बन्धुधर्म, पतिधर्म, पत्नीधर्म, संतानधर्म, मित्रधर्म, पड़ोसधर्म, समाजधर्म, राष्ट्रधर्म, विश्वधर्म सभी समाविष्ट है | **धर्म का पूजा- पद्धति से कोई सम्बन्ध नहीं है** |

जबकि **सम्प्रदाय अर्थात किसी मनुष्य विशेष द्वारा चलाये गए पंथ (मजहब या रिलीजन) को मानने वाले लोगों का समूह और उनका आचरण हुआ साम्प्रदायिक** | जैसे ईसाई बनने के लिए गुलाब जल होठों से लगाना पडता है, ईसाई बनने के लिए बाइबिल आवश्यक है, ईसा को मानना आवश्यक है | मुसलमान बनने के लिए खतना कराना पडता है, कुरान पर विश्वास लाना पडता है और मौहम्मद को अंतिम पैगम्बर (देवदूत या अवतार) मानना आवश्यक होता है | इसी प्रकार अन्य **पंथों के अपने साम्प्रदायिक आचरण है, ये धर्म नहीं है, ये सब सम्प्रदाय है** | क्योंकि **धर्म का अर्थ साम्प्रदायिक आचरण नहीं बल्कि वह सूत्रात्मकता है जो समाज का पोषण, रक्षण, अभ्युदय भौतिक व आध्यात्मिक दृष्टि से होता है, व्यष्टि और समष्टि के रिश्ते तय होते है तथा जो बुद्धि व चरित्र का विकास करता है | यही राष्ट्र के अतीत को भविष्य से जोडने वाला सेतु भी है** |

धर्म समाज को जोडता है, जबकि सम्प्रदाय (मजहब या रिलीजन) समाज को तोडता है | जब तक कुरान, बाइबल जैसी साम्प्रदायिक पुस्तकों में मानव विभाजक प्रेरणाएँ उपलब्ध है, तब तक संसार में समता की, एकता की बातें दिव्यास्वप्न मात्र है |

प्रश्न - **कुरान में ऐसी कौन सी बातें (आयते) है जो मानवता के लिए खतरनाक और घृणास्पद है? तथा मुसलमानों और गैर मुसलमानों के बीच भेदभाव और द्वेष फैलाती है ?**

उत्तर - कुरान में ऐसी बहुत अधिक आयतें है जो मुसलमानों को अन्य धर्मावलमिबियों से झगड़ा करने का आदेश देती है | **हम मौहम्मद फारूखखान द्वारा हिन्दी में अनुवादित कुरान की प्रसिद्ध 24 आयतें जिनका पोस्टर छापकर बाटने पर दिल्ली के मैट्रोपोलिटन मजिस्ट्रेट श्री जेड. एस. लोहात की अदालत में एफ. आई. आर. नं. 237/83 भा. दं. संहिता धारा 294 ए के अंतर्गत केस चल चुका है, कुरान पढ़ने पर विद्वान न्यायाधीश ने इन आयतों को घातक बताते हुए पोस्टर छापने के दोषित आरोपियों को दोष से मुक्त कर दिया था | कुरान की वह आयते निम्नलिखित है-**

1- "फिर, जब हराम के महीने बीत जाऐं, तो 'मुश्रिको' को जहाँ-कहीं पाओ कत्ल करो, और पकड़ो और उन्हें घेरो और हर घातकी जगह उनकी ताक में बैठो। फिर यदि वे 'तौबा' कर लें 'नमाज' कायम करें और, जकात दें तो उनका मार्ग छोड़ दो। निःसंदेह अल्लाह बड़ा क्षमाशील और दया करने वाला है।" (पा० १०, सूरा. ९, आयत ५,२ख पृ. ३६८)

2- "हे 'ईमान' लाने वालो! 'मुश्रिक' (मूर्तिपूजक) नापाक हैं।" (१०.९.२८ पृ. ३७१)

3- "निःसंदेह 'काफिर तुम्हारे खुले दुश्मन हैं।" (५.४.१०१. पृ. २३९)

4- "हे 'ईमान' लाने वालों! (मुसलमानों) उन 'काफिरों' से लड़ो जो तुम्हारे आस पास हैं, और चाहिए कि वे तुममें सखती पायें।" (११.९.१२३ पृ. ३९१)

5- "जिन लोगों ने हमारी "आयतों" का इन्कार किया, उन्हें हम जल्द अग्नि में झोंक देंगे। जब उनकी खालें पक जाएंगी तो हम उन्हें दूसरी खालों से बदल देंगे ताकि वे यातना का रसास्वादन कर लें। निःसन्देह अल्लाह प्रभुत्वशाली तत्वदर्शी हैं" (५.४.५६ पृ. २३१)

5- "हे 'ईमान' लाने वालों! (मुसलमानों) अपने बापों और भाईयों को अपना मित्र मत बनाओ यदि वे ईमान की अपेक्षा 'कुफ्र' को पसन्द करें। और तुम में से जो कोई उनसे मित्रता का नाता जोड़ेगा, तो ऐसे ही लोग जालिम होंगे" (१०.९.२३ पृ. ३७०)

7- "अल्लाह 'काफिर' लोगों को मार्ग नहीं दिखाता" (१०.९.३७ पृ. ३७४)

8- "हे 'ईमान' लाने वालो! उन्हें (किताब वालों) और काफिरों को अपना मित्र बनाओ। अल्ला से डरते रहो यदि तुम 'ईमान' वाले हो।" (६.५.५७ पृ. २६८)

9- "फिटकारे हुए, (मुनाफिक) जहां कही पाए जाऐंगे पकड़े जाएंगे और बुरी तरह कत्ल किए जाएंगे।" (२२.३३.६१ पृ. ७५९)

10- "(कहा जाऐगा): निश्चय ही तुम और वह जिसे तुम अल्लाह के सिवा पूजते थे 'जहन्नम' का ईधन हो। तुम अवश्य उसके घाट उतरोगे।"

11- 'और उस से बढ़कर जालिम कौन होगा जिसे उसके 'रब' की आयतों के द्वारा चेताया जाये और फिर वह उनसे मुँह फेर ले। निश्चय ही हमें ऐसे अपराधियों से बदला लेना है।" (२१.३२.२२ पृ. ७३६)

12- 'अल्लाह ने तुमसे बहुत सी 'गनीमतों' का वादा किया है जो तुम्हारे हाथ आयेंगी," (२६.४८.२० पृ. ९४३)

13- "तो जो कुछ गनीमत (का माल) तुमने हासिल किया है उसे हलाल व पाक समझ कर खाओ" (१०.८.६९. पृ. ३५९)

14- "हे नबी! 'काफिरों' और 'मुनाफिकों' के साथ जिहाद करो, और उन पर सखती करो और उनका ठिकाना 'जहन्नम' है, और बुरी जगह है जहाँ पहुँचे" (२८.६६.९. पृ. १०५५)

15- 'तो अवश्य हम 'कुफ्र' करने वालों को यातना का मजा चखायेंगे, और अवश्य ही हम उन्हें सबसे बुरा बदला देंगे उस कर्म का जो वे करते थे।" (२४.४१.२७ पृ. ८६५)

16- "यह बदला है अल्लाह के शत्रुओं का ('जहन्नम' की) आग। इसी में उनका सदा का घर है, इसके बदले में कि हमारी 'आयतों' का इन्कार करते थे।" (२४.४१.२८ पृ. ८६५)

17- "निःसंदेह अल्लाह ने 'ईमानवालों' (मुसलमानों) से उनके प्राणों और उनके मालों को इसके बदले में खरीद लिया है कि उनके लिए 'जन्नत' हैः वे अल्लाह के मार्ग में लड़ते हैं तो मारते भी हैं और मारे भी जाते हैं।" (११.९.१११ पृ. ३८८)

18- "अल्लाह ने इन 'मुनाफिक' (कपटाचारी) पुरुषों और मुनाफिक स्त्रियों और काफिरों से 'जहन्नम' की आग का वादा किया है जिसमें वे सदा रहेंगे। यही उन्हें बस है। अल्लाह ने उन्हें लानत की और उनके लिए स्थायी यातना है।" (१०.९.६८ पृ. ३७९)

19- "हे नबी! 'ईमान वालों' (मुसलमानों) को लड़ाई पर उभारो। यदि तुम में बीस जमे रहने वाले होंगे तो वे दो सौ पर प्रभुत्व प्राप्त करेंगे, और यदि तुम में सौ हो तो एक हजार काफिरों पर भारी रहेंगे, क्योंकि वे ऐसे लोग हैं जो समझबूझ नहीं रखते।" (१०.८.६५ पृ. ३५८)

20- "हे 'ईमान' लाने वालों! तुम यहूदियों और ईसाईयों को मित्र न बनाओ। ये आपस में एक दूसरे के मित्र हैं। और जो कोई तुम में से उनको मित्र बनायेगा, वह उन्हीं में से होगा। निःसन्देह अल्लाह जुल्म करने वालों को मार्ग नहीं दिखाता।" (६.५.५१ पृ. २६७)

21- "किताब वाले" जो न अल्लाह पर ईमान लाते हैं न अन्तिम दिन पर, न उसे 'हराम' करते हैं जिसे अल्लाह और उसके रसूल ने हराम ठहराया है, और न सच्चे दीन को अपना 'दीन' बनाते हैं उनकसे लड़ो यहाँ तक कि वे अप्रतिष्ठित (अपमानित) होकर अपने हाथों से 'जिजया' देने लगे।" (१०.९.२९. पृ. ३७२)

22- ".....फिर हमने उनके बीच कियामत के दिन तक के लिये वैमनस्य और द्वेष की आग भड़का दी, और अल्लाह जल्द उन्हें बता देगा जो कुछ वे करते रहे हैं। (६.५.१४ पृ. २६०)

23- "वे चाहते हैं कि जिस तरह से वे काफिर हुए हैं उसी तरह से तुम भी 'काफिर' हो जाओ, फिर तुम एक जैसे हो जाओः तो उनमें से किसी को अपना साथी न बनाना जब तक वे अल्लाह की राह में हिजरत न करें, और यदि वे इससे फिर जावें तो उन्हें जहाँ कहीं पाओं पकड़ों और उनका वध (कत्ल) करो। और उनमें से किसी को साथी और सहायक मत बनाना।" (५.४.८९ पृ. २३७)

24- "उन (काफिरों) से लड़ों! अल्लाह तुम्हारे हाथों उन्हें यातना देगा, और उन्हें रुसवा करेगा और उनके मुकाबले में तुम्हारी सहायता करेगा, और 'ईमान' वालों लोगों के दिल ठंडे करेगा" (१०.९.१४. पृ. ३६९)

उपरोक्त आयतों से स्पष्ट है कि इनमें ईर्ष्या, द्वेष, घृणा, कपट, लड़ाई- झगड़ा, लूटमार और हत्या करने के आदेश मिलते हैं। इन्हीं कारणों से देश व विश्व में मुस्लिमों व गैर मुस्लिमों के बीच दंगे हुआ करते हैं। जब तक कुरान से उपरोक्त तरह के आदेश देने वाली आयतों को निकाला नहीं जाएगा तब तक साम्प्रदायिक दंगों को रोका नहीं जा सकता | इसके अतिरिक्त धर्मान्तरण, अवैध घुसपैठ, बहुविवाह, **जनसंख्या जिहाद** भूमि जिहाद, **भक्ति जिहाद, लव जिहाद** आदि के द्वारा भी सनातन हिन्दू धर्म को नष्ट किया जा रहा है |

प्रश्न- **लव जिहाद किसे कहते है ?**

उत्तर- जब कोई मुसलमान पुरूष किसी गैर मुसलमान लडकी को बहला फुसला कर उसका शील भंग कर उससे शादी करके उसको इस्लाम में दीक्षित कर लेता है, इसी की लव जिहाद कहते है |

प्रश्न- **लव जिहाद कैसे होता है?**

उत्तर- 1. मुस्लिम लडको को मौलवियो व अन्य इस्लामिक संगठन द्वारा हिंदू लडकियो को फँसाने को ना केवल प्रोत्साहित किया जाता हैं अपितु इनाम के तौर पर या कहे घर बसाने के नाम पर बड़ी रकम भी रखी जाती हैं | ये रकम जेहाद के नाम पर, जकात के नाम पर, जजिया के नाम या आपके द्वारा मुस्लिमों से सामान खरीदने हेतु दी गई रकम से ली जाती हैं |

2. कम से कम 4-5 लड़के (ज्यादा भी हो सकते हैं) आपस में मिल के हिंदू लडकियो को चुनते हैं फँसाने के लिए | अपने कायर स्वभाव की वजह से मुसलमान हमेशा समूह में रहते हैं इसलिए उन हिंदू लडकियो को बचाना इतना सरल नहीं होता |

3. ये लड़के गर्ल्स कालेज के बाहर, कंप्यूटर संस्थान के बाहर या अंदर, या कोचिंग संस्थानों के आसपास रहते हैं | कभी-2 लेडिस टेलर की दुकान पर 4-5 लड़के लगे ही रहते हैं | इन्टरनेट पर फेसबुक जैसे सोशल नेटवर्क से लेकर याहू चैट रूम तक हर वो जगह जहा इन्हें हिंदू लड़किया मिल सकती हैं वहा ये लगे रहते हैं घात में | (इसलिए हिन्दू लड़किया किसी अनजान लड़के भले ही हिन्दू हो उसे फेसबुक पर एड न करें).

4. ज्यादातर मौको पर ये लड़के हाथ में कलावा आदि बांधकर खुद को हिंदू ही दिखाने का प्रयास करते हैं | अच्छा मोबाइल सेट, कपडे, व मोटर साइकिल आकर्षण के तौर पर इनका हथियार होते हैं | जिम में घंटो कसरत भी ये लोंग इसी लिए करते हैं ताकि अधिक से अधिक हिंदू लड़किया फसा सके |

5. दक्षिण भारत में तो मुल्ला मौलवी इन लडको के लिए पर्सोनालिटी डेवेलोप्मेंट कोर्से चलवा देते हैं | किस तरह बात की जाए लडकियो से , उन्हें कैसे तोहफे दिए जाए | और किस प्रकार सेक्युलर बन कर उनसे सिर्फ प्यार मोहब्बत की बात कर के खूबसूरत सपने दिखाए जाए |

6. फिल्म उद्योग में बढते खान मेनिया से ये अब और भी सरल हो गया हैं | ज्यादातर हीरो खान होते हैं ऐसी मानसिकता लड़कियों में तेजी से बढ़ रही हैं जो की समाज के लिए बहुत की घातक हैं |
7. अगर हिंदू लड़की निश्चित समय में नहीं फसती तो लव जेहादी अपने किसी दूसरे मित्र को उसके पीछे लगा देता हैं और खुद किसी और के पीछे लग जाता हैं | इसे लड़की फॉरवर्ड करना कहते हैं |
8. जल्द ही ये लड़के भोली भाली हिंदू लडकियो को अपने प्यार के जाल में फसा लेते हैं | उनमे से कई तो शारीरिक सम्बन्ध भी स्थापित कर लेते हैं | ज्यादातर घटनाओ में मुस्लिम लड़के वियाग्रा का इस्तेमाल करते हैं ताकि लड़किया संतुष्ट रहे और उनके खानपान से आई नपुंसकता छुपी रहे |
9. एक बार लड़की से सम्बन्ध स्थापित हो गए तो लड़की को घर से भागने के लिए मनाने में इन्हें देर नहीं लगती | कही बार ये पहले भी मना लेते हैं पर ऐसा कम ही होता हैं |
10. भगा के लड़का लड़की को शादी से पहले इस्लाम कुबूल करने पर मजबूर करा लेता हैं इस्लामी तरीके से शादी के नाम पर और लड़की फस जाती हैं जाल में क्योंकि लड़की को वापस जाने की बात तो दिमाग में आती ही नहीं | यदि शादी से पहले इस्लाम स्वीकार न भी करे तो हिन्दू रीति से विवाह होने के बाद एक बच्चा पैदा हो जाने पर उसे जबरन मुसलमान बना दिया जाता है |
11. लड़की को भगा के इस्लामिक शादी कर ले जाने के बाद लड़की के साथ निम्न में से एक घटना होती हैं
क) लड़का लड़की का पूरी तरह भोग कर के उसे अरब शेखों के हाथों या उसके शहर से चार पाच सौ किलोमीटर दूर या किसी अधेड उम्र के मुसलमान आदमी को जिसको उसकी बदसूरती की वजह से औरत नहीं मिली होती या उसे बस औरतो का शौक होता हैं |यानि लड़की को वैश्यावृत्ती के दल दल में डाल देता हैं|
ख) लड़की को पता चलता हैं के लड़का पहले से ही 2-3 शादिया करे बैठा हैं | और उसे भी नकाब में बंद एक कमरा मिल जाता हैं |
घ) लड़की की किस्मत अच्छी होती हैं और वो उसकी पहली बीवी ही निकलती हैं | इस परिस्थिति में भी लड़की की आजादी छीन जाती है**, वो अपने मनपसंद कपड़े नहीं पहन सकती, बुर्के व नकाब में कैद हो जाती हैं, मांस पकाना और खाना पड़ता है**,बच्चे पैदा करने की मशीन बनना पड़ता है, जो लव जिहादियों का मुख्य लक्ष्य होता है, साथ ही उसे अपने 2-3 सौतनो का इन्तेज़ार करना पड़ता है | और लड़के की गुलाम बन कर रह जाती हैं क्योंकि वो इस्लाम कुबूल कर चुकी होती हैं और इस्लाम में औरत को तलाक का कोई अधिकार नहीं होता | पति जब चाहे उसे तलाक दे सकता है, और यदि वो अपने पति को पुन: अपनाना चाहे तो उसे **हलाला** से गुजरना पडता है |

प्रश्न- **हलाला क्या होता है ?**

उत्तर- मुस्लिम समाज में मुस्लिम महिलाओं का तलाक के बाद ''हलाला'' से गुजरना कितना दर्दनाक और शर्मनांक हादसा है... पति द्वारा 'तलाक' तलाक' 'तलाक' कह देने भर से तुरंत प्रभाव से पति और पत्नी का सम्बंध विच्छेद हो जाना एक आश्चर्य है ... और शौहर को गलती का अहसास होने पर **पति-पत्नी के सम्बंधों को फिर से बहाल करने के मतलब को हलाला ' कहते हैं, जहाँ तलाकशुदा पत्नी एक गेर मर्द के साथ निकाह कर उसके साथ हमबिस्तर हो शारीरिक सम्बन्ध बनाने को मज़बूर होती है.** ...

उसके बाद नये पति से उसको फिर तलाक मिलता है और तब वह पुराने पति से फिर निकाह कर अपनी पुरानी जिंदगी में वापस आती है.....

इसी शर्मनांक और दर्दनांक प्रक्रिया को हलाला कहते हैं जिससे केवल मुस्लिम महिलाओं को गुजरना पड़ता है.... अर्थात पति की खता और पत्नी को सज़ा..... और वह पत्नी जीवन भर उन लम्हों को याद कर सिहर जाती होगी, पीड़ा से गुजारती होगी... और फिर अचानक उस एक रात के '' समझौता पूरक पति से मुलाकात होने पर उसका कैसे सामना करे या फिर पुराने पति की नज़रों में सम्मान से जगह पा सके..

या फिर क्या पुराना पति हलाला के बाद पत्नी के उस एक रात के गैर मर्द के साथ के सम्बंध को अपनी सोच से निकाल पाता होगा ?

एक कथानक देते हैं :-

सलीम: - मियां

रसीदा: - बेग़म

अफजल : - मौलाना हदीस इस मामले मे क्या कहती है ?

माना सलीम की अपनी बीबी रसीदा बेगम से अनबन हो गई और गुस्से में उसने रसीदा बेगम को तलाक दे दिया ; गुस्सा उतरने के बाद उसे अफसोस हुआ ;

दोनो दोबारा साथ रहना चाहते है ;

रसीदा बेग़म का हलाला मौलवी अफजल से कराया जाता है ;

अफजल 2-3 दिन शारीरिक सुख भोगकर रसीदा को तलाक दे देता है ;

10-12 दिन बाद रसीदा का निकाह दोबारा सलीम से हो जाता है ;

7-8 दिन बाद ही रसीदा को पता चलता है कि वो अफजल से गर्भवती हो चुकी है ;

ऐसे में होने वाला बच्चा किसका कहलाऐगा ?

(मुस्लिम उदारता : बच्चे अल्लाह की देन है ।)

सुचना : हलाला के दौरान गर्भ निरोधकों का उपयोग हराम है शरीयत में ।

प्रश्न- **आपने ऊपर जनसंख्या जिहाद का संकेत किया था, कृपया जनसंख्या जिहाद के बारे में कोई कथानक देकर समझाये ।**

उत्तर- एक मोहल्ले में चार हिन्दू थे...

बाहर से एक मुस्लिम रहने आ गया...

चारो हिन्दू के एक एक बच्चे थे...

और दुसरो को नसीहत देते थे कि हम पढ़े लिखे लोग हैं, एक बच्चे के बाद परिवार नियोजन करवा लिया...

बहुत खुश हैं।

मोहल्ले में आये उस एक मुस्लिम ने 9 साल में दो बेगम की हेल्प से 17 बच्चे पैदा कर दिए...

कुल मिला कर हुए 20 आदमी...

17बच्चे +1 बाप+ 2 अम्मी

और तीन में से हर हिन्दू के घर हुए 1 पति+1 पत्नी + 1 बच्चा याने कुल 3 मेंबर एक घर में थे ...

तो तीन हिन्दू घर मिला कर हुए 9 हिन्दू मोहल्ले में...

अब मुसलमान तो कुरान हदीस पढ़ेगा ही... ये तो 100% सत्य है...

उसमें काफिरो को मारने वाली बात लिखी है ये भी सत्य है...

इस्लाम फैलाना ही उनका एकमात्र काम है यह भी सत्य है...

तो 25 साल के बाद रामध्यान (रमजान) के महीने में एक हिन्दू के घर से आरती भजन की आवाज पर

मुस्लिम बच्चे भड़क गए और उस हिन्दू के घर पर हमला कर दिया...

और एक बच्चे को पकड़ कर सारे मुस्लिम पीटने लगे

तो उस बच्चे के माँ बाप सब डंडा लेकर उस मुस्लिम पर कूद पड़े...

थोड़ी देर में दंगा हो गया...

हिन्दुओं के बचाव में बाकी दो हिन्दू भी आये लेकिन कुल संख्या थी 9 हिन्दुओं की...

दूसरी तरफ 20 मुसलमान...

अब जीत किसकी होगी ?

इसमें भी एक दो हिन्दू मुसलमानों को समझाने में लगे थे की देखो भाई हम सब एक है..

हम सब मानव है... हम सेक्युलर (धर्मनिरपेक्ष) हैं, अल्लाह भगवान एक है आदि आदि..

तब तक एक हिन्दू परिवार समाप्त हो गया...

दुसरे को उसके बाद निपटा दिया और तीसरे धर्मनिरपेक्ष ने मौका भांप कर इस्लाम कबूल कर लिया....

ये है जनसंख्या जिहाद..... चुपचाप ताकत बढ़ाना और एक दिन जनसंख्या के दम पर अपनी सल्तनत स्थापित करना... यही अरब के काबा से लेकर अफगानिस्तान के कंधार तक, कंधार से लेकर भारत के कश्मीर, केरल और अब शामली जिले के कैराना कस्बे में हुआ ,, जागो हिन्दुओ ,, जातीवाद को मिटाकर हिन्दू एकता बनाओं, अपनी जनसंख्या बढ़ाओ ,, आने वाली पीढ़ियों को मजबूत बनाओ । वरना फिर पछताने के लिए भी अवसर नहीं मिलेगा । नहीं जागे तो इस्लाम के पैशाचिक हाथों एक- एक कर मारे जाओगे !

प्रश्न- **इस्लामिक हदीसे इस बारे में क्या कहती है ? और क्या किसी मुसलमान ने इस्लाम छोड़कर मानवता का पथ अपनाया है ?**

उत्तर- सत्य का साक्षात्कार करने वाले बहुत सारे व्यक्तियों ने इस्लाम को छोडकर सनातन हिन्दू धर्म अपनाया है, इनमें औरंगजेब की बेटी जैबुन्निसा बेगम और भतीजी ताज बेगम महान कृष्ण भक्त हुई हैं, उनके अलावा रसखान, रहीम, सदना कसाई, हरिहर और बुक्का प्रमुख है | उन्होने कुरान व हदीसे पढ़ी तो उनका मन वितृष्णा से भर गया उन्होंने जब पढ़ा कि :

1 -गैर मुसलमानों पर रौब डालो ,और उनके सर काट डालो.

काफिरों पर हमेशा रौब डालते रहो .और मौक़ा मिलकर सर काट दो .सूरा अनफाल -8 :112

2 -काफिरों को फिरौती लेकर छोड़ दो या क़त्ल कर दो.

"अगर काफिरों से मुकाबला हो, तो उनकी गर्दनें काट देना, उन्हें बुरी तरह कुचल देना. फिर उनको बंधन में जकड लेना. यदि वह फिरौती दे दें तो उनपर अहसान दिखाना, ताकि वह फिर हथियार न उठा सकें. सूरा मुहम्मद -47 :14

3 -गैर मुसलमानों को घात लगा कर धोखे से मार डालना.

'मुशरिक जहां भी मिलें, उनको क़त्ल कर देना, उनकी घात में चुप कर बैठे रहना. जब तक वह मुसलमान नहीं होते सूरा तौबा -9 :5

4 -हरदम लड़ाई की तैयारी में लगे रहो .

"तुम हमेशा अपनी संख्या और ताकत इकट्ठी करते रहो. ताकि लोग तुमसे भयभीत रहें. जिनके बारे में तुम नहीं जानते समझ लो वह भी तुम्हारे दुश्मन ही हैं. अल्लाह की राह में तुम जो भी खर्च करोगे उसका बदला जरुर मिलेगा. सूरा अन फाल-8 :60

5 -लूट का माल हलाल समझ कर खाओ.

"तुम्हें जो भी लूट में माले -गनीमत मिले उसे हलाल समझ कर खाओ, और अपने परिवार को खिलाओ. सूरा अन फाल-8 :69

6 -छोटी बच्ची से भी शादी कर लो.

"अगर तुम्हें कोई ऎसी स्त्री नहीं मिले जो मासिक से निवृत्त हो चुकी हो, तो ऎसी बालिका से शादी कर लो जो अभी छोटी हो और अबतक रजस्वला नही हो. सूरा अत तलाक -65 :4

7 -जो भी औरत कब्जे में आये उससे सम्भोग कर लो.

"जो लौंडी तुम्हारे कब्जे या हिस्से में आये उस से सम्भोग कर लो. यह तुम्हारे लिए वैध है. जिनको तुमने माल देकर खरीदा है, उनके साथ जीवन का आनंद उठाओ. इस से तुम पर कोई गुनाह नहीं होगा.

सूरा अन निसा -4 colonthree इमोटिकॉन और 4 :24

8 -जिसको अपनी माँ मानते हो, उस से भी शादी कर लो.

"इनको तुम अपनी माँ मानते हो, उन से भी शादी कर सकते हो. मान तो वह हैं जिन्होंने तुम्हें जन्म दिया.

सूरा अल मुजादिला 58 :2

9 -पकड़ी गई, लूटी गयीं मजबूर लौंडियाँ तुम्हारे लिए हलाल हैं.

"हमने तुम्हारे लिए वह वह औरते -लौंडियाँ हलाल कर दी हैं, जिनको अल्लाह ने तुम्हें लूट में दिया हो.

सूरा अल अह्जाब -33 :50

10 -बलात्कार की पीड़ित महिला पहले चार गवाह लाये.

"यदि पीड़ित औरत अपने पक्ष में चार गवाह न ला सके तो वह अल्लाह की नजर में झूठ होगा.

सूरा अन नूर - 24 :१३

11 -लूट में मिले माल में पांचवां हिस्सा मुहम्मद का होगा.

"तुम्हें लूट में जो भी माले गनीमत मिले, उसमें पांचवां हिस्सा रसूल का होगा. सूरा अन फाल- 8 :40

12 -इतनी लड़ाई करो कि दुनिया में सिर्फ इस्लाम ही बाकी रहे.

"यहांतक लड़ते रहो ,जब तक दुनिया से सारे धर्मों का नामोनिशान मिट जाये. केवल अल्लाह का धर्म बाक़ी रहे. सूरा अन फाल-8 :39

13 -अवसर आने पर अपने वादे से मुकर जाओ.

"मौक़ा पड़ने पर तुम अपना वादा तोड़ दो, अगर तुमने अल्लाह की कसम तोड़ दी, तो इसका प्रायश्चित यह है कि तुम किसी मोहताज को औसत दर्जे का साधारण सा खाना खिला दो. सूरा अल मायदा -5 :89

14 - इस्लाम छोड़ने की भारी सजा दी जायेगी.

"यदि किसी ने इस्लाम लेने के बाद कुफ्र किया यानी वापस अपना धर्म स्वीकार किया तो उसको भारी यातना दो. सूरा अन नहल -16 :106

15 - जो मुहम्मद का आदर न करे उसे भारी यातना दो

"जो अल्लाह के रसूल की बात न माने, उसका आदर न करे, उसको अपमानजनक यातनाएं दो.

सूरा अलअहजाब -33 :57

16 -मुसलमान अल्लाह के खरीदे हुए हैं.

"अल्लाह ने ईमान वालों के प्राण खरीद रखे हैं, इसलिए वह लड़ाई में क़त्ल करते हैं और क़त्ल होते हैं. अल्लाह ने उनके लिए जन्नत में पक्का वादा किया है. अल्लाह के अलावा कौन है जो ऐसा वादा कर सके.

सूरा अत तौबा -9 :111

17 -जो अल्लाह के लिए युद्ध नहीं करेगा, जहन्नम में जाएगा.

"अल्लाह की राह में युद्ध से रोकना रक्तपात से बढ़कर अपराध है. जो युद्ध से रोकेंगे वह वह जहन्नम में पड़ने वाले हैं और वे उसमे सदैव के लिए रहेंगे. सूरा अल बकरा -2 :217

18 -जो अल्लाह की राह में हिजरत न करे उसे क़त्ल कर दो

जो अल्लाह कि राह में हिजरत न करे और फिर जाए, तो उसे जहां पाओ, पकड़ो, और क़त्ल कर दो.

सूरा अन निसा -4 :89

19 -अपनी औरतों को पीटो.

"अगर तुम्हारी औरतें नहीं मानें तो पहले उनको बिस्तर पर छोड़ दो ,फिर उनको पीटो, और मारो.

सूरा अन निसा - 4 :34

20 -काफिरों के साथ चाल चलो.

"मैं एक चाल चल रहा हूँ तुम काफिरों को कुछ देर के लिए छूट दे दो. ताकि वह धोखे में रहें अत ता.सूरा रिक -86 :16 ,17

21 -अधेड़ औरतें अपने कपडे उतार कर रहें.
"जो औरतें अपनी जवानी के दिन गुजार चुकी हैं और जब उनकी शादी की कोई आशा नहीं हो ,तो अगर वह अपने कपडे उतार कर रख दें तो इसके लिए उन पर कोई गुनाह नहीं होगा. सूरा अन नूर -24 :60

इस्लाम में बहू के साथ बलात्कार करना उचित समझा जाता है! और इस्लामिक कानून (शरिया) के अनुसार यदि एक मुस्लिम स्त्री का बलात्कार उसका ससुर करता है तो ससुर उसका पति माना जायेगा और उस औरत का पति उसका बेटा!

ऐसा ही एक केस उत्तर प्रदेश में 2005 में दुनिया के सामने आया!
पाँच बच्चों की माँ इमराना (28) का उसके ससुर अली मोहम्मद (69) ने कई दिन तक बलात्कार किया!
इमराना ने अपने पति नूर इलाही को इसकी जानकारी दी!
नूर इलाही ने अपने पिता के खिलाफ शरिया पंचायत बुलवाई जिसमें इस्लाम के बड़े-बड़े विद्वानों ने पंच के रूप भागीदारी की! शरिया पंचायत ने इस्लामिक कानूनों के आधार पर फैसला दिया कि इमराना अब से अली मोहम्मद की बीबी घोषित की जाती है और नूर इलाही इमराना का बेटा!
शरिया पंचायत ने आगे फरमान सुनाया कि नूर इलाही को इमराना को तलाक देना होगा, नूर को अपने बेटा स्वीकार करना होगा और इमराना के पेट में अली मोहम्मद का बेटा पल रहा है! जिसे लिहाजन नूर इलाही को अपना भाई मानना पड़ेगा!
शरिया के इस अजीबोगरीब फैसले को मानने से इमराना ने मनाकर दिया और पुलिस थाने में अपने ससुर के खिलाफ बलात्कार का मुकद्दमा दर्ज कराया!
मामला मीडिया में आने के कारण चर्चित हो गया! फतवे के अनुसार इमराना को आदेशित किया गया था कि वह ससुर को अब से अपना पति माने और अपने पति को अपना बेटा समझे!
पूरे देश के मुसलमानों ने फतवे का समर्थन किया। बाद में सेशन कोर्ट में इमराना का ससुर बलात्कार का आरोपी सिद्ध हुआ! कोर्ट के फैसले से मुसलमानों में खासी नाराजगी फैल गई और यह भी जगजाहिर हो गया की भारत का मुसलमान देश की न्यायपालिका को अपनी इस्लामिक शरिया से ऊपर नहीं मानता है!
मुस्लिम लेखकों, पत्रकारों और बुद्धिजीवियों ने भी बलात्कार पीड़ित इमराना का साथ देने के बजाय शरियत का साथ दिया!

सितम्बर 2014 में उत्तर-प्रदेश में एक ऐसा ही मामला फिर से सुर्खियों में आया जब एक ससुर द्वारा बलात्कार पीड़िता बहू शरिया के अनुसार ससुर की पत्नी बना दी गई! और उसका पति उसका बेटा बना दिया गया! इन केसों से सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न दुनिया के सामने अपना जवाब माँगने निकलकर सामने आया वो ये है कि-- **आखिर इस्लाम में बहू का बलात्कार करना अपराध न होकर उपहार क्यूँ है..??**
बलात्कारी को दण्ड देने की अपेक्षा उसे दूसरे की बीबी देकर सम्मानित क्यों किया जाता है..??
आखिर बलात्कार जैसे घिनौने कृत्य से पीड़िता को इंसाफ क्यूँ नहीं मिलता..??

और इस्लाम की इतनी हिंसक, बलात्कार, मानवता विरोधी सच्चाई को जानकर ही इस्लामिक नरपिशाच औरंगजेब की बेटी जैबुन्निसा बेगम व भतीजी ताज बेगम हिंदुत्व की ओर उन्मुख हुई तो भगवान श्रीकृष्ण दिखाई पड़े... खुद ही देखिये कितना सुन्दर पद कहा गया है ..
सुनों दिल जानी मेरे दिल की कहानी तुम, दस्त ही बिकानी बदनामी भी सहूँगी मैं|
देवपूजा ठानी, मैं नमाज हूँ भुलानी, तजे कलमा कुरान सांडे गुनानी गहूंगी मैं |
नन्द के कुमार कुर्बान तेरी सूरत पै, हौं तो मुगलानी हिन्दुआनि ह्वैं रहूंगी मैं||

प्रश्न- **हम हिन्दू अपने बच्चों को विधर्मियों के जाल में फँसने से, लव जिहाद से कैसे बचाये?**
उत्तर- धार्मिक बनिए, अधर्म का नाश करिए, बेटो को राम, कृष्ण, शिवाजी बनाइये, बेटियों को दुर्गा और चंडी बनाइये | साथ ही हमें समझना चाहिए कि **शादी करने की उम्र नहीं होती पर बच्चे पैदा करने की एक उम्र होती है** | विधर्मी लोग अपने बच्चों का विवाह जल्दी कर देते है | लेकिन हम हिन्दू लोग अपनी बेटी के लिए आत्मनिर्भर या नौकरीपेशा लड़का ही ढूढेंगे जबकि वेल सेट होने में समय लगता है क्योंकि 23 या 25 में तो कैरियर शुरू होता है !! इससे लड़कियो के विवाह में देरी हो जाती है, या कुछ लड़कियाँ गृहस्थी की जिम्मेदारी से कुछ ओर वर्षो तक बचने के लिए जानबूझ कर लड़को को रिजेक्ट कर देती है, लेकिन एक दिन वो लड़की लव जेहाद की शिकार हो जाती है क्योंकि **पानी और जवानी अपना रास्ता ढूढ़ ही लेती है !**
हिन्दू लड़के सामाजिक अपयश के भय से अपने प्रेम का प्रदर्शन नहीं करते ना किसी लड़की के घर तक पीछा करने का घटिया काम ! ऐसे हालात में मियो को खुला आसमान मिल जाता है !!
लव जेहाद की शिकार अधिकांश मध्यवर्गीय वर्ग की लडकियाँ ही बनती है, ऊपर से दहेज की समस्या, आज भी कुछ लोग अपने बेटे के विवाह में दहेज मांगते है, जो बहुत ही गलत है, इस दहेज प्रथा को तुरन्त बन्द कर देना चाहिए | सोचिए ! बेटी के मन पर क्या गुजरती होगी अपने बाप की लाचारी को देख के ?

हम हिन्दुओं को अपनी बेटी का विवाह 18 से 20 वर्ष व बेटे का विवाह 21 से 25 वर्ष की उम्र तक कर ही देना चाहिए |

प्रश्न- **इस्लाम में 'अल-तकिया' किसे कहते है और इसका इस्लाम के प्रचार प्रसार में क्या योगदान है ?**
उत्तर- इसने इस्लाम के प्रचार प्रसार में जितना योगदान दिया है उतना इनकी सैंकड़ों हजारों कायरों की सेनायें नहीं कर पायीं .. इस हथियार का नाम है "**अल - तकिया**" । अल-तकिया के अनुसार यदि इस्लाम के प्रचार , प्रसार अथवा बचाव के लिए किसी भी प्रकार का झूठ, धोखा , छल करना पड़े - सब धर्म स्वीकृत है । इस प्रकार अल - तकिया ने मुसलमानों को सदियों से बचाए रखा है ।
इस हथियार "अल - तकिया" के उदाहरण ---
1 -मुहम्मद गौरी ने 17 बार कुरआन की कसम खाई थी कि भारत पर हमला नहीं करेगा, लेकिन हमला किया ।
2 -अलाउद्दीन खिलजी ने चित्तोड़ के राणा रतन सिंह को दोस्ती के बहाने बुलाया फिर क़त्ल कर दिया ।
3 -औरंगजेब ने शिवाजी को दोस्ती के बहाने आगरा बुलाया फिर धोखे से कैद कर लिया ।
4 -औरंगजेब ने कुरआन की कसम खाकर श्री गोविन्द सिंह को आनदपुर से सुरक्षित जाने देने का वादा किया था. फिर हमला किया था.
5 -अफजल खान ने दोस्ती के बहाने शिवाजी की हत्या का प्रयत्न किया था ।

जब गुट में होते हैं या मज़बूत स्थिति में तो अलगाववाद, आतंकवाद और मुस्लिम बर्बरता का साक्षात् प्रतिरूप... परन्तु जैसे ही इनकी स्थिति कमज़ोर पड़ती है या इनकी जनसंख्या कम होती है अथवा सामने वाला हावी होता दिखाई देता है .... यह वैसे ही भाईचारे की बात करने लगते हैं !
आप सोचते हैं की यह सुधर गए या शायद अपनी गलती समझ गए परन्तु ऐसा नहीं होता! यह सब ढोंग होता है आप जैसे ही यह सोच कर पीछे हटाते हैं यह वैसे होई अपने रंग दिखाना शुरू कर देते हैं! मौका मिले तो पीठ में छुरा तक घोप दें ! यह केवल धोखा होता है जो की इनका धर्म गैर मुस्लिमो को देने के लिए कहता है और इस विधि को इस्लाम में अल-तकिया' कहते हैं...

****

वामपंथी प्रोफेसर और मौलाना साहब के साथ हुई घोर असहष्णु वार्तालाप;

आखिर सच्चा मुसलमान कौन, कुरान को फॉलो करने वाला या कुरान ना फॉलो करने वाला

आपने एक कहावत सुनी होगी की 'शत्रु का शत्रु, मित्र होता है' भारत में हिन्दुओँ को अपना दुश्मन समझने वाले केवल मुस्लिम या ईसाई ही नहीं है वरन वामपंथ और विकृत सेक्युलरिज्म भी बहुत बड़ा घाघ है।

वामपंथी हिन्दुओं को बदनाम करने का कोई भी मौका नहीं छोड़ते ये सीधे हिन्दू धर्म पर आक्रमण करते हैं।

अब मुद्दे पर आता हूँ " अभी दो दिन पहले मैं ग्वालियर से गोआ आ रहा था मेरा B1 में 22 नंबर उपर बर्थ था मेरे सामने वाले सीट पर एक घोर वामपंथी हिस्ट्री के प्रोफेसर साहब थे जो दिल्ली से आ रहे थे,

अब झाँसी स्टेशन से एक मौलाना उनकी बेगम और उनका लड़का भी हमारे कोच में बैठ गया।

प्रोफेसर साहब अख़बार पढ़ रहे थे और सरकार को गालियाँ देते जा रहे थे, फिर प्रोफेसर और मौलाना में बातचीत होने लगी, अब दोनों मिलकर हिन्दू नेताओं और सरकार को गालियाँ देने लगे, अब प्रोफेसर ने टॉपिक को डाइवर्ट करते हुए हिन्दू नेताओं से लेकर हिन्दू संतों और हिन्दू संघटनो का मज़ाक उड़ाने लगे कहीं प्रज्ञा ठाकुर तो कहीं स्वामी लक्ष्मणानन्द जी, कहीं हिन्दू गुरुओं का मज़ाक उड़ाते तो कहीं गायों का।

अब इन्ही बातों के बीच में मौलाना साहब इस्लाम और मुसलमानों को अच्छा घोषित करते जाते और हिन्दुओं को बदनाम करते जाते, अब देखते ही देखते प्रोफेसर ने टॉपिक को डाइवर्ट करते हुए हिन्दू और हिन्दू भगवानों, ग्रंथों को मज़ाक उड़ाना शुरू कर दिया।

साइड लोअर बर्थ पर बैठा हुआ लड़का हिन्दुओं का पक्ष रख रहा था, लेकिन ज्ञान और अध्यन की कमी के कारण वह मौलाना और प्रोफेसर की बातों का ज़वाब नही दे पा रहा था।

मैं ऊपर वाली सीट पर लेटा हुआ इनकी बातें सुन रहा था ये माझरा 2 घण्टे चला।

अब मैं भी नीचे उतर चूका था फिर मैंने मौलाना साहब से परिचय लिया तो पता चला की वो लखनऊ से हैं और कोई प्रोग्राम अटेंड करने के लिए मुम्बई जा रहे हैं, फिर मैंने मौलाना साहब से पूछा "क्या कुरआन में लिखी हर बात सही है और मुझे ये बताइये ये फ़तवे किस आधार पर लगाये जाते हैं, क्या फतवों का क़ुरान से कोई संबंध होता है और एक प्रश्न ये सच्चा मुसलमान कौन है।

अब मौलाना साहब को लगा की मैं इस्लाम में इंट्रेस्टेड हूँ सो वो मोहम्मद और इस्लाम की गाथा सुनाने लगे और मुझसे कहने लगे की मियां ये समझ लो की क़ुरान ही दुनियाँ में एक सच्ची क़िताब है ज़ो सातवें आसमान पर बैठकर स्वयं अल्लाह ने उतारी है मुसलमानों के लिए, और रसूल ने क़ुरान के माध्यम से अल्लाह के फ़रमान हम तक पहुँचाये, क़ुरान में लिखा हुआ एक एक वाक्य सत्य है उसमें फ़ेरबदल की कोई गुंजाइस ही नहीं है।

फिर मौलाना साहब बोले की मियाँ हरएक फ़तवा क़ुरान के तालुकात रखता है, फ़तवा लगाने से पहले ये देखा जाता है की रसूल ने क्या कहा है।

और मियाँ आपने कहा की सच्चा मुसलमान कौन है तो मियाँ इतना जान लो की जो मुसलमान अल्लाह और उसके नाज़िल हुए क़ुरान पर सच्चा ईमान रखता है, क़ुरान की हर एक बात मानता है और हर रोज़ पाँच जुम्मे की नमाज़ अदा करता है वही सच्चा मुसलमान है।

अब मैंने कहा की मौलाना साहब क़ुरान के सूरा अत-तौबा (At-Tawbah):5 में लिखा हुआ है की "जब हराम (प्रतिष्ठित) महीने बीत जाएँ तो मुशरिकों को जहाँ कहीं पाओ क़त्ल करो, उन्हें पकड़ो और उन्हें घेरो और हर घात की जगह उनकी ताक में बैठो। फिर यदि वे तौबा कर लें और नमाज़ क़ायम करें और ज़कात दें तो उनका मार्ग छोड़ दो, निश्चय ही अल्लाह बड़ा क्षमाशील, दयावान है।

क़ुरान 8:12 में लिखा हुआ है की "मैं इनकार करनेवालों के दिलों में रोब डाले देता हूँ। तो तुम उनकी गरदनें मारो और उनके पोर-पोर पर चोट लगाओ"

क़ुरान 3:151 में लिखा हुआ है की "तुम घबराओ नहीं हम जल्द तुम्हारा रोब / डर काफ़िरों के दिलों में जमा देंगे"।

क़ुरान के सूरा2 की आयत 244 में लिखा हुआ है

"अल्लाह के मार्ग में युद्ध करो और जान लो कि अल्लाह सब कुछ सुननेवाला, जाननेवाले है"।

अब मौलाना साहब शाँत हो गए थे फिर मैंने कहा मौलाना साहब अगर क़ुरान सच्चा है तो असल में आतंकवादी, ISIS, बोकोहरम, अलक़ायदा वाले ही सच्चे मुसलमान हुए। क्योंकि क़ुरान की आयतें तो ये

isis वाले ही पूरी कर रहे हैं, क़ुरान के अनुसार अल्लाह की राह में क़त्ल करने वाला, मुशरिकों(बहुदेववादी अर्थात हिन्दू) को मारने वाला ही सच्चा मुसलमान है।

जो हिन्दुओँ या धर्म वालों को मार नहीं रहे या उनसे मित्रता कर रहे हैं वो क़ुरान के अनुसार सच्चे मुसलमान नहीं हो सकते।"

फिर मैंने कहा की मौलाना साहब आपके ही क़ुरान का सूरा मुहम्मद (Muhammad) की आयत 4 में कहा गया है की "अतः जब इनकार करनेवालो से तुम्हारी मुठभेड़ हो तो (उनकी) गरदनें मारना है, यहाँ तक कि जब उन्हें अच्छी तरह कुचल दो तो बन्धनों में जकड़ो, फिर बाद में या तो एहसान करो या फ़िदया (अर्थ-दंड) का मामला करो, यहाँ तक कि युद्ध अपने बोझ उतारकर रख दे। यह भली-भाँति समझ लो, यदि अल्लाह चाहे तो स्वयं उनसे निपट ले। किन्तु (उसने या आदेश इसलिए दिया) ताकि तुम्हारी एक-दूसरे की परीक्षा ले। और जो लोग अल्लाह के मार्ग में मारे जाते है उनके कर्म वह कदापि अकारथ न करेगा"

फिर आपके क़ुरान के सूरा मुहम्मद (Muhammad):5 और 6 में कहा है की " अल्लाह और इस्लाम के लिए लड़ने, मरने वालों का अल्लाह मार्गदर्शन करेगा और उन्हें जन्नत में दाख़िल करेगा, जिससे वह उन्हें परिचित करा चुका है।

अब मैंने मौलाना साहब आपके क़ुरान की ये आयतें पढ़कर तो ऐसा लगता है जैसे क़ुरान ही मुसलमानों को आतंकवाद फ़ैलाने के लिए मज़बूर कर रहा है और आतंकी ही सच्चे मुसलमान हैं।

अब मौलाना और प्रोफेसर को छोड़कर बाक़ी सभी ख़ुश हो रहे थे अब मौलाना साहब कुछ ज़वाब देते उससे पहले प्रोफेसर ने मुझ पर अनपढ़ कुपमण्डूक और सांप्रदायिक तमगा लगा दिया,

जैसा की भारत में हमेशा से होता आया है की वामपंथ और सेक्युलरिज़्म इस्लाम और ईसाईयत को बचाने के लिए पहले खड़ी हो जाती है।

अब प्रोफेसर साहब गुस्सें में बोलने लगे " कौन से कॉलेज में पढे हो, साम्प्रदायिक हो, क्या जानते हो इस्लाम के बारे में और क्या जानतें हो, क्या कभी क़ुरान पढ़ा है"

अब मैंने प्रोफेसर साहब से कहा " सर रास्ता बहुत बड़ा है आज मैं मौलाना साहब से इस्लाम सीखकर ही जाऊँगा लेकिन अब आप ये बता दीजिये की भारत की आज़ादी में या आज़ादी के बाद भारत का इतिहास में फ़ेरबदल करने और झूंठा इतिहास लिखने के अलावा भारत में वामपंथ का क्या योगदान रहा है"

अब प्रोफेसर साहब शाँत थे तब मेरे साइड में बैठे हुए एक अंकल ने भी पूछ लिया की सर ज़वाब तो दीजिये लड़का कुछ पूछ रहा है।

अब मैंने प्रोफेसर साहब से फिर पूछा सर आप बताइये आजतक वामपंथ ने भारत को क्या दिया है मात्र ग़द्दारी के अलावा, अब प्रोफेसर साहब ग़ुस्से में भी थे और ख़ामोश भी।

सो मैंने साइड में बैठे हुए लोगों से कहा की भाइयों आजतक वामपंथ ने भारत को क्या क्या दिया है वो प्रोफेसर साहब नहीं बता रहे तो मैं आपको बताता हूँ,

तो सुनों :-

1. वामपंथियों ने भारत की आज़ादी के महानायक सुभाष चन्द्र बोस को जापान में आज़ाद हिन्द फ़ौज की पुनर्स्थापना करने और जापानी प्रधानमंत्री तोजो से अँग्रेजो के विरुद्ध लड़ने के लिए सहायता लेने पर सुभाष चंद्र बोस को " तोजो का कुत्ता" कहा था। क्योंकि वामपंथी हमेशा अंग्रेजों के साथ थे।

2. भारत की आज़ादी से पहले वामपंथ ने मुस्लिम लीग का समर्थन किया और लाखों मासूम हिन्दुओं को जिनमें 80% से ज़्यादा दलित थे " नोआखाली" जैसी आग में झोंक दिया।

3.भारत और चीन के बीच हुए युद्ध में वामपंथियों ने चीन का साथ दिया और भारत के साथ गद्दारी की।

उसके बाद वामपंथियों ने ग़रीब किसानों और आदिवासियों को पूँजीवाद के नाम पर भड़का कर नक्सली बनाया, आज नक्सलवाद के नाम पर हजारों सैनिकों और आदिवासियों के ख़ून का जिम्मेदार वामपंथ ही है।

4.वामपंथ के गढ़ JNU में वर्ष 2000 के मुशायरे में सम्मलित होने वाले दो फ़ौज़ी अफ़सरों को जो कारगिल युद्घ के हीरो थे को अपमानित किया, उस मुशायरे में एक पाकिस्तानी शायर ने भारत का मज़ाक उड़ाते

हुए कुछ शायरियाँ की जिसका उन फ़ौजी अफसरों ने विरोध किया तो उन्हें वामपंथियो द्वारा इतना मारा गया की उन दोनों कारगिल के हीरो को हॉस्पिटल में एडमिट होना पड़ा।

फिर उसी JNU में वहीं 26 जनवरी, 2015 को 'इंटरनेशनल फूड फेस्टिवल' के बहाने वामपंथियों ने कश्मीर को अलग देश दिखाकर उसका अलग स्टाल लगाया।

5. प्रोफेसर साहब याद करो जब 10 अप्रैल, 2010 को जब पूरा देश छत्तीसगढ़ के दंतेवाड़ा में नक्सलिओं के गोलियों से शहीद हुए 76 CRPF जवानों के गम में रो रहा था, उसी समय आपके वामपंथी गढ़ जेएनयू में उन सैनिकों की मौत पर जश्न मनाया जा रहा था। छत्तीसगढ़, झारखण्ड सहित कुछ राज्यों के नक्सल प्रभावित इलाकों में सुरक्षा बलों द्वारा चलाए गए "ऑपरेशन ग्रीन हंट" नामक अभियान का विरोध आपके वामपंथी छात्रों ने पर्चे और पब्लिक मीटिंग के जरिए किया।

6.यही नहीं आपके वामपंथी गढ़ में 30 मार्च, 2011 और 2015 में को भारत-पाकिस्तान के बीच क्रिकेट विश्वकप के मैच में पाकिस्तान जिंदाबाद के नारे लगाए गए और भारत का समर्थन कर रहे छात्रों पर हमले किये गए। आपके गढ़ में आजकल पाकिस्तान प्रेम कुछ ज़्यादा ही है कह्नैया कुमार, उमर ख़ालिद जैसे आपके स्टूडेंट भारत में रहकर पाकिस्तान जिंदाबाद, भारत की बर्बादी तक जँग रहेगी के नारे लगातें हैं और आप ख़ुश होते हो।

7. प्रोफेसर साहब शायद आपको याद होगा की 2014 से पहले तक जेएनयू के कैंपस में इजरायल के किसी व्यक्ति यहां तक कि राजदूत तक का घुसना भी प्रतिबंधित हुआ करता था।

8.प्रोफेसर जी वामपंथ के मुँह से नारी सशक्तिकरण की बात बहुत बेमानी लगती है, ऐसा लगता है जैसे बलात्कारी अफ़रोज़ दामिनी के हक़ में लड़ाई लड़ रहा हो, आप जानते हो हम हिन्दुओं के अनुसार माँ दुर्गा नारी शक्ति आराध्य हैं लेकिन शायद आपको याद होगा की आपके वामपंथी गढ़ जेएनयू में नवरात्रि के दौरान क्या हुआ था। जब पूरा देश माँ दुर्गा की आराधना कर रहा था तब माँ दुर्गा का अपमान करने वाले पर्चे, पोस्टर जारी किये, वामपंथियो ने माँ दुर्गा को न केवल वेश्या कहा बल्कि महिषासुर को महिमामंडित कर महिषासुर शहादत दिवस का आयोजन किया।

अब मेरा समर्थन बड़ चूका था अब लोग मेरी तरफ़ से बोलने लगे, अब उन्हें उनका पक्षधर मिल चूका था लेकिन अब वामपंथी प्रोफेसर एकदम चुप हो चुके थे।

अब मैंने प्रोफेसर साहब से कहा सर सच्चा इतिहास बताइये लोगों को आप हिस्ट्री के प्रोफेसर हैं आपसे बेहतर इतिहास मैं नही जानता, आप जानते होँगे भारत पाकिस्तान विभाजन के समय "जोगेन्द्र नाथ मण्डल" नाम के वामपंथी नेता थे जिनके कहने पर 40 लाख से ज़्यादा हिन्दुओं ने पाकिस्तान का समर्थन किया था जिन हिन्दुओं में 90% से ज़्यादा दलित थे लेकिन पाकिस्तान विभाजन के बाद पूर्वी और पश्चिमी पाकिस्तान में शरीयत कानून लागु करने के लिए और क़ुरान की आयतों को सच शाबित करने के लिए मात्र 5 साल में 30 लाख मुशरिकों (हिन्दुओं) का क़त्ल कर दिया गया जिसमें नोआखाली भी एक था , जो मात्र धार्मिक आधार पर हुए कत्लों में हिटलर द्वारा 60 लाख यहूदियों के बाद दूसरे स्थान पर है।

अब मैंने मौलाना साहब और प्रोफेसर साहब से पूछा की आप ये बताओ की उन 30 लाख हिन्दुओं की मौत का जिम्मेदार कौन है, जोगेन्द्र नाथ मण्डल या मुसलमान या क़ुरान?

अब दोनों के चेहरों पर सन्नाटा छाया हुआ था, तभी मौलाना का लड़का बोलता है की "आप मुसलमानों से चिढ़ते हो, हिन्दुओं ने मुसलमानों पर कितना अत्याचार किया वो आपको नहीं दिखायी देता,

हिन्दुओं ने बाबरी मस्जिद तोड़ दी"

अब मैंने कहा की महोदय आपको पता है "बाबरी मस्जिद से पहले वहाँ राम मंदिर था, जिसे तोड़कर बाबरी मस्ज़िद बनाई गयी, कोर्ट में वो केस चल रहा है सारे प्रूफ़ मिल चूकें हैं की वहाँ राम मंदिर था। बाबरी ढांचे को कोर्ट ने भी माना की यह प्रभु राम का जन्मस्थान था जिसे तोड़ मुग़ल बाबर ने मस्जिद बनाई थी।

फिर मौलाना का लड़का जम्प मारते हुए बोलता है की वहाँ मंदिर नहीं था हमने तो जन्म से वहाँ बाबरी मस्जिद ही देखी, आपके कहने से वहाँ राम मंदिर थोड़े ही हो जायेगा।

अब मैने भी कहा महोदय "आपने देखे तो अपने अब्बु के दादा जी भी नहीं थे तो आपके नहीं देखने से उनका अस्तित्व ख़त्म नहीं जाता। क्यों हो तो उन्ही की पैदाइस या नहीं देखने से नाजायज़ हो गए, आपके देखने नहीं देखने से क्या फ़र्क पड़ता है।

वैसे आपको बता दूँ आपके पैगम्बर वाले मक्का-मदीना में खादिजा, आयेशा, हुसैन, अबू बकर सहित कई साहिबा -इमामों और खलीफाओं के कब्र-मस्जिदें तोड़कर होटल और पब्लिक टॉयलेट बना दी गयी हैं और सुनो यहाँ तक की आपके पैगम्बर का घर जिसमें मोहम्मद का जन्म हुआ उसे भी सऊदी सरकार ने ध्वस्त कर दिया।

ज़नाब आप हज जाते हो तो वहाँ भी तो मुँह खोलों।

आप सभी हिन्दुओं का मज़ाक उड़ाते हुए बोल रहे थे की पोंगा पंडित और ढोंगी हिन्दू बाबा गाय का मूत्र पीते हैं तो आपको बता दूँ की

सहीह-अल-बुख़ारी 8:82:794 में कहा गया है की

"उक्ल नाम के कबीले के कुछ लोग पैगंबर के पास आए और इस्लाम कबूल किया, मदिने का मौसम उन्हे नहीं भाया और वे बीमार पड़ गये, तो पैगंबर ने फरमाया की जाओ और जो यहा पे हमारे उंटों का झुंड है, उनका दूध और मूत्र पीओ"

अब मैं वैज्ञानिक आधार पर बताऊँ तो गाय का दूध और मूत्र ऊँट के दूध और मूत्र से बहुत ज़्यादा गुणकारी होता है।

अब मैने प्रोफेसर से कहा सर आप कह रहे थे की मुसलमानों में औरतों का हिन्दुओं के कंपेयर में बहुत सम्मान है, अब मौलाना साहब तो बताएँगे नहीं तो मैं ही बता देता हूँ की

कुरान (सूरा अल बकरा 2:223) में खुद अल्लहा ने औरत को "खेती" कहते हुए मुसलमानो को मनमर्ज़ी जोतने और बीज बोने का अधिकार दिया।

इसी क़ुरान के अनुसार औरत का बलात्कार होने की स्थिति में 4 गवाह लाने पड़ते हैं जो मर्द हो नही तो 8 औरतों की गवाही माँगी जाती है अन्यथा उस बलात्कार की पीड़ित में कोड़े मारने के आदेश होता है। अब ये देख लीजिये क़ुरान अन-निसा (An-Nisa'):15 - तुम्हारी स्त्रियों में से जो व्यभिचार कर बैठे, उनपर अपने में से चार आदमियों की गवाही लो, फिर यदि वे गवाही दे दें तो उन्हें घरों में बन्द रखो, यहाँ तक कि उनकी मृत्यु आ जाए या अल्लाह उनके लिए कोई रास्ता निकाल दे।

मौलाना साहब आप जानते ही होँगे की पिछले साल सऊदी के ईमाम ने फ़तवा लगाया था जिसमें इन केस ऑफ़ इमरजेंसी पति और पत्नी को काटकर खा सकता है, और कुछ दिनों पहले एक फ़तवा लगा था की जब अपनी ही बेटी 09 साल से बड़ी हो जाये तो उसे "पिता उसे कामुक नज़र से देख सकता है"

अभी कुछ दिनों पहले उत्तर प्रदेश में एक पिता ने अपने बेटे की बहु से सैक्स किया जिसके चलते कुछ मौलानाओं ने क़ुरान का हवाला देते हुए जैसे मोहहमद ने ज़ैद की बीबी ज़ैनब को अपनी मिल्कियत में रखा और उसे अपनी बीबी बनाया ठीक उसी तरह उत्तर प्रदेश् में भी पत्नी को पति की माँ बना दिया।

अब मैंने मौलाना साहब से पूछा सर थोड़ा सा हलाला के बारे में सभी यात्रियों को ज्ञान दीजिए अब मौलाना साहब आग बबूले हुए बेठे थे ग़ुस्से में कुछ नही बोले अब मैंने अपने साइड में बैठे हुए अंकल से कहा की "हलाला" की प्रोसेस में यदि पति 3 बार तलाक़ दे दे तो पत्नी को ग़ैरमर्द से निक़ाह करना पड़ेगा और शारीरिक सम्बन्ध भी बनाने पड़ेंगे फिर जब वह गैर मर्द तलाक़ दे तब ही वो औरत अपने पहले आदमी से निकाह कर सकती है।

अब मौलाना साहब ग़ुस्से में बोले तुम कुछ नही जानते हो क़ुरान के बारे में तुम ऐसे ही अनाप सनाप झूँठी बातेँ बताते जा रहे हो, अब मैंने कहा मौलाना साहब अगर क़ुरान और हदीसें सच हैं तो वास्तव में इस्लाम खतरें में हैं क्योंकि

अबू दाऊद-जिल्द 3 किताब 40 :- "अबू हुरैरा ने कहा कि,रसूल ने कहा था कि यहूदी और ईसाई तो 72 फिरकों में बँट जायेंगे ,लेकिन मेरी उम्मत 73 फिरकों में बँट जाएगी ,और सब आपस में युद्ध करेंगें और मुसलमानों में ऐसी फूट पड़ जाएगी कि वे एक दुसरे की हत्याएं करेंगे ." !

बुखारी -जिल्द 3 किताब 30 के अनुसार :- "अबू हुरैरा ने कहा की ,रसूल ने कहा कि,निश्चय ही एक दिन इस्लाम सारे विश्व से निकल कर कर मदीना में सिमट जायेगा .जैसे एक सांप घूमफिर कर वापिस अपने बिल में घुस जाता है ' नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने तीसरी दफ़ा इरशाद फ़रमाया अरब के नज्द में ज़लज़ले और फ़ित्ने होंगे और वहां से ही शैतान का सींग तुलू (जन्म) होगा जो इस्लाम को निगल जायेगा ।

अब मौलाना का लड़का बोलता है आप मुसलमानों से चिढ़ते हो, मैंने भी कहा भाई जब कोई कौम आतंकवादी याक़ूब और अफ़जल के जनाज़ो में लाखों में इक्कठी होगी और अब्दुल कलाम जी के जनाज़े में नहीं जायेगी तो उस कौम पर भरोषा कैसे किया जाये,

आप चाहते हो की हम मुसलमानों को सिर आँखों पर बताएँ तो बनिए अब्दुल कलाम, अश्फाक उल्ला खान या बनिए संत रसखान, रहीम की तरह तो देखिये हम आपको कितना सम्मान देते हैं, लेकिन याक़ूब और अफ़जल को फॉलो करोगे तो आपको शक की निगाह से ही देखा जायेगा।

तब तक हमारी ट्रेन इटारसी स्टेशन पर पहुँच चुकी थी मैं स्टेशन पर फ्रूट्स खरीदने के लिए उतरा, फिर जब ट्रेन चलने लगी और मैं ट्रेन में चढ़ा तो देखा मौलाना साहब अपनी फैमिली के साथ स्टेशन पर खड़े हैं, मैंने प्रोफेसर से पूछा सर मौलाना साहब कहाँ गये तो साइड में बैठे हुए अंकल बोलते हैं की भाई आज मौलाना साहब का इस्लाम खतरें में आ गया था सो ये कह कर उतर गए की कोई दूसरी ट्रेन पकड़ कर मुम्बई चले जाएंगे।

अब प्रोफेसर साहब अपना कम्बल ओढ़ कर लेट गए लेकिन गोआ तक उन्होंने अपना मुँह नहीं खोला।

दोस्तों मैं इस घटना को आप सभी के साथ इसलिए शेयर कर रहा हूँ क्योंकि आज तक आपने देखा होगा ये वामपंथी, मुस्लिम, ईसाई हमारा हर जगह चाहे कॉलेज हों या स्कूलों या सभाओं या सेमिनारों या ट्रेनों या बसों में हिंदुओं और हमारे भगवानों का मज़ाक उड़ाते मिलते हैं लेकिन हमारे ज्ञान और कॉन्फिडेंस की कमी के कारण हम इनका ज़वाब नही दे पाते।

आप सभी एक बात याद रखो " आपको किसी विषय का कितना नॉलेज है यह मैटर नहीं करता, मैटर करता है की आप अपने उस नॉलेज को कितने कॉन्फिडेंस के साथ प्रोजेक्ट कर रहे हो, सामने वाला आपके कॉन्फिडेंस को देखकर ही संशय में आ जाता है और हिम्मत हार जाता है.

प्रश्न - **ईसाईयत में जेसूट्स की शपथ क्या है?**
उत्तर - जो ईसाई पादरी ईसाईयत के प्रचार के लिए भारत में आते है या यहां पादरी बनाए जाते है तो वो एक गोपनीय शपथ लेते है कि वो अवसर प्राप्त होते ही छल बल द्वारा ईसाईयत में विश्वास न करने वाले सभी मनुष्यों को नष्ट कर देंगे|

प्रश्न - **भगवान श्रीराम, भगवान श्रीकृष्ण,महावीर हनुमान, विक्रमादित्य, विद्यारण्य स्वामी, आचार्य चाणक्य, शिवाजी महाराज, महाराणा प्रताप, गोकुल सिंह की इस पवित्र भूमि को हमेशा जुझना क्यों पड़ रहा है? इसका समाधान क्या है ?**

उत्तर- क्योंकि इस देश को पहले पॉपों के अज्ञान व स्वार्थ ने मारा, फिर बुद्ध के एकांकी अहिंसा के विचारो ने हमारे देश के योद्धाओं के हथियार छीन लिए जब की हमारे योद्धा विश्व में अजेय होते थे | तब गौतम बुद्ध के कारण और अब कालनेमिवादी मोहनदास गांधी के भ्रामक विचारो के कारण इस देश को जुझना पड रहा है |

आजकल हमारे कुछ धर्माचार्यों ने भी धर्म की परिभाषा ही बदल दी है क्योकि ये अपनी अकर्मणयता व नपुँसकता को छिपाने के लिए सर्वधर्म समभाव, वसुधैव कुटुम्बकम, क्षमा वीरस्य भूषणम् और अव्यवहारिक अहिंसा तथा अतिसहिष्णुता जैसे सतयुगी उपदेश देते हैं | बड़ी बेशर्मी के साथ सर्वे भवन्तु सुखिनः हमारा नारा है का उपदेश देते हैं | ऐसे पाखंड़ी झूठे लोगों द्वारा लिखे गये साहित्य व अव्यवहारिक कहानियां सुनाकर हिन्दुओं को भ्रमित करते हैं | बड़े ही आत्मविश्वास के साथ बोलते हैं कि हिन्दू धर्म की रक्षा के लिये भगवान अवतार लेंगे | फिर भगवान के अवतारों की कहानियां सुनाकर अपनी बात को सत्य सिद्ध करते हैं |

इन महानुभावों से प्रश्न है कि इन्हें केवल भगवान के अवतार ही क्यों नजर आते हैं? ये धर्मावलम्बी को क्यों नही समझाते की भगवान ने केवल राक्षसों का संहार करने के लिये ही नही अपितु उन्होने समाज को यह संदेश देने के लिये कि – उनसे प्रेरणा पाकर लोग स्वयं उठ खड़े होना, अपना धर्म समझे और **देवी-देवताओं द्वारा धारण किये गये हथियारों से प्रेरणा पाकर लोग खुद शक्तिशाली बने**
लेकिन कुछ कायरों ने इसका अर्थ यह दे दिया कि जब भी अत्याचारी अत्याचार करेंगे तो तुम्हारी रक्षा के लिये भगवान अवतार लेंगे | इसीलिये कठिनाईयों और खतरों का सामना करने के स्थान पर हिन्दू चमत्कारों की प्रतिक्षा में देवी-देवताओं के सहारे बैठे रहते हैं परन्तु हिन्दुओं को समझ लेना चाहिये की कलियुग में अवतार नही होते | अपनी तथा अपनी सन्तानों के भविष्य और अपने धर्म की रक्षा स्वयं हिन्दुओं को ही अवतार की दायित्व निभाना होगा | भगवान उसी की रक्षा करते हैं, जो खुद अपनी रक्षा का पूरा प्रयास करते हैं **क्यों तुम्हे भगवान के अवतार ही नजर आते हैं हर अवतार में धारण किये गये उनके हथियार क्यों नही दिखते** |

बस जिससे कायरता छिप सके वही चीज़ दिखती है शूरवीरों की बातें नही दिखती | गीता का केवल यही संदेश ही जीवन मे उतारा कि हिन्दू धर्म की रक्षा के लिये भगवान अवतार लेंगे लेकिन यह क्यों दिखा कि भगवान ने स्वयं बोला है कि **केवल ईश्वर अथवा भाग्य के सहारे बैठ कर अकर्मण्यता मतकर | अत्याचारियों से मुकाबला किये बिना तू अत्याचार से बच नही सकता** | इसलिये तू सदैव ईश्वर का स्मरण करते हुये युद्ध भी कर (कर्म कर) | लेकिन हम हिन्दुओं ने भगवान के इस आदेश को नहीं माना और अत्याचारों का मुकाबला करने के स्थान पर अत्याचारों को सहना ही अपना धर्म बना लिया |

इसी अव्यवहारिक अहिंसा और अतिसहनशीलता या अतिसहिष्णुता को हमारी कमजोरी व डरपोकपन समझकर हम पर और अत्याचार किये गये | गीता मे भगवान ऐसी अहिंसा व सहिष्णुता को नपुसंकता कहकर उससे दूर रहने को कहते हैं | सहिष्णुता और अहिंसा का अर्थ यह नहीं कि अपनी गरदने कटवाने की रुपरेखा स्वयं तैयार की जाये और प्रेम पूर्वक गुलाम बन जाया जाये तथा इस अहिंसा और सहिष्णुता के नाम पर अत्याचारियों को अपने ऊपर अत्याचार करने की खुली छूट दे दी जाये |

अत्याचारों और अत्याचारियों की अनदेखी करना हिंसा को बढ़ावा देना है, जो अहिंसा न होकर सबसे बड़ी हिंसा है, पाप है | इसलिये भूल जाओ ऐसी अव्यवहारिक अहिंसा को मिटा दो अतिसहिष्णुता रुपी नपुसंकता को क्योकि आत्मरक्षा और आत्मसम्मान ही सबसे बड़ा धर्म है | यह पृथ्वी कर्म- भूमि है | यहां रहने वाले मनुष्य को अंतिम समय तक धर्म और समाज के प्रति संवेदनशील और कर्मशील रहना चाहिये | यही श्रीमद्भागवद् गीता में श्रीकृष्ण का आदेश है | यही ऋषि- मुनियों की शिक्षा है | यह गाल पिटे वह गाल बढ़ाओ, यह तो सनातन धर्मी वैदिक हिन्दुओं आर्यो की नीति नहीं, अन्यायी से प्रेम अहिंसा यह तो गीता की नीति नहीं |

हे राम बचाओ जो कहता है, वह कायर है स्वयं अपना हत्यारा है |
जो करे वीरता अति साहस वही राम का प्यारा है |

प्रश्न - **ऐसी स्थिति में हम सनातनधर्मी हिन्दुओं को क्या करना चाहिए?**
उत्तर - धर्म रक्षा सबसे व्यापक एवं सबसे अधिक महत्व का कार्य है | धर्म बचेगा तो ही हम, हमारा परिवार, समाज व राष्ट्र बचेगा | धर्म रक्षा के लिए भौतिक शक्ति के साथ- साथ आध्यात्मिक शक्ति भी चाहिये | आसुरी शक्तियों की अनुनय विनय को छोड़कर संगठित होकर धर्मरक्षा की दिशा में कदम न उठाये तो हिन्दुओं का विनाश निश्चित है, **यदि तुम आसुरी शक्तियों को नष्ट नहीं करोगे तो आसुरी शक्तियाँ तुम्हें नष्ट कर देगी, यह प्रकृति का नियम है** |

"धर्मयुद्ध में कोई भी निरपेक्ष नहीं रह सकता..!

जो धर्म के साथ नहीं है, समझो की वह धर्म के विरुद्ध खड़ा है " अज्ञानता, जाति, वर्ग के बन्धनों को मिटाकर धर्मरक्षा की दिशा में कदम उठाओं, पुरुषार्थ करों, संपूर्ण हिंदू समाज में सामाजिक समरसता का भाव जगा कर अपने अपने क्षेत्रों में सामूहिक धर्म साधना की शुरूआत करों | प्रचंड सामर्थ्य की प्राप्ति सामूहिक साधना से ही संभव है, इसके लिए सामूहिक धर्म साधना को हिंदू अपने जीवन व्यवहार में अपना ले तो हिन्दू समाज को धन, धान्य, सुख, समृद्धि की प्राप्ति होकर सद्कामनाएँ पूर्ण होगी तथा सफल व सुरक्षित जीवन की प्राप्ति होगी |

हमें आशा है कि "**सनातन संस्कृति संघ**" द्वारा निर्धारित व "**भारत स्वाभिमान दल**" द्वारा प्रचारित **धर्म शिक्षा व धर्म साधना** के महान यज्ञ में हिन्दू समाज अपनी सक्रिय भूमिका का निर्वाहण करेगा |

- विश्वजीत सिंह अनन्त

आत्म परिष्कार, उज्जवल भविष्य, समृद्ध व सुरक्षित जीवन हेतु सामूहिक धर्म साधना

<> साधना त्रिकाल (सुबह, दोपहर, सायं) की जाये |
<> सुबह सोकर उठते ही बिस्तर पर बैठे- बैठे आठ बार गायत्री मन्त्र का जप करें, आप चाहे किसी भी स्थिति में हो, ईश्वर सर्वसाक्षी है, उससे कुछ छिपता नहीं है |
<> दोपहर की साधना में ठीक बारह बजे बारह बार गायत्री मन्त्र का जप किया जाये |
<> घर, स्कूल, दुकान, कार्यालय, कम्पनी व मन्दिर आदि सार्वजनिक स्थानों पर भी दोपहर की साधना में ठीक बारह बजे बारह बार गायत्री मन्त्र का जप अवश्य किया जायें |
<> जिस प्रकार महामदपंथि समुदाय अरबी देवता इल्लाह की सामूहिक उपासना करते है, उसी प्रकार संसार में सर्वश्रेष्ठ सनातन हिन्दू धर्मावलम्बियों को भी भारतवर्ष के सभी महानगरों, नगरों, ग्रामों, मोहल्लों के मंदिरों में सर्वशक्तिमान परमात्मा की सामूहिक धर्म साधना करनी चाहिए, जिस में संतों की प्रधान भूमिका रहें और जिन ग्राम/ मोहल्ला/कॉलोनी में मंदिर नहीं है, वहाँ ग्राम देवता का स्थान हो, पीपल- वट आदि किसी पवित्र वृक्ष की छाया हो, अथवा किसी सार्वजनिक स्थान पर यह साधना की जाए |
<> सामूहिक धर्म साधना **प्रत्येक रविवार दोपहर 12:00 बजे से 12:30 तक** अवश्य की जायें|
<> प्रत्येक सनातन धर्मी हिंदू का सामूहिक धर्म साधना में सम्मिलित होना अनिवार्य है |
<> 5 वर्ष तक के बच्चे और हिंदू महिलाएँ जो किसी कारणवश सामूहिक साधना कार्यक्रम में उपस्थित नहीं हो सके, वे घर पर ही रविवार को ठीक 12 बजे निर्धारित विधि द्वारा साधना अवश्य करें |

|| एकं सद् विप्रा: बहुधा वदन्ति ||

उस एक परमात्मा को ही विद्वान जन बहुत नामों से जानते है, ब्रह्मा, विष्णु, शिव, दुर्गा, सूर्य, हनुमान, काली, अम्बा, गणेश, राम, कृष्ण, ओ३म आदि उसी एक परमात्मा के नाम है | परमात्मा साकार भी है, निराकार भी है, और इन दोनों से परे भी है | यदि आप साकार के उपासक है तो परमात्मा के किसी भी दिव्य रुप को अपना इष्ट बना लो और उनके आदर्शों पर चलों क्योंकि **पूजा चित्र की नहीं चरित्र की होती है** | दैनिक साधना में अपनी आस्था के अनुसार इष्ट मंत्र, नाम- जप के साथ प्रार्थना- साधना की जायें | लेकिन रविवार की सामूहिक धर्म साधना निर्धारित विधि के अनुसार की जायें |

हमारा इष्ट कोई भी हो, मंदिर में स्थापित प्रतिमा किसी भी देवी- देवता की हो, तो भी हम सब हिंदुओं का महामंत्र गायत्री ही है | गायत्री महामंत्र समूह चेतना के जागरण का मंत्र है, जिस में समूह (हमारे) द्वारा परमात्मा को अन्त:करण में धारण करने की और समूह की (हमारी) बुद्धि को सन्मार्ग की ओर प्रेरित करने की प्रार्थना की गई है | गायत्री छंद में उद् धृत होने के कारण इसे गायत्री मंत्र कहते है, इसका सवित देवता आकाश में स्थित भौतिक पिण्ड सूर्य के लिए नहीं, वरन् विराट परमात्मा के लिए आया है |

आत्म परिष्कार, उज्जवल भविष्य, कामना पूर्ति व सुरक्षित जीवन के लिए तथा समाज में उपस्थित हजारों रावणों- कालनेमियों के विध्वंस के लिए जिस वातावरण और ऊर्जा की आवश्यकता है, सामूहिक धर्म साधना से ही उसका निर्माण होगा |

गायत्री मंत्र कब कितना जपना आवश्यक है :

<> सुबह उठते समय आठ बार आत्मजागरण के लिए !!
<> भोजन के समय एक बार भोजन में अमृत का भाव प्राप्त करने के लिए !!
<> बाहर जाते समय तीन बार समृद्धि, सफलता और सिद्धि के लिए !!
<> मन्दिर में 12 बार प्रभु के गुणों को याद करने व संगठन बल के लिए !!
<> घर पर चौबीस बार अथवा एक सौ आठ बार सुख, शान्ति, सौभाग्य, आरोग्य वैभव व मोक्ष प्राप्ति के लिए !!
<> छींक आए तब गायत्री मंत्र उच्चारण एक बार अमंगल दूर करने के लिए !!
<> सोते समय सात बार सभी प्रकार के विकार दूर करने के लिए !!

|| साधना निर्देश ||

<> सामूहिक धर्म साधना के स्थान को स्वच्छ एवं सुन्दर बनाना चाहियें |
<> बैठने हेतु दरी, चटाई, आदि की व्यवस्था पहले से ही सुनिश्चित कर ली जायें |
<> साफ- स्वच्छ होकर सभी हिंदू साधना स्थल पर दोपहर 11:55 बजे तक अवश्य पहुँच जायें |
<> शान्त एवं पवित्र वातावरण में साधना आरंभ हो सदैव ध्यान रखना चाहियें |
<> सामूहिक धर्म साधना मंदिर में या घर पर हो तो देशी गाय के घी का दीपक जलायें, अन्य सभी स्थानों पर केवल भगवा ध्वज लगाया जायें तथा उसे साक्षी मान कर ही सारे कार्य किए जायें | भगवा ध्वज में तत्वरूप में सनातन धर्म के सभी देवी- देवता, महान व्यक्तित्व, श्रेष्ठ इतिहास, ज्ञान, विज्ञान, परंपरा, संस्कृति, शौर्य, त्याग, तपस्या आदि संपूर्ण महानता छिपी है, जो यज्ञ की ज्वाला का प्रतीक, यज्ञ के समान पवित्र व श्रेष्ठ है तथा भगवद् स्वरुप है, ऐसे प्रेरणा स्रोत भगवा ध्वज ही अधिक श्रेष्ठ है |
<> धर्म साधना में पवित्र संस्कृत मंत्रों व श्लोकों का ही पाठ किया जायें, हिंदी अनुवाद केवल मंत्रों का भावार्थ समझाने के लिए किया गया हैं |
<> प्रार्थना, स्तुति दोनों हाथ जोड़कर भक्ति- भाव पूर्ण होकर की जायें |
<> प्रारम्भ में सिखाने के लिए प्रत्येक क्रिया विधि को अग्रसर समझायें, तत्पश्चात सभी समवेत स्वर में बोले, इस प्रकार साधना करना अच्छा रहेगा |

|| साधना पद्धति ||

|| ओ३म् ध्वनि ||

सभी साधक बैठ जाये तथा ओ३म का तीन बार दीर्घ उच्चारण करें |

|| धर्म ध्वज: दीप स्तुति: ||

दीप ज्योति: परं ज्योति:, दीपज्योतिर्जनार्दन: |
दीपो हरतु में पापं, दीपज्योर्तिनमोऽस्तुते ||
शुभं करोति कल्याणम् , आरोग्यं सुखसम्पदा: |
धर्मस्यशत्रुविनाशाय, आत्मज्योति: नमोऽस्तुते ||
आत्मज्योति: प्रदीप्ताय, ब्रह्मज्योति: नमोऽस्तुते |
ब्रह्मज्योति: प्रदीप्ताय, धर्मज्योति: नमोऽस्तुते ||

|| ईश्वर स्तुतिः ||

ॐ नमः सच्चिदानंदरूपाय नमोऽस्तु परमात्मने |
ज्योतिर्मयस्वरूपाय विश्वमांगल्यमूर्तये ||
ॐ, सत्य, चित् और आनंद स्वरूप उस परमात्मा को जो परम ज्योतिर्मय स्वरुप है,
साथ ही जगत के लिए मंगलकारी मूर्ति स्वरूप है, हम नमस्कार करते हैं |

यं वैदिका मंत्रदृशः पुराणाः इन्द्रं यमं मातरिश्वानमाहुः |
वेदान्तिनोऽनिर्वचनीयमेकम् यं ब्रह्म शब्देन विनिर्दिशन्ति ||
प्राचीन काल के मंत्र दृष्टा ऋषियों ने जिसे इन्द्र, यम, मातरिश्वान् कहकर पुकारा
और जिस एक अनिर्वचनीय को वेदांती ब्रह्म शब्द से निर्देश करते हैं |

गणेशेति केचित् कतिचित् दुर्गा मातेतिभक्त्या |
शैवायमीशं शिव इत्यवोचन् यं वैष्णवा विष्णुरीति स्तुवन्ति |
जिस जगत के स्वामी को कोई गणेश तो कोई दुर्गा माता कहकर भक्ति करते है |
शैव जिसको शिव और वैष्णव जिसको विष्णु कहकर स्तुति करते है |

एको देव: सर्वभूतेषु गूढ: सर्वव्यापी सर्वभूतान्तरात्मा |
कर्माध्यक्ष: सर्वभूताधिवास: साक्षी चेता केवलो निर्गुणश्च ||
एक ही देव सभी पदार्थों में विराजमान है (गूढ़ः = छिपा है , रहा है) वह सर्वव्यापी है और वह अन्तर्यामी है । (सभी जीवों में बसता है) वही कर्मों का अध्यक्ष है वही सब में वास करता है और सबका साक्षी है वही सबकी चेतना है और वह निर्गुण है ।

स: परमात्मा साकार अस्ति निराकार अस्ति च एतस्मात् पर: अपि अस्ति |
यं प्रार्थयन्ते जगदीशितारम् स एक एव प्रभुरद्वितीयः ||
वह परमात्मा साकार है, निराकार है और इन दोनों से परे भी है | वह प्रभु एक ही है और अद्वितीय है,
उस परमात्मा की हम प्रार्थना- स्तुति करते है |

|| गायत्री मन्त्र || (बारह बार सस्वर जप करें)

ॐ भूर्भुव: स्व: तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो न: प्रचोदयात् |
तूने हमें उत्पन्न किया, पालन कर रहा है तू | तुझ से ही पाते प्राण हम, दुखियों के कष्ट हरता है तू ||

तेरा महान तेज है, छाया हुआ सभी स्थान | सृष्टि की वस्तु वस्तु में, तू हो रहा है विद्यमान ||
तेरा ही धरते ध्यान हम, मांगते तेरी दया | ईश्वर हमारी बुद्धि को, श्रेष्ठ मार्ग पर चला ||

|| नमस्कार ||

ॐ नमोऽस्त्वनन्ताय सहस्रमूर्तये, सहस्रपादाक्षिशि रोरुबाहवे।
सहस्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते, सहस्रकोटीयुगधारिणे नमः॥
नमन तुम्हें प्रभु! अनन्तरूपी, अनन्त बाहु शिर- नेत्र धारी। अनन्त हैं नाम तुम एक शाश्वत,
अनन्त ब्रह्माण्ड के तुम प्रभारी| ॐ सत चित् आनन्द स्वरूप परमात्मा को हम नमन करते है |

|| शुभकामनाएँ ||

ॐस्वस्ति प्रजाभ्य: परिपालयन्ताम् न्याय्येन मार्गेण महीं महीशा: |
गो-धर्मात्मा: शुभमस्तु नित्यम् लोका: सर्वेसज्जना: सुखिनो भवन्तु ||
हे परमात्मा प्रजा का कल्याण हो, राज्यकर्ता लोग न्याय के मार्ग से पृथ्वी का पालन करें,
गाय और धर्मात्माओं का सदा भला हो | संसार के सभी सज्जन सुखी हो |
ॐ तेजोऽसि तेजो मयि धेहि |
हे परमात्मा ! आप तेजरूप हैं, हमें तेज (आत्मिक शक्ति) से संपन्न बनाइए |
ॐ वीर्यमसि वीर्यं मयि धेहि |
हे परमात्मा ! आप वीर्यवान हैं, हमें पराक्रमी – साहसी बनाइए |
ॐ बलमसि बलं मयि धेहि |
हे परमात्मा ! आप बलवान हैं, हमें बलशाली बनाइए |
ॐ ओजोऽस्योजो मयि धेहि |
हे परमात्मा ! आप ओजवान हैं, हमें ओजस्वी (शारीरिक बल और आभायुक्त) बनाइए |
ॐ मन्युरसि मन्युं मयि धेहि |
हे परमात्मा ! आप मन्यु रूप (अनीति अत्याचार के प्रति क्रोध करने वाले) हैं, हमें भी अनीति का प्रतिरोध करने की क्षमता दीजिए |
ॐ सहोसि सहो मयि धेहि ||
हे परमात्मा ! आप कठिनाईयों को सहन करने वाले हैं | हमें भी कठिनाइयों में अडिग रहने की, उन पर विजय पाने की शक्ति दीजिए |

सभी एक साथ मिलकर शान्त भाव से सस्वर शांतिपाठ करें

|| शान्तिपाठ ||

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिः, पृथ्वी शान्तिरापः, शान्तिरोषधयः शान्तिः |
वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः, शान्तिर्ब्रह्मशान्तिः, सर्व शान्तिः, शान्तिरेव शान्तिः, सा मा शान्तिरेधि |
ॐ शान्तिः, शान्तिः, शान्तिः ||

द्युलोक, अन्तरिक्ष और पृथ्वी सभी शान्ति एवं कल्याण देने वाले हों | सभी जल, औषधियाँ और वनस्पतियाँ हमें सुख- शान्ति प्रदान करें | सभी देवता, परब्रह्म परमेश्वर और सभी सम्मिलित रूप में शान्ति देने वाले हों | आधिभौतिक, आधिदैविक और आध्यात्मिक सभी प्रकार की शान्ति हो | वह शान्ति हममें सदैव वृद्धि को प्राप्त हो |

शान्तिपाठ के बाद सभी अपने- अपने स्थान पर खड़े हो जाये तथा ढोल-नगाडे बजाये अथवा शंखनाद या घण्टानाद करें, इसके बाद उच्चस्वर में जयघोष बोलकर साधना सम्पन्न की जायें |

|| जयघोष ||

1.जो बोले सो अभय- सनातन धर्म की जय |
2. सनातन धर्म की - जय |
3. सनातन धर्म के देवी देवताओं की - जय |
4. यज्ञ भगवान की - जय |
5. अपने अपने माता पिता की - जय |
6. भारतीय संस्कृति की - जय |
7. पवित्र वेद धर्म शास्त्रों की - जय |
8. धर्म रक्षक अस्त्रों शस्त्रों की - जय |
9. धर्म बचेगा - हम बचेगे |
10. धर्म की रक्षा कौन करेगा- हम करेगे, हम करेगे |
11. जन्म जहाँ पर- हमने पाया |
12. अन्न जहाँ का- हमने खाया |
13. वस्त्र जहाँ के - हमने पहने |
14. ज्ञान जहाँ से- हमने पाया |

15. वह है प्यारा- देश हमारा |

15. देश की रक्षा कौन करेगा- हम करेगे, हम करेगे |

16. शिक्षित बनेगे- संगठित रहेगे |

17. हिन्दू हिन्दू - एक समान |

18. नर और नारी- एक समान |

19. जाति वंश सब- एक समान |

20. धर्म की - जय हो |

21. अधर्म का - नाश हो |

22. प्राणियों में- सद्भावना हो |

23. सनातन धर्म का- कल्याण हो |

24.हर हर - महादेव |

==========

==========

कहो गर्व से हम हिन्दू है | माँ सीता-शबरी की संतान है |
रविदास-शंकराचार्य जी संत हमारे | वाल्मीकि-व्यास जी का ज्ञान है |
कहो गर्व से हम हिन्दू है | चाणक्य-समर्थ रामदास जी गुरु हमारे है |
श्रीराम-कृष्ण का रक्त है हममें | गोकुल-शिवाजी हमारे गौरव है |
महाराणा-भामाशाह के कुल में जन्में | केवट-विक्रमादित्य की सन्तान है |
मानव जाति हमारी, पवित्र सनातन धर्म हमारा है | कहो गर्व से हम हिन्दू है |
नहीं रूकना, नहीं थकना, लक्ष्य प्राप्ति हेतु सतत कर्म करना, यही तो मन्त्र है अपना |
मम दीक्षा धर्म रक्षा, मम मन्त्र समानता | कहो गर्व से हम हिन्दू है ||

==========

==========

|| एकात्मकता स्तोत्र ||

ॐ नमः सच्चिदानंदरूपाय परमात्मने
ज्योतिर्मयस्वरूपाय विश्वमांगल्यमूर्तये॥१॥

ॐ, सत्य, चित और आनंद रुप, प्रकाश स्वरुप, विश्व कल्याण के धाम परमात्मा को नमन ॥१॥

प्रकृतिः पंचभूतानि ग्रहलोकस्वरास्तथा
दिशः कालश्च सर्वेषां सदा कुर्वंतु मंगलम्॥२॥

प्रकृति, पञ्च भूत (पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश), ग्रह (मंगल, बुध, शुक्र आदि), संगीत के सातों सुर, दसों दिशाएं और भूत, वर्तमान और भविष्य समस्त कालों में सदैव कल्याणकारी हों ॥२॥

रत्नाकराधौतपदां हिमालयकिरीटिनीम्
ब्रह्मराजर्षिरत्नाढ्याम् वन्दे भारतमातरम् ॥३॥

रत्नों का भंडार, समुद्र जिसके चरण पखारता है, (पर्वतराज) हिमालय जिसका मुकुट है, ब्रह्मर्षि और राजर्षि जिसके प्रतिष्ठित पुत्र हैं, उस भारत माता को नमन ॥३॥

महेंद्रो मलयः सह्यो देवतात्मा हिमालयः
ध्येयो रैवतको विन्ध्यो गिरिश्चारावलिस्तथा ॥४॥

पवित्र पर्वत श्रेणियों: महेंद्र गिरि, मलय गिरि , सह्याद्रि, देव स्वरुप हिमालय, रैवतक, विन्ध्याचल और अरावली को हम सर्वदा ह्रदय में धारण करें ॥४॥

गंगा सरस्वती सिंधु ब्रह्मपुत्राश्च गण्डकी
कावेरी यमुना रेवा कृष्णा गोदा महानदी ॥५॥

पवित्र नदियों: गंगा, सरस्वती, सिंधु, ब्रह्मपुत्र, गण्डकी, कावेरी, यमुना, रेवा (नर्मदा), कृष्णा, गोदावरी और महानदी को हम सर्वदा ह्रदय में धारण करें ॥५॥

अयोध्या मथुरा माया काशी कांची अवंतिका
वैशाली द्वारका ध्येया पुरी तक्षशिला गया ॥६॥

पवित्र तीर्थ स्थलों: अयोध्या, मथुरा, माया, काशी, कांची, अवन्तिका, वैशाली, द्वारिका, पुरी, तक्षशिला, गया ॥६॥

प्रयागः पाटलीपुत्रं विजयानगरं महत्
इंद्रप्रस्थं सोमनाथस्तथामृतसरः प्रियम्॥७॥

प्रयाग, पाटलिपुत्र, विजयनगर, इंद्रप्रस्थ, सोमनाथ और प्रिय अमृतसर को हम सर्वदा हृदय में धारण करें ॥७॥

चतुर्वेदाः पुराणानि सर्वोपनिषदस्तथा
रामायणं भारतं च गीता षड्दर्शनानि च ॥८॥

श्रेष्ठ धार्मिक पुस्तकों: चार वेद, पुराणो, सभी उपनिषद, रामायण, महाभारत, गीता, छह दर्शन ॥८॥

सनातनऋतंभरा,सत्यार्थप्रकाश, गुरुग्रन्थः सतांगिरः
एष ज्ञाननिधिः श्रेष्ठः श्रद्धेयो हृदि सर्वदा॥९॥

सनातन धर्म का सत्यग्रन्थ सनातन ऋतंभरा, ज्ञान के भण्डार सत्यार्थ प्रकाश और संतों की वाणी गुरु ग्रंथ साहिब जैसे श्रेष्ठ, वन्दनीय ग्रंथों को हम सर्वदा हृदय में धारण करें ॥९॥

अरुन्धत्यनसूय च सावित्री जानकी सती
द्रौपदी कन्नगे गार्गी मीरा दुर्गावती तथा ॥१०॥

अरुंधती, अनुसूया, सावित्री, जानकी, सती, द्रौपदी, कण्णगी, गार्गी, मीरा, दुर्गावती॥१०॥

लक्ष्मी अहल्या चन्नम्मा रुद्रमाम्बा सुविक्रमा
निवेदिता सारदा च प्रणम्य मातृ देवताः ॥११॥

लक्ष्मीबाई, अहिल्या बाई होल्कर, कलेड़ी की चनम्मा और कित्तूर की चनम्मा, रुद्रमाम्बा, निवेदिता और शारदादेवी जैसी मातृ देवियों को प्रणाम है ॥११॥

श्री रामो भरतः कृष्णो भीष्मो धर्मस्तथार्जुनः
मार्कंडेयो हरिश्चन्द्र प्रह्लादो नारदो ध्रुवः ॥१२॥

श्रीराम, भरत, कृष्ण, भीष्म, धर्मराज युधिष्ठिर, अर्जुन, मार्कंडेय, सत्यवादी हरिश्चंद्र, प्रहलाद, नारद, ध्रुव ॥१२॥

हनुमान् जनको व्यासो वसिष्ठश्च शुको बलिः
दधीचि विश्वकर्माणौ पृथु वाल्मीकि भार्गवः ॥१३॥

हनुमान, जनक, व्यास, वशिष्ठ, शुकदेव, बलि, दधीचि, विश्वकर्मा, राजा पृथु, वाल्मीकि, भृगुवंशी परशुराम ॥१३॥

भगीरथश्चैकलव्यो मनुर्धन्वन्तरिस्तथा
शिबिश्च रन्तिदेवश्च पुराणोद्गीतकीर्तयः ॥१४॥

भगीरथ, एकलव्य, मनु, धनवंतरि और रंतिदेव, पुराणों में जिनकी महिमा का गुणगान किया गया है ॥१४॥

विद्यारण्य प्राणनाथ गोरक्षः पाणिनिश्च पतंजलिः
शंकरो मध्व निंबार्कौ श्री रामानुज वल्लभौ ॥१५॥

विद्यारण्य स्वामी, संत प्राणनाथ, महान योगी गोरखनाथ, पाणिनी (महान वैयाकरण), पातंजलि (योगसूत्र के लेखक), आदि शंकराचार्य (महान हिंदू दार्शनिक), मध्वाचार्य, निम्बार्काचार्य, श्रीरामानुज, वल्लभाचार्य॥१५॥

झूलेलालोथ चैतन्यः तिरुवल्लुवरस्तथा
नायन्मारालवाराश्च कंबश्च बसवेश्वरः ॥१६॥

झूलेलाल (सिंधी हिंदुओं के महान रक्षक), चैतन्य महाप्रभु, तिरुवल्लुवर, नयन्नार, अल्वर, कंबन (तमिल के रामायण कवि), बसवेश्वर ॥१६॥

देवलो रविदासश्च कबीरो गुरु नानकः
नरसी तुलसीदासो दशमेषो दृढव्रतः ॥१७॥

महर्षि देवल, संत रविदास, कबीर, गुरु नानक, भक्त नरसी मेहता, तुलसीदास, दृढनिश्चयी दशम गुरु गोविन्द सिंह ॥१७॥

श्रीमच्छङ्करदेवश्च बंधू सायन माधवौ
ज्ञानेश्वरस्तुकाराम रामदासः पुरन्दरः ॥१८॥

शंकरदेव (असम के वैष्णव संत), भाई सायण और माधवाचार्य , संत ज्ञानेश्वर, तुकाराम, समर्थ गुरु रामदास, पुरंदरदास॥१८॥

बिरसा सहजानन्दो रमानन्दस्तथा महान्
वितरन्तु सदैवैते दैवीं षड्गुणसंपदम् ॥१९॥

बिरसा (बिहार), स्वामी सहजानंद और स्वामी रामानंद (मध्ययुगीन काल में सनातन धर्म के रक्षक) ये महापुरुष हममें दैवी गुणों का प्रसार करें ॥१९॥

भरतर्षिः कालिदासः श्रीभोजो जकनस्तथा
सूरदासस्त्यागराजो रसखानश्च सत्कविः ॥२०॥

भरत मुनि (जड़भरत), कवि कालिदास, श्री भोजराज, जनक, भक्त सूरदास, भक्त त्यागराज, और सत्कवि रसखान ॥२०॥

रविवर्मा भातखंडे भाग्यचन्द्रः स भोपतिः
कलावंतश्च विख्याताः स्मरणीया निरंतरम् ॥२१॥

(प्रसिद्ध चित्रकार) रवि वर्मा , (महान संगीतकार) भातखंड और (मणिपुर के राजा) भाग्यचन्द्र जैसे कलाकार नित्य स्मरणीय हैं ॥२१॥

अगस्त्यः कंबु कौन्डिण्यौ राजेन्द्रश्चोल वंशजः
छत्रसालः पुश्य मित्रश्च खारवेलः सुनीतिमान् ॥२२॥

अगस्त्य, कम्बु, कौण्डिन्य, चोल वंश के राजा राजेंद्र, राजा छत्रसाल, पुष्यमित्र (शुंग राजवंश के संस्थापक), कलिंग के नीतिज्ञ राजा खारवेल॥२२॥

चाणक्य चन्द्रगुप्तौ च विक्रमः शालिवाहनः
समुद्रगुप्तः श्रीहर्षः शैलेंद्रो बप्परावलः ॥२३॥

चाणक्य और चंद्रगुप्त, विक्रमादित्य, शालिवाहन, समुद्रगुप्त, हर्षवर्धन, राजा शैलेंद्र, बप्पा रावल ॥२३॥

लाचिद्भास्कर वर्मा च यशोधर्मा च हूणजित्
श्रीकृष्णदेवरायश्च ललितादित्य उद्बलः ॥२४॥

लिच्छवी राजा भास्करवर्मा , हूणों के विजेता यशोधर्म, श्री कृष्णदेव राय (विजयनगर साम्राज्य के महान राजा), ललितादित्य (एक महान योद्धा) ॥२४॥

मुसुनूरिनायकौ तौ प्रतापः शिव भूपतिः
रणजितसिंह इत्येते वीरा विख्यात विक्रमाः ॥२५॥

मुसून अरि नायक (प्रोलय नायक, कप्पा नायक), महाराणा प्रताप, छत्रपति शिवाजी, और महाराजा रणजीत सिंह आदि विख्यात वीर (हममें बल का संचार करें)॥२५॥

वैज्ञानिकाश्च कपिलः कणादः शुश्रुतस्तथा
चरको भास्कराचार्यो वराहमिहिर सुधीः ॥२६॥

वैज्ञानिकों में - कपिल, कणाद, सुश्रुत (महान सर्जन), चरक, भास्कराचार्य, बुद्धिमान वराहमिहिर ॥२६॥

नागार्जुन भरद्वाज आर्यभट्टो वसुर्बुधः
ध्येयो वेंकट रामश्च विज्ञा रामानुजायः ॥२७॥

नागार्जुन, भारद्वाज, आर्य भट, बुद्धिमान जगदीश चन्द्र बसु, सी वी रमन और रामानुजन ध्यायनीय हैं. ॥२७॥

रामकृष्णो दयानंदो बंकिमचन्द्रो मेधातिथिः
रामतीर्थोऽरविंदश्च विवेकानंद उद्यशः ॥२८॥

श्री रामकृष्ण परमहंस, स्वामी दयानंद, बंकिम चन्द्र चट्टोपाध्याय, मेधातिथि, स्वामी रामतीर्थ, महर्षि अरविंद, स्वामी विवेकानंद जैसे कर्मयोगी॥२८॥

कूका वैरागी तिलको राजनारायण राद्दताः
रमणो मालवीयश्च श्री सुब्रमण्य भारती ॥२९॥

क्रान्तिकारी संत रामसिंह कूका, वीर बन्दा बैरागी, बाल गंगाधर तिलक, राजनारायण बोस जैसे समाज सुधारक, महर्षि रमण, महामना मदन मोहन मालवीय, तमिल कवि सुब्रह्मण्यम भारती ॥२९॥

गोकुलसिह: सुभाषः प्रणवानंदः विनायकः
महेन्द्रो बिरसाश्च वर्मा नाना नभगोपाल मित्रा: ॥३०॥

वीर गोकुल सिंह, नेताजी सुभाष चन्द्र बोस, स्वामी प्रणवानंद, महान क्रांतिकारी विनायक दामोदर सावरकर, राजा महेन्द्र प्रताप सिंह, वीर बिरसा मुण्डा, श्यामजी कृष्ण वर्मा, पेशवा नाना साहेब, नभगोपाल मित्रा जैसे क्रांति का श्रीगणेश करने वाले ॥३०॥

फड़के बनर्जी केशवो माधवस्तथा
स्मरणीय सदैवैते नवचैतन्यदायकाः ॥३१॥

वासुदेव बलवन्त फड़के, सुरेन्द्र नाथ बनर्जी, डॉ. हेडगेवार और माधवसदाशिव गोलवलकर नवीन चेतना का संचार करने वाले एवं नित्य स्मरणीय हैं॥३१॥

अनुक्ता ये भक्ताः प्रभुचरण संसक्तहृदयाः
अविज्ञाता वीरा अधिसमरमुद्ध्वस्तरि पवः
समाजोद्धर्तारः सुहितकर विज्ञान निपुणाः
नमस्तेभ्यो भूयात्सकल सुजनेभ्यः प्रतिदिनम् ॥ ३२॥

भारत माता के चरणों से प्रेम करने वाले, युद्ध में मातृभूमि के लिए शत्रुओं के स्वप्नों को ध्वस्त करने वाले अज्ञात वीर, महान समाज सुधारकों और पर्यवेक्षण के माध्यम से समाज कल्याण करने वाले कुशल वैज्ञानिक एवं समस्त सज्जनों को नमस्कार है ॥ ३२॥

इदमेकात्मता स्तोत्रं श्रद्धया यः सदा पठेत्
स राष्ट्रधर्म निष्ठावानखंडं भारतं स्मरेत् ॥३३॥

जो इस एकात्मता स्त्रोत का नित्य श्रद्धा के साथ पाठ करता है वह राष्ट्रधर्म में निष्ठावान होकर अखंड भारत का स्मरण करता है ॥३३॥

जो बोले सो अभय सनातन धर्म की जय

|| समय के शब्दों में भागवद् गीता का सन्देश ||

करुक्षेत्र की रणभूमि में नारायण को सुनने के लिए मानो मैं भी रुक सा गया, मैं तो कभी ठहरता ही नहीं, आज मैं समय नहीं हूँ क्योकि मैं तो किसी के लिए ठहरता ही नहीं हूँ ! परंतु आज मैं किसी शिष्य की भाँती हाथ जोड़े रणभूमि करुक्षेत्र के मैदान में खड़ा हुआ नारायण की बाते सुन रहा हूँ !

अर्जुन तो मात्र माध्यम है भगवान कृष्ण तो बात मुझसे कर रहे है क्योकि मैं बीता हुआ कल भी हूँ आज भी हूँ और आने वाला कल भी हूँ, अर्जुन के प्रश्न केवल अर्जुन के नहीं थे वो प्रश्न पिछले युग में भी प्रासंगिक थे इस युग के लिए भी प्रासंगिक है और आने वाले युगों में भी प्रासंगिक रहेंगे जब तक मैं हूँ तब तक मानव जातियो को इन प्रश्नो का सामना करना पड़ता रहेगा इसलिए कोई ये न समझे की ये प्रश्न केवल द्रोण शिष्य अर्जुन ही कर रहा है उसके कंठ से मैं भी बोल रहा हूँ क्योकि हर दिन हर युग के लिए उसका अपना एक करुक्षेत्र होता है अतः हे मानव तू नारायण से अपने प्रश्नो के उत्तर सुन सदैव से तुझे करते चले आ रहे है कर्म करो तुम ज्ञान से श्रेष्ठ ज्ञान है कर्म, कर्मयोग ही धर्म है, धर्मयोग ही कर्म ! पाप के सागर को केवल ज्ञान की नौका ही पार कर सकती है ! तेरा कर्म ही तेरा धर्म है किन्तु यदि तेरा कर्म यदि तेरे हित के लिए है वो कर्म पाप की ओर ले जाने वाला कर्म है इसलिए अपने से मुक्त होकर समाज के कल्याण के लिए कर्म कर यही मोक्ष मार्ग है यदि समाज सुखी नहीं तो व्यक्ति भी सुखी नहीं रह सकता ! यदि समाज के आँखों में आँसू है तो तेरी आँख भी सुखी नहीं रह सकती ! यदि वृक्ष कट जाएंगे तो तुझे फल भी नहीं मिल सकता क्योकि फल और छाया देना वृक्ष का कर्तव्य है तू समाज का एक भाग है तू अपने को स्वामी मत समझ इसी में तेरा कल्याण है और ये ज्ञान श्रेष्ठ है और जिसको ये ज्ञान है उसका जीवन यज्ञ है !

ॐ गीता का सार ॐ

आज गीता सार के नाम से श्रीमदभगवद् गीता की शिक्षाओं को बेहद गलत ढंग से प्रसारित किया जा रहा है। क्या यह कहा जा सकता है कि जो कुछ पांचों पांडवों, द्रोपदी आदि के साथ हुआ, वह अच्छा हुआ। युद्ध

क्षेत्र में अर्जुन के मोह ग्रसित हो युद्ध न करने के विचार को अच्छा होना कह गीता के मूलभूत सिद्धान्तों का उपहास उड़ाना ही है। कुछ लोगों का इन शब्दों-जो हुआ अच्छा हुआ, जो होगा अच्छा होगा को सही साबित करना जीव की कर्म स्वतंत्रता को न मानना है, जबकि गीता में साफ लिखा है कि केवल कर्म करने का अधिकार ही कर्मवीर को है न कि कर्मफल पाने का। अब गीता की मुख्य शिक्षाओं को लिखा जाता है -

क्लैब्यं मा स्म गमः पार्थ नैतत्त्वय्युपपद्यते।
क्षुद्रं हृदयदौर्बल्यं त्यक्त्वोत्तिष्ठ परन्तप॥1॥ (गीता 2/3)

इसलिए हे अर्जुन! नपुंसकता को मत प्राप्त हो, तुझमें यह उचित नहीं जान पड़ती। हे परंतप! हृदय की तुच्छ दुर्बलता को त्यागकर युद्ध के लिए खड़ा हो जा॥1॥

देहिनोऽस्मिन्यथा देहे कौमारं यौवनं जरा।
तथा देहान्तरप्राप्तिर्धीरस्तत्र न मुह्यति॥2॥ (गीता 2/13)

जैसे जीवात्मा की इस देह में बालकपन, जवानी और वृद्धावस्था होती है, वैसे ही अन्य शरीर की प्राप्ति होती है, उस विषय में धीर पुरुष मोहित नहीं होता॥2॥

न जायते म्रियते वा कदाचिन्नायं भूत्वा भविता वा न भूयः।
अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो न हन्यते हन्यमाने शरीरे॥3॥ (गीता 2/20)

यह आत्मा किसी काल में भी न तो जन्मता है और न मरता ही है तथा न यह उत्पन्न होकर फिर होने वाला ही है क्योंकि यह अजन्मा, नित्य, सनातन और पुरातन है, शरीर के मारे जाने पर भी यह नहीं मारा जाता॥3॥

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि।
तथा शरीराणि विहाय जीर्णान्यन्यानि संयाति नवानि देही॥4॥ (गीता 2/22)

जैसे मनुष्य पुराने वस्त्रों को त्यागकर दूसरे नए वस्त्रों को ग्रहण करता है, वैसे ही जीवात्मा पुराने शरीरों को त्यागकर दूसरे नए शरीरों को प्राप्त होता है ॥4॥

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः।

न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः॥5॥ (गीता 2/23)

इस आत्मा को शस्त्र नहीं काट सकते, इसको आग नहीं जला सकती, इसको जल नहीं गला सकता और वायु नहीं सुखा सकता॥5॥

सुखदुःखे समे कृत्वा लाभालाभौ जयाजयौ।

ततो युद्धाय युज्यस्व नैवं पापमवाप्स्यसि॥6॥ (गीता 2/38)

जय-पराजय, लाभ-हानि और सुख-दुख को समान समझकर, उसके बाद युद्ध के लिए तैयार हो जा, इस प्रकार युद्ध करने से तू पाप को नहीं प्राप्त होगा॥6॥

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।

मा कर्मफलहेतुर्भुर्मा ते संगोऽस्त्वकर्मणि॥7॥ (गीता 2/47)

तेरा कर्म करने में ही अधिकार है, उसके फलों में कभी नहीं। इसलिए तू कर्मों के फल हेतु मत हो तथा तेरी कर्म न करने में भी आसक्ति न हो॥7॥

योगस्थः कुरु कर्माणि संग त्यक्त्वा धनंजय।

सिद्धयसिद्धयोः समो भूत्वा समत्वं योग उच्यते॥8॥ (गीता 2/48)

हे धनंजय! तू आसक्ति को त्यागकर तथा सिद्धि और असिद्धि में समान बुद्धिवाला होकर योग में स्थित हुआ कर्तव्य कर्मों को कर, समत्व (जो कुछ भी कर्म किया जाए, उसके पूर्ण होने और न होने में तथा उसके फल में समभाव रहने का नाम 'समत्व' है।) ही योग कहलाता है॥8॥

यं हि न व्यथयन्त्येते पुरुषं पुरुषर्षभ।

समदुःखसुखं धीरं सोऽमृतत्वाय कल्पते॥9॥ (गीता 2/15)

क्योंकि हे पुरुषश्रेष्ठ! दुःख-सुख को समान समझने वाले जिस धीर पुरुष को ये इन्द्रिय और विषयों के संयोग व्याकुल नहीं करते, वह मोक्ष के योग्य होता है॥9॥

यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः।

स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते॥10॥ (गीता 3/21)

श्रेष्ठ पुरुष जो-जो आचरण करता है, अन्य पुरुष भी वैसा-वैसा ही आचरण करते हैं। वह जो कुछ प्रमाण कर देता है, समस्त मनुष्य-समुदाय उसी के अनुसार बरतने लग जाता है (यहाँ क्रिया में एकवचन है, परन्तु 'लोक' शब्द समुदायवाचक होने से भाषा में बहुवचन की क्रिया लिखी गई है॥10॥

योगयुक्तो विशुद्धात्मा विजितात्मा जितेन्द्रियः।

सर्वभूतात्मभूतात्मा कुर्वन्नपि न लिप्यते॥11॥ (गीता 5/7)

जिसका मन अपने वश में है, जो जितेन्द्रिय एवं विशुद्ध अन्तःकरण वाला है और सम्पूर्ण प्राणियों का आत्मरूप परमात्मा ही जिसका आत्मा है, ऐसा कर्मयोगी कर्म करता हुआ भी लिप्त नहीं होता॥11॥

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते।

तत्स्वयं योगसंसिद्धः कालेनात्मनि विन्दति॥12॥ (गीता 4/38)

इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र करने वाला निःसंदेह कुछ भी नहीं है। उस ज्ञान को कितने ही काल से कर्मयोग द्वारा शुद्धान्तःकरण हुआ मनुष्य अपने-आप ही आत्मा में पा लेता है॥12॥

श्रद्धावाँल्लभते ज्ञानं तत्परः संयतेन्द्रियः।

ज्ञानं लब्धवा परां शान्तिमचिरेणाधिगच्छति॥13॥ (गीता 4/39)

जितेन्द्रिय, साधनपरायण और श्रद्धावान मनुष्य ज्ञान को प्राप्त होता है तथा ज्ञान को प्राप्त होकर वह बिना विलम्ब के- तत्काल ही भगवत्प्राप्तिरूप परम शान्ति को प्राप्त हो जाता है॥13॥

यस्य नाहङ्कृतो भावो बुद्धिर्यस्य न लिप्यते।

हत्वापि स इमाँल्लोकान्न हन्ति न निबध्यते॥14॥ (गीता 18/17)

जिस पुरुष के अन्तःकरण में 'मैं कर्ता हूँ' ऐसा भाव नहीं है तथा जिसकी बुद्धि सांसारिक पदार्थों में और कर्मों में लिपायमान नहीं होती, वह पुरुष इन सब लोकों को मारकर भी वास्तव में न तो मरता है और न

पाप से बँधता है। (जैसे अग्नि, वायु और जल द्वारा प्रारब्धवश किसी प्राणी की हिंसा होती देखने में आए तो भी वह वास्तव में हिंसा नहीं है, वैसे ही जिस पुरुष का देह में अभिमान नहीं है और स्वार्थरहित केवल संसार के हित के लिए ही जिसकी सम्पूर्ण क्रियाएँ होती हैं, उस पुरुष के शरीर और इन्द्रियों द्वारा यदि किसी प्राणी की हिंसा होती हुई लोकदृष्टि में देखी जाए, तो भी वह वास्तव में हिंसा नहीं है क्योंकि आसक्ति, स्वार्थ और अहंकार के न होने से किसी प्राणी की हिंसा हो ही नहीं सकती तथा बिना कर्तृत्वाभिमान के किया हुआ कर्म वास्तव में अकर्म ही है, इसलिए वह पुरुष 'पाप से नहीं बँधता'।)॥14॥

श्रेयान्स्वधर्मो विगुणः परधर्मात्स्वनुष्ठितात्।
स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः॥15॥ (गीता 3/35)

अच्छी प्रकार आचरण में लाए हुए दूसरे के धर्म से गुण रहित भी अपना धर्म अति उत्तम है। अपने धर्म में तो मरना भी कल्याणकारक है और दूसरे का धर्म भय को देने वाला है॥15॥

उद्धरेदात्मनाऽत्मानं नात्मानमवसादयेत्।
आत्मैव ह्यात्मनो बन्धुरात्मैव रिपुरात्मनः॥16॥ (गीता 6/5)

अपने द्वारा अपना संसार-समुद्र से उद्धार करे और अपने को अधोगति में न डाले क्योंकि यह मनुष्य आप ही तो अपना मित्र है और आप ही अपना शत्रु है॥16॥

बन्धुरात्मात्मनस्तस्य येनात्मैवात्मना जितः।
अनात्मनस्तु शत्रुत्वे वर्तेतात्मैव शत्रुवत्॥17॥ (गीता 6/6)

जिस जीवात्मा द्वारा मन और इन्द्रियों सहित शरीर जीता हुआ है, उस जीवात्मा का तो वह आप ही मित्र है और जिसके द्वारा मन तथा इन्द्रियों सहित शरीर नहीं जीता गया है, उसके लिए वह आप ही शत्रु के सदृश शत्रुता में बर्तता है॥17॥

युक्ताहारविहारस्य युक्तचेष्टस्य कर्मसु।
युक्तस्वप्नावबोधस्य योगो भवति दुःखहा॥18॥ (गीता 6/17)

दुःखों का नाश करने वाला योग तो यथायोग्य आहार-विहार करने वाले का, कर्मों में यथायोग्य चेष्टा करने वाले का और यथायोग्य सोने तथा जागने वाले का ही सिद्ध होता है॥18॥

यत्करोषि यदश्नासि यज्जुहोषि ददासि यत्।
यत्तपस्यसि कौन्तेय तत्कुरुष्व मदर्पणम्॥19॥ (गीता 9/27)

हे अर्जुन! तू जो कर्म करता है, जो खाता है, जो हवन करता है, जो दान देता है और जो तप करता है, वह सब मेरे अर्पण कर॥19॥

यस्मान्नोद्विजते लोको लोकान्नोद्विजते च यः।
हर्षामर्षभयोद्वेगैर्मुक्तो यः स च मे प्रियः॥20॥ (गीता 12/15)

जिससे कोई भी जीव उद्वेग को प्राप्त नहीं होता और जो स्वयं भी किसी जीव से उद्वेग को प्राप्त नहीं होता तथा जो हर्ष, अमर्ष (दूसरे की उन्नति को देखकर संताप होने का नाम 'अमर्ष' है), भय और उद्वेगादि से रहित है- वह भक्त मुझको प्रिय है॥20॥

त्रिविधं नरकस्येदं द्वारं नाशनमात्मनः।
कामः क्रोधस्तथा लोभस्तस्मादेतत्त्रयं त्यजेत्॥21॥ (गीता 16/21)

काम, क्रोध तथा लोभ- ये तीन प्रकार के नरक के द्वार (सर्व अनर्थों के मूल और नरक की प्राप्ति में हेतु होने से यहाँ काम, क्रोध और लोभ को 'नरक के द्वार' कहा है) आत्मा का नाश करने वाले अर्थात् उसको अधोगति में ले जाने वाले हैं। अतएव इन तीनों को त्याग देना चाहिए॥21॥

ममैवांशो जीवलोके जीवभूतः सनातनः।
मनः षष्ठानीन्द्रियाणि प्रकृतिस्थानि कर्षति॥22॥ (गीता 15/7)

इस देह में यह जीवात्मा मेरा ही सनातन अंश है (जैसे विभागरहित स्थित हुआ भी महाकाश घटों में पृथक-पृथक की भाँति प्रतीत होता है, वैसे ही सब भूतों में एकीरूप से स्थित हुआ भी परमात्मा पृथक-पृथक की भाँति प्रतीत होता है, इसी से देह में स्थित जीवात्मा को भगवान ने अपना 'सनातन अंश' कहा है) और वही इन प्रकृति में स्थित मन और पाँचों इन्द्रियों को आकर्षित करता है॥22॥

ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म व्याहरन्मामनुस्मरन्।

यः प्रयाति त्यजन्देहं स याति परमां गतिम्॥23॥ (गीता 8/13)

ॐ इस एक अक्षर रूप ब्रह्म को उच्चारण करता हुआ और उसके अर्थस्वरूप मुझ निर्गुण ब्रह्म का चिंतन करता हुआ शरीर को त्यागकर जाता है, वह पुरुष परम गति को प्राप्त होता है॥23॥

यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः।

तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम॥24॥ (गीता 18/78)

हे राजन! जहाँ योगेश्वर भगवान श्रीकृष्ण हैं और जहाँ गाण्डीव-धनुषधारी अर्जुन है, वहीं पर श्री, विजय, विभूति और अचल नीति है- ऐसा मेरा मत है॥

स्वस्थ रहने के स्वर्णिम सूत्र

1. सदा ब्रह्ममुहूर्त में उठना चाहिए। (गर्मियों में 4-5 बजे व सर्दियों में 5-6 बजे) इस समय प्रकृति मुक्तहस्त से स्वास्थ्य, प्राणवायु, प्रसन्नता, मेघा, बुद्धि की वर्षा करती है।

2. नींद खुलते ही बिस्तर पर बैठे- बैठे आठ बार गायत्री मन्त्र का जप करें अथवा निम्नलिखित प्रार्थना करें

ॐ तेजोऽसि तेजो मयि धेहि |

हे परमात्मा ! आप तेजरूप हैं, हमें तेज (आत्मिक शक्ति) से संपन्न बनाइए |

ॐ वीर्यमसि वीर्यं मयि धेहि |

हे परमात्मा ! आप वीर्यवान हैं, हमें पराक्रमी – साहसी बनाइए |

ॐ बलमसि बलं मयि धेहि |

हे परमात्मा ! आप बलवान हैं, हमें बलशाली बनाइए |

ॐ ओजोऽस्योजो मयि धेहि |

हे परमात्मा ! आप ओजवान हैं, हमें ओजस्वी (शारीरिक बल और आभायुक्त) बनाइए |

ॐ मन्युरसि मन्युं मयि धेहि |

हे परमात्मा ! आप मन्यु रूप (अनीति अत्याचार के प्रति क्रोध करने वाले) हैं, हमें भी अनीति का प्रतिरोध करने की क्षमता दीजिए |

ॐ सहोसि सहो मयि धेहि ||

हे परमात्मा ! आप कठिनाईयों को सहन करने वाले हैं | हमें भी कठिनाइयों में अडिग रहने की, उन पर विजय पाने की शक्ति दीजिए |

3. बिस्तर से उठते ही मूत्र त्याग के पश्चात उषा पान अर्थात बासी मुँह 2-3 गिलास जल के सेवन की आदत डाले, इससे सिरदर्द, अम्लपित्त, कब्ज, मोटापा, रक्तचाप, नैत्र रोग, अपच सहित कई रोगों से हमारा बचाव होता है।

4. स्नान सदा सामान्य शीतल जल से करना चाहिए। (जहाँ निषेध न हो) स्नान के समय सर्वप्रथम जल सिर पर डालना चाहिए, ऐसा करने से मस्तिष्क की गर्मी पैरों से निकल जाती है। जो विवाहित है वे पहले अपने दाये कंधे पर जल डाले, इससे उनका हृदय सही रहेगा |

5. दिन में 2 बार मुँह में जल भरकर, नेत्रों को शीतल जल से धोना नेत्र दृष्टि के लिए लाभकारी है।

6. नहाने से पूर्व, सोने से पूर्व एवं भोजन के पश्चात् मूत्र त्याग अवश्य करना चाहिए। यह आदत आपको कमर दर्द, पथरी तथा मूत्र सम्बन्धी बीमारियों से बचाती है।

7. सरसों, तिल या अन्य औषधीय तेल की मालिश नित्यप्रति करने से वात विकार, बुढ़ापा, थकावट नहीं होती है। त्वचा सुन्दर , दृष्टि स्वच्छ एवं शरीर पुष्ट होता है।

8. शरीर की क्षमतानुसार प्रातः भ्रमण, योग, व्यायाम करना चाहिए।

9. अपच, कब्ज, अजीर्ण, मोटापा जैसी बीमारियों से बचने के लिए भोजन के 30 मिनट पहले तथा 1 घण्टे बाद तक जल नहीं पीना चाहिए। भोजन के साथ जल नहीं पीना चाहिए। घूँट-दो घूँट ले सकते हैं।

10. दिनभर में 3-4 लीटर जल थोड़ा-थोड़ा करके पीते रहना चाहिए।

11. भोजन के प्रारम्भ में मधुर-रस, मध्य में अम्ल, लवण रस (खट्टा, नमकीन) तथा अन्त में कटु, तिक्त, कषाय (तीखा, चटपटा, कसेला) रस के पदार्थों का सेवन करना चाहिए। भोजन करने के पश्चात गुड़ खाना चाहिये ।

12. भोजन के उपरान्त वज्रासन में 5-10 मिनट बैठना तथा बांयी करवट 5-10 मिनट लेटना चाहिए।

13. भोजन के तुरन्त बाद दौड़ना, तैरना, नहाना, मैथुन करना स्वास्थ्य के बहुत हानिकारक है।

14. भोजन करके तत्काल सो जाने से पाचनशक्ति का नाश हो जाता है जिसमें अजीर्ण, कब्ज, अम्लपित्त जैसी व्याधियाँ हो जाती है। इसलिए सायं का भोजन सोने से 2 घन्टे पूर्व हल्का एवं सुपाच्य करना चाहिए।

15. शरीर एवं मन को तरोताजा एवं क्रियाशील रखने के लिए औसतन 7-8 घन्टे की नींद आवश्यक है।

16. गर्मी के अलावा अन्य ऋतुओं में दिन में सोने एवं रात्री में अधिक देर तक जागने से शरीर में भारीपन, ज्वर, जुकाम, सिर दर्द एवं अग्निमांध होता है।

17. दूध के साथ दही, नीबू, नमक, तिल उड़द, जामुन, मूली, करेला आदि का सेवन नहीं करना चाहिए। त्वचा रोग होने की सम्भावना रहती है।

18. स्वास्थ्य चाहने वाले व्यक्ति को मूत्र, मल, शुक्र, अपानवायु, वमन, छींक, डकार, जंभाई, प्यास, आँसू, नींद और परिश्रमजन्य श्वास के वेगों को उत्पन्न होने के साथ ही शरीर से बाहर निकाल देना चाहिए।

19. रात्री में सोने से पूर्व दाँतों की सफाई, नैत्रों की सफाई एवं पैरों को जल से धोकर सोना चाहिए।

20. रात्रि में शयन से पूर्व अपने किये गये कार्यों की समीक्षा कर अगले दिन की कार्य योजना बनानी चाहिए। तत्पश्चात् गहरी एवं लम्बी सहज श्वास लेकर शरीर को एवं मन को शिथिल करते हुए सात बार गायत्री मन्त्र जप करना चाहिए। शान्त मन से अपने दैनिक क्रियाकलाप, तनाव, चिन्ता, विचार सब परमात्म चेतना को सौंपकर निश्चिंत भाव से निद्रा की गोद में जाना चाहिए।

सनातन संस्कृति संघ(ट्रस्ट)

भारत, सनातन धर्म- संस्कृति व स्वदेशी के प्रचार- प्रसार के लिए कार्यरत संगठन

सनातन संस्कृति संघ ट्रस्ट का उद्देश्य भारत में गौशालाओं एवं गुरुकुलो की स्थापना करना है।

https://www.bharatswabhimandal.blogspot.com

सनातन संस्कृति संघ परिचय

सनातन संस्कृति संघ एक गैर सरकारी, सामाजिक, आध्यात्मिक ट्रस्ट हैं। इसका मुख्य उद्देश्य वैज्ञानिक दृष्टिकोण और आध्यात्मिक मूल्यों के आधार पर भारत व सनातन संस्कृति की रक्षा व सम्वर्धन करना।

भारतीयों का नैतिक व चारित्रिक उत्थान करते हुए देश की समस्त भ्रष्ट व्यवस्थाओं, गलत नीतियों, साम्प्रदायिक असमानता व भ्रष्टाचार को मिटाकर बेरोजगारी, गरीबी, भूख, अभाव व अशिक्षा से मुक्त स्वस्थ, समृद्ध, शक्तिशाली एवं संस्कारवान भारत का पुनर्निर्माण करना।

संसार के जन कल्याणार्थ मानवीय, नैतिक, सांस्कृतिक, वैज्ञानिक तथा आध्यात्मिक मूल्यों को निजी, व्यवसायिक तथा सार्वजनिक जीवन में बढ़ावा देना। गौशालाओं एवं गुरूकुलों की स्थापना व संचालन करना।

यह संस्था जिन क्षेत्रों में शिक्षायें एवं प्रशिक्षण दे रही है, वे हैं- धर्मतंत्र जागरण, राष्ट्र जागरण, स्वदेशी स्वाभिमान, मूल्यनिष्ठ शिक्षा, चरित्र निर्माण, योग प्रशिक्षण, आपदा प्रबंधन, विश्व बंधुत्व, सम्पूर्ण स्वास्थ्य, गौवंश एवं ग्राम आधारित अर्थतंत्र की व्यवस्था, पर्यावरण प्रदूषण के प्रति जागृति, व्यक्तित्व विकास, महिला सशक्तिकरण, सामाजिक पुनर्निर्माण, नशीले पदार्थो से मुक्ति, अंधविश्वास एवं कुप्रथा निवारण, सकारात्मक चिंतन, वैज्ञानिक- आध्यात्मिक अनुभूति तथा जीने की कला।

सनातन संस्कृति संघ से हम क्यों जुड़े...?

अपने लिए

अपने देश के लिए

अपने गौरवशाली इतिहास के लिए

भविष्य को स्वर्णिम बनाने के लिए

नया इतिहास लिखने के लिए

जिसपे आने वाली पीढियां गर्व कर सके

भारत को पुनः विश्व गुरु बनाने के लिए

अपनी गर्वीली शान के लिए

सर उठाकर जीने के लिए

अपने बच्चों को अच्छे संस्कार देने के लिए

सनातन संस्कृति के लिए

गौमाता के सम्मान के लिए

ऋषियों के ज्ञान के लिए

हुतात्माओं के बलिदान के लिए

मातृभूमि की शान के लिए

हमने एक कदम आपकी और बढ़ाया है

आप भी चलिए हमारे साथ जिससे वर्तमान को सुखद

बनाते हुए सुनहरे भविष्य की नींव मजबूत कर सके

संगठन में शक्ति है। सनातन संस्कृति संघ से जुड़ कर देश एवं सनातन संस्कृति के कार्यो को गति प्रदान करे | भारत व सनातन संस्कृति के लिए जियें, खुद जुड़े दूसरे लोगो को भी जोड़ें, सनातन संस्कृति संघ आपका हार्दिक स्वागत एवं अभिनन्दन करता है |

सनातन संस्कृति संघ (ट्रस्ट) को अंशदान देने अथवा सदस्य बनने के इच्छुक दानदाता पंजाब नेशनल बैंक की स्थानीय सी0बी0एस0 शाखा में पहुंचकर खाता संख्या

A/C no :- 4579002100002930

IFSC - PUNB 0457900

Branch Code 457900

में अपना अंशदान जमा कर सकते है |

<> खाते में धन जमा करवाते समय खाते का नाम एवं शाखा का स्थान (**सनातन संस्कृति संघ, पंजाब नैशनल बैंक, करावल नगर, दिल्ली**) अवश्य जाँच कर ले |

अधिक जानकारी हेतु हमसे **08126396457** पर सम्पर्क कर सकते है |

रजि. कार्यालय:- म. नं. 60, गली नं. 1- ए, शहीद भगत सिंह कॉलोनी, करावल नगर, दिल्ली- 110094

http://www.sanatansanskritisangh.blogspot.com

E-mail:- sanatansanskritisangh@gmail.com

Mobile:- 08126396457, 8535004500, 9917648983

|| जो बोले सो अभय सनातन धर्म की जय ||

भारत स्वाभिमान दल

स्वस्थ, समृद्ध, शक्तिशाली एवं संस्कारवान

भारत का पुनर्निर्माण

भारत स्वाभिमान दल क्या है

भारतवर्ष एक ऐसा देश है जो कभी सोने का शेर था।

हर व्यक्ति आनन्दित, हर परिवार संपन्न, सबके पास अपने काम और सब कामो में व्यस्त,

सर्वोच्च स्तर का चरित्र, बौद्धिक स्तर पर भारत का कोई मुकाबला नहीं था, उच्च स्तरीय गुरुकुल शिक्षा पद्धति, आयुर्वेदिक और शल्य चिकित्सा, तकनीकि विज्ञान और खोज में सबसे आगे, सबसे पहले अंतरिक्ष विज्ञान का ज्ञाता, संस्कार और परम्परा में पूरे विश्व का गुरु और सिरमौर कहलाने वाला भारतवर्ष आज वासना, नशा, भ्रष्टाचार और व्याभिचार और आलस्य में डूबा हुआ है।

हर तरफ चोरी, दुश्मनी, हत्या, बलात्कार, धरना प्रदर्शन, मुफ्तखोरी, दलाली, घूसखोरी और अपराध अपने चरम पर है।

कोई संतुष्ट नहीं, सबके अंदर असुरक्षा की भावना घर कर चुकी है, कुछ भी निश्चित नहीं लगता।

जो समाज का नेतृत्व करते है, जिनके इशारे मात्र पर कुछ बदल सकता है, वो स्वाभिमान जागरण, विकास और राष्ट्रीय एकता के स्थान पर, विनाश और साम्प्रदायिक तुष्टिकरण कर विखण्डन की बात करते है, अपने राजनैतिक हित के लिए हमेशा धर्म के आधार पर भेदभाव करते है, जाती और सम्प्रदाय की बातो में उलझाकर, उकसाकर लड़वाया करते है, और वोट की राजनीति करते है, उनके लिए हम वोट बैंक के अलावा और कुछ नहीं।

जो विकास और जानकारी के स्रोत है, जो जन जन तक जानकारी पहुचाने के माध्यम है, वो अश्लीलता परोसकर विदेशी कम्पनियो का व्यापार बढ़ाकर, कमीशन के रूप में पैसा बटोर रहे है, भारत के नागरिकों को संविधानिक रूप से साम्प्रदायिक आधार पर बांटने वाले कानून लागू कर दिये गये है।

जिनके हाथ में देश का भविष्य है, जो पीढ़ियों का निर्माण करते है, जो अपने द्वारा बच्चों को चरित्र, व्यवहार, सामाजिक और भविष्य निर्माण की कला सिखाते है, उनको कानूनों में बांधकर अपंग बना दिया, और थोप दी विदेशी शिक्षा व्यवस्था।

आज सब व्यवस्थाओं में घुन लग गया है, न कुछ स्पष्ट है और न ही सापेक्ष, अपनी मूल प्रकृति को भूलकर दूसरो की व्यवस्था और गंदे संस्कारो से प्रभावित होकर हम विनाश की अंधी दौड़ में शामिल हो गए है जिसका अंजाम शायद एक दिन सीरिया जैसा हो सकता है।

क्या आप चाहते हो कि आप के बच्चे जिन्हें आप अपनी जान से ज्यादा प्यार करते हो, ऐसे माहौल में जिए, ऐसी व्यवस्थाये विनाशकारी है इनको बदलना होगा।

ऐसे में देश के कुछ युवाओ और बुद्धिजीवी लोगो ने मिलकर **श्री विश्वजीत सिंह अनंत जी** के नेतृत्व में अपने देश के स्वर्णिम इतिहास का अध्ययन कर क्रांतिकारी, योगियो और संतो के जीवन से प्रेरणा लेकर "**भारत स्वाभिमान दल**" संगठन की स्थापना की है, और उन सिद्धांतो पर कार्य करने का निर्णय लिया जिन पर चलकर यह देश खुशहाल, संपन्न, शक्तिशाली, संस्कारवान और विश्वगुरु था। आइये मिलकर संस्कारित, खुशहाल, समृद्ध, दिव्य और तेजस्वी भारत का निर्माण करे। **सम्पूर्ण व्यवस्था परिवर्तन के लिए संगठित होना अति आवश्यक है।**

भारत स्वाभिमान दल देश के हर उम्र के विचारशील, प्रगतिशील और राष्ट्रभक्तों का इस महान कार्य में सहयोग के लिए आवाहन करता है।

भारत स्वाभिमान दल के सदस्य बनकर सम्पूर्ण व्यवस्था परिवर्तन के इस आन्दोलन में अपनी सक्रीय भूमिका का निर्वहन करें |

भारत स्वाभिमान दल से क्यों जुड़े....

प्रिय साथियों, भारत स्वाभिमान दल से जुड़ने का आपका निर्णय स्वागत योग्य है, और यह निर्णय साथ ही साथ आपकी राष्ट्र भक्ति को सुनिश्चित करता है, आप सही दिशा में होने वाले बदलाव के समर्थक है। आपके मन में भारत की दशा और दिशा को लेकर आने वाली पीढ़ी के भविष्य की चिंता है, आप एक स्वस्थ, समृद्ध, शक्तिशाली, स्वावलंबी और संस्कारवान भारत की कल्पना करते है। पर बदलाव की प्रक्रिया स्वयं से शुरू होकर समाज और देश तक पहुचती है। तो आइये अपने जीवन में बिना किसी और के सहयोग के, छोटे छोटे ऐसे बदलाव करे जिनको आसानी से किया जा सकता है। और जिन पर देश की आर्थिक और सामाजिक व्यवस्था निर्भर करती है।

जिस भारत की कल्पना विश्वविजेता सम्राट विक्रमादित्य, अखण्ड भारत के सृजनकर्ता आचार्य चाणक्य, मेवाड़ केशरी महाराणा प्रताप, वीर हकीकत राय, हांडा रानी, हिन्दुत्व रक्षक छत्रपति शिवाजी, धर्मवीर सुहेल देव, धर्मरक्षक वीर गोकुल सिंह, गुरू गोविन्द सिंह, महर्षि दयानन्द सरस्वती, स्वामी विवेकानन्द,

आदि शंकराचार्य, गुरू रविदास, संत प्राणनाथ, क्रांतिधर्मी बिरसा मुण्डा, देवी अहिल्याबाई, वीर सावरकर, नेताजी सुभाष चन्द्र बोस, राम प्रसाद बिस्मिल, भगत सिंह, रानी लक्ष्मीबाई, रानी चेनन्मा, महर्षि अरविन्द घोष, चंद्रशेखर आजाद और अन्य सभी क्रान्तिकारियो ने की थी, हम सब वैसा भारत चाहते है।

विदेशी मुसलमान व अंग्रेज भारत से वापस जाए ये सभी का लक्ष्य था, लेकिन यह अंतिम लक्ष्य नहीं था, यहां से बदलाव की सुरुआत होनी थी, केवल यही बदलाव है ऐसा बिलकुल नहीं था। यह देश अपनी मूल प्रकृति में आ जाए, हर क्रांतिकारी स्वदेशी के आधार पर इस देश को फिर से खड़ा करना चाहता था। हमने बदलाव का पथ चुना है स्वयं स्वदेशी के पथ पर चलकर समाज और देश को बदलने का निर्णय लिया है।

जिसकी सुरुआत स्वयं से करे, फिर समाज और देश से सहयोग की आशा करें, ऐसे बदलाव जिनको हम स्वयं आसानी से कर सकते है

{1} जिन देशभक्तों के महान आदर्श और अद्भुद ज्ञान से प्रेरित होकर, हिन्दुस्थान के अंदर हजारो हजार संगठन एक दिशा में एक ही लक्ष्य निर्धारित कर आगे बढ़ रहे है, ऐसे महान क्रांतिकारीयों बलिदानियों के विषय में हर संभव जानकारी लेने का प्रयास करे।

{2} देशभक्त क्रान्तिकारियों व संतों की बहुत सी ऑडीओ और वीडियो है, जिनमें भारत की सारी समस्याओ का समाधान है, उनका संग्रहण कर, प्रतिदिन कम से कम 1 जरूर सुने।

{3} सुबह, दोपहर व सायं गायत्री मन्त्र का न्यूनतम आठ- आठ बार जप अवश्य करें, रविवार को सामूहिक धर्म साधना में सम्मलित हो, जहाँ पर सामूहिक धर्म साधना का कार्यक्रम न होता हो वहाँ सामूहिक धर्म साधना कार्यक्रम की शुरूआत करें, साधना विधि 08126396457 पर व्हाट्सएप्प या हाइक सन्देश कर प्राप्त कर सकते है |

{4} अपने घर में सुबह से शाम तक प्रयोग होने वाले सभी सामानों की सूची बनाकर स्वयं से जाँच करे, सामान स्वदेशी है या विदेशी।

{5} पहले दिन पेस्ट बदले दूसरे दिन साबुन इस प्रकार 1 के बाद 1 सामान धीरे-2 बदलते जाएँ।

{6} स्वदेशी वस्त्रों का जीवन में प्रयोग करे जो आपको एक सकारात्मक ऊर्जा देंगे।

{7} अपने जूते चप्पल स्वदेशी ही कंपनी के पहने।

{8} आप का sim नेटवर्क तुरंत स्वदेशी में बदले यदि सिग्नल की समस्या न हो तो।

{9} अपना मोबाइल स्वदेशी हो, हालांकि 100% भारतीय अभी नही है, फिर भी जो उपलब्ध है उन्हें ले।

{10} बाज़ार से कोई भी सामान खरीदते समय स्वदेशी विदेशी का ध्यान रखे।

{11} बोलचाल और लिखने में अपनी क्षेत्रीय भाषा, संस्कृत या हिंदी का प्रयोग करे।

{12} यदि आपको स्वदेशी और विदेशी का निर्धारण करने में समस्या आ रही हो तो भारत स्वाभिमान दल की वेबसाइट देखें, वहाँ आपको स्वदेशी विदेशी वस्तुओं की सूची मिल जायेगी।

{13} जातिवाद को बिल्कुल त्याग दें और सामाजिक समरसत्ता का माहौल निर्मित करें |

{14} सभी पार्टीयों, संगठनों के जनप्रतिनिधियों से सभी भारतीयों के लिए एक समान कानून समान नागरिक संहिता तत्काल लागू कराने की मांग करें, मांग न मानने वाले जनप्रतिनिधियों का बहिष्कार करें |

{15} हमारा आचरण और व्यवहार ही हमें व्यक्तिगत पहचान देता है, इसमें कभी भी चूक न करे।
ये सब कार्य आप निरंतर करेंगे तो स्वदेशी का स्वाभिमान आपके भीतर बहुत प्रबलता से संचारित होने लगेगा क्योंकि बदलाव एक अनवरत प्रक्रिया है जो कभी रूकती नहीं, हमें अपनी व्यवहार में बदलाव लाना है,और मनुष्य का व्यवहार बदलना पानी की बूँद-2 टपकाकर पत्थर में छेद करने जैसा है, हमने पत्थर को दबाव देकर तोड़ना नहीं है छेद करना है। यह सब बदलाव आपको आनंद और राष्ट्रवाद की अनुभूति देंगे। एक सकारात्मक और रोमांचकारी बदलाव से आप अपने जीवन में पहले से ज्यादा दिव्यता अनुभव करेंगे।

आशा है आप अपने जीवन में बदलाव की ये सुरुआत कर भारतवर्ष को आर्थिक और सामाजिक और सांस्कृतिक रूप से सुदृढ़ बनाने के इस आंदोलन में एक क्रांतिकारी की भूमिका निभाएंगे।

वर्तमान व्यवस्था भ्रष्ट है परन्तु इसमें देशभक्त, ईमानदार व चरित्रवान लोग भी है, हम उनका हृदय से सम्मान करते है और आवाहन करते है कि वे व्यवस्था परिवर्तन के इस आन्दोलन में तन-मन-धन से सहयोग करने के लिए पहल करें, संगठन से जुड़ें । भारत स्वाभिमान दल आपका हार्दिक स्वागत एवं अभिनन्दन करता है |

सम्पूर्ण व्यवस्था परिवर्तन के लिए भारत स्वाभिमान दल की ग्यारह सूत्री कार्य योजना:-

1. वर्तमान में चल रही समस्त गलत नीतियों व भ्रष्ट व्यवस्थाओं का राष्ट्र हित में पूर्ण परिवर्तन कराना। भ्रष्टाचार, बलात्कार, दहेज हत्या, गौहत्या, आतंकवाद व मिलावट करने वालों के विरूद्ध मृत्युदण्ड का कानून बनवाकर 127 करोड भारतीयों को सुरक्षा प्रदान करवाना। इसके लिए देश में फास्ट ट्रेक कोर्ट बनवाकर एक से तीन माह में तुरन्त न्याय की व्यवस्था करना, जिससे कि अपराधियों को तुरन्त दण्ड मिल सके और इन भ्रष्टाचार व बलात्कार आदि करने वालों के मृत्यदण्ड के कानून को राष्ट्रपति के क्षमादान के अधिकार से मुक्त करवाना तथा शिक्षा, स्वास्थ्य, कानून, अर्थ व कृषि व्यवस्था का पूर्ण भारतीयकरण व स्वदेशीकरण करना।

2. देश के संविधान से अपमानजनक शब्द इंडिया को हटाकर भारत की पुर्नस्थापना करना। विवादस्पद शब्द 'राष्ट्रपिता' को प्रतिबंधित कराकर भारत माँ के सम्मान की रक्षा करना। भारतीय नागरिकों में साम्प्रदायिक आधार पर भेदभाव उत्पन्न करने वाली नीतियों, कानूनों को भंग करके देश के सभी नागरिकों के लिए समान नागरिक संहिता की व्यवस्था कर समानता का अधिकार प्रदान करना। वक्फ संपत्ति व शत्रु संपत्ति का राष्ट्रीयकरण करना।

3. जातिवाद को असंवैधानिक घोषित करना तथा आरक्षण का आधार आर्थिक स्थिति को बनाना।

4. भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाना, काले धन को वापस मंगाना, भ्रष्टाचारियों की संपत्ति को राष्ट्रीय संपत्ति घोषित करना व भ्रष्टाचारियों को कठोर दंड का प्रावधान करना।

5. गौवंश की हत्या पर पूर्ण प्रतिबंध लगाना, गौवंश के हत्यारों को मृत्युदंड का प्रावधान करना तथा गौवंश पर आधारित अर्थतंत्र की व्यवस्था करना। गौवंश आधारित कृषि, ऊर्जा, उद्योग आदि का तंत्र विकसित करना।

6. विद्यालयों में चरित्र निर्माण, व्यवसायिक शिक्षा व सैन्य शिक्षा अनिवार्य करना। तथ्यों के आलोक में भारतीय इतिहास का पुर्नलेखन कराकर ताजमहल, लालकिला आदि प्राचीन भवनों के वास्तविक निर्माताओं को श्रेय देकर भारत का सुप्त स्वाभिमान जगाना। काल गणना के लिए युगाब्ध को अपनाकर

राष्ट्रीय पंचांग के रूप में लागू करना। केन्द्रिय परीक्षाओं में अंग्रेजी प्रश्नपत्र की अनिवार्यता समाप्त करना तथा संस्कृत, हिन्दी व क्षेत्रिय भाषाओं को वैकल्पिक आधार प्रदान करना।

7. संस्कृत भाषा को प्रोत्साहित करना, उसे द्वितीय राजभाषा का दर्जा देना, संस्कृत माध्यम से संस्कृत शिक्षा देना, प्रत्येक राज्य में एक - एक केन्द्रिय संस्कृत विश्वविद्यालय की स्थापना करना, संस्कृत में व्यवसायिक, रोजगार उन्मुख पाठ्यक्रमों का निर्माण करना व संस्कृत में रोजगार के अधिक अवसरों को उपलब्ध कराना, दूरदर्शन संस्कृत की स्थापना करना।

8. जम्मू कश्मीर से अनुच्छेद 370 हटाना तथा कश्मीर के मूल निवासियों का सुरक्षित पुर्नवास कराना।

9. स्वदेशी उत्पादनों को प्रोत्साहित करना। आयुर्वेद को राष्ट्रीय चिकित्सा पद्धति घोषित करना।

10. मांस निर्यात बंद करना, उन्नत कृषि एवं पशुपालन को प्रोत्साहित करना तथा राष्ट्रीय किसान आयोग का पुनर्गठन करना। बड़े बांधों की योजनाओं को निरस्त कर पर्यावरण के अनुकूल छोटे - छोटे बांधों की योजना पर कार्य करना। सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा आदि वैकल्पिक ऊर्जा के संयंत्रों का तंत्र विकसित करना।

11. बेरोजगारी, गरीबी, भूख, अभाव व अशिक्षा से मुक्त स्वस्थ, समृद्ध, संस्कारवान व शक्तिशाली भारत का पुनर्निर्माण करना और भारत को विश्व की महाशक्ति तथा विश्वगुरू के रूप में पुन: प्रतिष्ठित करना।

सम्पूर्ण व्यवस्था परिवर्तन के लिए संगठन की ग्यारह सूत्री कार्य योजना को पसंद करने वाले देशभक्त साथियों ! राष्ट्र- धर्म, संस्कृति की रक्षा के लिए तथा भारत के पुर्नोत्थान के लिए अधिक से अधिक संख्या में तन- मन- धन के साथ संगठन से जुड़ें। भारत स्वाभिमान दल आपका हार्दिक स्वागत एवं अभिनन्दन करता हैं।

नोट :- दान व सहयोग कैसे करे

बैंक द्वारा भारत स्वाभिमान दल को अंशदान देने अथवा सदस्य बनने के इच्छुक दानदाता

बैंक ऑफ बड़ौदा की स्थानीय शाखा में पहुँचकर

भारत स्वाभिमान दल, खाता संख्या A/C no:- 08840100020849

IFSC - BARB0FATEAS

Branch Code 0884

(भारत स्वाभिमान दल, बैंक ऑफ बड़ौदा, फतेहगंज पूर्वी, बरेली, उत्तर प्रदेश) के नाम अपना धन जमा कराकर उसकी जमा पर्ची व भरा गया सदस्यता फार्म की स्कैन-कापी हमें **bharatswabhimandalofficial@gmail.com** पर मेल करें अथवा **08535004500** पर व्हाट्सएप्प कर दें | पदेन सदस्य अपना फोटों भी दें ।

<> खाते में धन जमा करवाते समय खाता धारक का नाम एवं शाखा का स्थान अवश्य जाँच कर ले ।

<>सदस्यता सम्बन्धी किसी भी तरह की समस्या के समाधान हेतु श्री धर्म सिंह जी, राष्ट्रीय सचिव, भारत स्वाभिमान दल से **08535004500** पर सम्पर्क करें।

<>सभी प्रकार के दान व सदस्यता पूर्णतया अप्रत्यवर्णीय **(Not Refundable)** है।

सम्पर्क करें:

|| जो बोले सो अभय सनातन धर्म की जय ||

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते। पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते॥

ॐ शांतिः शांतिः शांतिः॥

भारत स्वाभिमान दल द्वारा राष्ट्र- धर्म जागरण हेतु वितरित की जाने वाली पीडीएफ पुस्तके *08126396457* पर व्हाट्सएप्प सन्देश भेजकर प्राप्त करें